CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ओ३म्

सूचीपत्र

पृष्ठ

जन्मकुण्डली ओ३म् प्रकाश २ — १८

श्रीराम रोथेड पल्लीवाल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सूची
(1) [illegible] 53
(2) [illegible] 54
(3) लिंगवृद्धि 49
(4) पुष्पावपाद्य 45
(5) दद्रुग्रहा 42, 193
(6) पललीकादद्रु 30
(7) रजःस्रावार्थ 32
(8) [illegible] 28
(9) [illegible] 23
(10) [illegible] 17
(11) [illegible] 13
(12) हैजा, लशुनवटी 8
(13) दन्तरोग 8
(14) [illegible] 7
(15) मृतसंजीवनी [illegible] 144

Practical Note-book of Agriculture

(1) आरोग्यवर्धिनी 176
(2) मूत्रल 126
(3) [illegible] 117 (126)
(16) [illegible] 192
(17) [illegible] 194
(18) पेट [illegible] 197
(19) गुह [illegible] 209
(20) आम्रपाक 210
(21) रंग, [illegible] — जलमयी [illegible]

सूचीपत्र कार्य
(1) [illegible] 170
(2) पञ्चमादिक्वाथ 167, 161
(3) गोविन्द [illegible] 164
(4) Tincture [illegible] 162
(5) N.N. [illegible] 159
(6) [illegible] 158
(7) [illegible] 150
(8) [illegible] 149
(9) [illegible] 145
(10) पाक, आसव, घृतादि 138
(11) [illegible] 133
(12) [illegible] 134, 114, 112
(13) [illegible] 120-132
(14) बालसूखारोग 118
(15) [illegible] 115, 112
(16) [illegible] 108
(17) [illegible] 109
(18) [illegible] 108, 222, 202

For 4th year

2-8-1918

(19) [illegible] 102
(20) [illegible] 94
(21) [illegible] 72
(22) [illegible] 66
(23) [illegible] 59

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ज्ञानमंडल काशी

किताबिस्तान इलाहाबाद

नागरीप्रचारिणी सभा काशी

साहित्य संवर्द्धिनी समिति कलकत्ता

प्रभा कानपुर

माधुरी

आज काशी

भगवानदत्त शर्मा नौहरा नारंग (स्वामी विवेकानन्द जी)

प्रसव के आतङ्क के लक्षण — "मधुगंधिका — [illegible] पृष्ठ

शहद — तहसील निघासन. जि. खीरी

" — बहराईच.

बम्बई से — बिडंग, जायफल, जावित्री, रास्ना,

१ घड़ी में ३ छटांक कम दो सेर को कम

८ फरवरी १९२८ को स्वामी श्रद्धानन्द फंड का रुपये २।।=) फंड [illegible] नैशनल बैंक में जमा कराया विद्यावती के हिसाब से निकलवाकर [illegible] के २००) [illegible]

[illegible]

कलाल माजरी [illegible] राम किशनदास [illegible] [illegible]

[illegible]

लाला श्रीकृष्ण की बरम कालनडाक [illegible] बलीराम

[illegible] लीला हाटे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ओ३म्

Practical Notebook
Gurukula

20 April 1918।

— केतकीखून —

१½ बजे से काम शुरू किया। ५२ पत्ते काटने में १५ मिनट लगे। तोलने में ५२ पत्तों का भार १० सेर निकला। अर्थात् फी सेर में ५ पत्ते आये। १० बजे काम शुरू किया। धागे निकालने का। १०½ बजे तक fibers निकाले ५ पत्तों के। २६ पत्ते ४ आदमियों ने ¾ घंटे में कूटे॥

Budding, splitting, ploughing its parts.

१६ वैशाख या २८ अप्रैल — एक घंटा में केतकी के धागे निकाले॥ (ह० प्रो. मगनलाल) 2nd year गुरुकुल कांगड़ी

Budding, splitting, plough its parts

१६ वैशाख या २८ April

एक घंटा में केतकी के धागे निकाले

मगनलाल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

४ आदमी ३५ कदम, १ ढ़ीले ... $\frac{3}{8}$ ...

किया । $2\frac{1}{2}$ फीट = १ कदम ... $\{ \frac{35 \times 5}{2} = \frac{175}{2}$ फीट

कुल ... $\frac{175}{2} \times \frac{3}{2} = \frac{525}{2}$

= ... $\frac{525}{2}$ ... $\frac{3}{8}$ ...

जो ८ घण्टे ... $\frac{525}{2} \times \frac{...}{...} = 2800$

2800 ...

...

$= \frac{...}{35 \times 2} = \frac{...}{35 \times 2}$

$= 1\frac{...}{35}$ ... $\frac{...}{35} = ...\frac{...}{35}$ आदमी

३ तौलिये —
२ थान १५ $\frac{1}{2}$ गज, १५ $\frac{9}{2}$ गज } ...
... १२ ...

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ओ३म्

।।२२ मई १९४८ ई.।।

Appliances for taking out water from well

उपकरण	मूल्य	पानी निकालना Capacity	गहराई तक निकाला
चरसा	७)	२२ गैलन	५० फीट
सूंडी चरसा	३२)	४० गैलन	२८ फीट
लोहे का चरसा	२०)	५२ गैलन	३० फीट

चरसे द्वारा पानी निकालने का वार्षिक खर्च

चमडे का चरसा साल में दो खर्च होने से (२५)+(२५) = ३०
दो रस्सी के लिये भी — ३०) रु.
सूंड वाले के लिये ४ रस्सी } २) रु.
तेल लगाने के लिये — ३) रु.
चरखे की लकड़ी या लोहे का फ्रेम — ३) रु.
बैलन के लिये string — १) रु.
मरम्मत के लिये — २) रु.
कुल खर्च — १२) रुपये

१ दिन के आवश्यक Daily खर्च

१ आदमी + २ बैल = १)
wheel और चरखी = -)
क्यारी में पानी फेरने वाला — ।-)
कुल खर्च — १।=) रुपये

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पानी के साधन

नाम	मूल्य	गहराई तक	१ घंटे में कितना Capacity	
ढीकवा या लेखरा या ढोणी गुजरात	३) से १०) तक	४ से ५ तक	१२००-१५०० gallon	
Soop या सूप	३) से २) तक	२ से ३ तक	६००-१००० gallon	
ढीकली	५) से १०) तक	१० से १५ तक	६००-१५०० gallon	कमगहराई से ज्यादा पानी निकलता है जादा गहरे से कम
रहट	२५) से १००)	१० - २० तक	१५००-२००० गैलन	
कानपुर Handchai pump	४५) से ६०)	५ - १५ तक	२५००-३००० गैलन	
कानपुर chain pump बैल से	२) से २५)	१५ - २० तक	५००० से ८००० गैलन	
चरसे, मोट, कोस	१५) से २०)	२० - ५० तक	१८००-२००० गैलन	बहुत गहराई से
4 H.P. oil Engine 4 इंच Diameter pump	१५०००)	८० तक	१२००० गैलन	

1. बैलवाले चरसे की capacity ordinary ३० गैलन पानी निकलता है १ बार में १२ मिनिट में / १ बार ऊपर आता है। १ घंटे में २० बार निकलता है ६०० से १००० गैलन तक १ घंटे में पानी निकलता है। तो इसे १ चरसे का प्रवाह कहते हैं / च. प्रवाह = ६०० से ५००० तक॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल कांगड़ी में परीक्षा पैदावार

१ वर्गीकृत में २०
५ कक्षाओं में = २०×५=१५० = २०० काले पैदा हुए चरीके

परीक्षाफल

नं.	बैं.सा.	मिस्त्री	अंग्रेजी	वनस्पति	प्रयोग	दर्शन
१-	८६/२००	८८/१५०	९८/१५०	१०८/१५०	३६६/६५०	×
२-	१३६/२००	७५/१५०	१०७/१५०	११५/१५०	४२२/६५०	४०/१००
३.	९२/१५०	६०/१५०	८५/१५०	१०७/१५०	३५५/७००	४२/१००
४-	१२६/१५०	८२/१५०	६१/१५०	१००/१५०	४४७/७००	४०/१००
५	१०८/१५०	×	७५/१५०	×	×	×
६	१४४/१५०	८५/१५०	८७/१५०	६६/१५०	४४५/७००	१००/१००

मंगल सोमवार का हिसाब

ले बाबा ने सोमवार प्रबन्ध किया ||

सामान-२ थाली २ पतीले ...

अंगीठी-१ आटा-१

कोयले ... घी ...

... दाल ...

मसाला ...

बुधवार को

दोडतिया—१

Water-Lifting {measurements}

5 Fluid ounces = 1 guill
4 gills —— = 1 Pint
2 Pint —— = 1 quard
4 quards —— = 1 gallen
2 gallens —— = 1 Peks
4 Peks —— = 1 Bushal,
8 Bushals — = 1 quarters

1 gallen = 277·463 cubic inches = 10 pounds of distelled water at 62° Pharnheight.
6·25 gallen = 1 cubic foot water
1 gallen = ·16 cubic foot.
1 fluid ounce pure water = 1 ounce Averdopai
1 Point of pure water = 1 pound & a quarter.

किसी भी Scientific वस्तु या ज्ञान के चार भाग होते हैं :—
(1) weigh (2) measure (3) Communicate (4) Veryfy. ॥

सीताराम बाजार देहली ५ नवम्बर

दुकानकिराया १२।=)
कागज रंगीन — ।=)
पो. नक्शा —— १॥)
जाजमगज ६ × २½ गज — २।)
रजिष्टर —— ।॥)
केडीतए नु —— ।-) ॥
बोर्ड ——

इंक, स्याही -)
खल १)

7

Sun-Drying of Vegetables

Cabbage गाजर —— पत्ते तोड़कर गाजर के मध्य का गुद्दल निकाल ४ या ८ भाग लंबाई में काट डालो। १ से १ $\frac{1}{2}$ मिनट तक steam दो फिर trays पर रख के धूप में सुखाओ। पत्ते के साथ २ सफेद भाग भी reddish या brown हो जाये इसके लिए सोचने के पश्चात यह निकाला है कि trays के ऊपर काला cover रखा जाये ताकि सीधी sunlight न पड़े। इस प्रकार से १०० पौंड कच्ची गाजरों से ५ पौंड सूखी गाजर बनीं और इस सारे काम में ४ घंटे खर्च हुए।

Brinjal या वृन्ताक (बैंगन) —— बीज पूर्ण रीति से पकने के पहिले ही इन्हें तोड़कर $\frac{1}{8}$ इंच के टुकड़ों में काट रखना था। काटने के बाद इन्हें ऐसे पात्र में डालते जिसमें कि आधा प्रतिशतक Sodium Bisulphite का Solution हो (१ गेलन जल में $\frac{3}{4}$ औंस Sodi Bisul हो) इस घोल में १० से १५ मिनिट तक इन टुकड़ों को रखना था। यदि टुकड़े बैठने लगें तो उन्हें अच्छी तरह डुबो भी सकते हैं। काम में लाते समय यह घोल brown हो जाता है अतः जैसे ही इस solution का रंग dark-brown हो फौरन इसे फेंक नया solution का [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तब यह steeped material 1½ मिनट तक steamed करके trays पर धूप में सुखा दिया जावे। ... बैंगन सूख जायेंगे। 100 पौंड ताजे बैंगनों में से 5 पौंड सूखे बैंगन निकलेंगे। जो कि रंग में सफेद और quite ...

चरियाले का भाव — स्नानहीनाच यानरी, घतहीनचे भोजनम्।

कुचला — 8 तो.
कसीस — ½ पाव
गु. फिटकरी ।।। ½ छटांक या 3 ...
शिंगरफ ।।। का 2 तोला
सुहागा — 1½ तो
मालकंगनी — ।। की 1 छटांक
गोदन्ती हड़ताल ।। की ½ पाव
मनशिल ।। " ½ छटांक
केसर — ।।। का 3 माशे
अकरकरा ।। 1 तोला
जायफल — ।। 2 तोला
जावित्री ।। — 2 तो.
सीठा तेलिया ।। — ½ छटांक
सुरमा सफेद ।। — 1 सेर

~~सल्लाह~~ ~~के~~ ~~अल्मोड़ा~~
पता 1 मा ...

Distt. अलमोड़ा
~~मुकाम~~ गंगोली
गोपालदत्त पंत

पिलानीत, ..., ...
... 12 12/...
भाई लहनासिंह साहब ...
हकीम मुह. शाहगज
जि. ...

(सुरतक) प्रेमकली प्रेमभारती प्रेमपुजारी आए

श्रीयुत विनायकरावजी केतकर
गांव सावरपा
जि. रत्नागिरी Via बम्बई
गुजराती वैद्य ...

श्रीलालूभाई निक... जी
New manik chok mill
Ahmedabad

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(1)

ओ३म्

पाण्डुरोग — गर्मी, मट्टी खाना आदि कारण

१) मीठा नींबू, कागजी नींबू, नारंगी, तरबूज खावे तथा मूली को कद्दूकस करके उसका पानी निचोड़ उसमें कच्ची शक्कर मिलाकर पीवे। १, २ हफ्ते में तो मामूली पाण्डु दूर होता है। यदि चमड़ी पीली होने लग जाये तो ४, ५ सप्ताह भी लगेंगे॥ मिर्च गर्म चीज, खटाई न खावे। खटाई नीबू आदि तो खावे।

(२) दही केला के साथ १ रत्ती भीमसैनी कपूर प्रातः दो (लाल मिर्च, प्याज, बैंगन, ...)

तिल्ली - जिगर

(३) फटकरी खील १ तो० + गुड़ की २ तो० / दोनों ...

१ जलेबी, मांस दाल, ... ५ माशे सबेरे दो॥ पीले रंग की चीज मत दो ...

१ - मूली को नमक लगाके रात को चीनी के बरतन में रख ओस में रख सवेरे टट्टी जाने के बाद खावे तो तिल्ली न रहे॥

२. सूखे अंजीर को जामुन के सिरके में खिलावे तिल्ली न रहेगी।

३. जिगर के लिये खट्टी लस्सी में नौशादर जरा सा डाल पिलावें तो जिगर तिल्ली ठीक हो।

४. जामुन के सिरके में पपीते का अचार डाल खावे तो तिल्ली की जड़ से दूर कर जाती है॥

४. ... अचार तिल्ली को जड़ से दूर करता है॥

५. नौशादर, सुहागा, काला नमक, जीरा काला, सबका समान भाग खौराक दो रत्ती, दिन में ३ बार ३ खुराक दो। (१३६ ए. ...)

(६) गुलखैर + कसीस + लहसन तिल्ली की अपूर्व दवा है॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तब यह steeped material 1½ मिनट तक steamed करके trays पर धूप में सुखा दिया जावे। ... बेंगन सूख जायेंगे। १०० पौंड ताजे बेंगनों में से ५ पौंड सूखे बेंगन निकलेंगे। जो कि एकदम सफेद और quite ...

पटियाले का ख़िजाब

स्नानहीनाच यानारी, घृतहीनञ्च भोजनम्।

कुचला —) ८ तो.
कसीस —) ½ पाव
शु. फिटकरी)॥ ½ छटांक या ३ तोला ...
सिंगरफ ॥) का २ तोला
सुहागा ←— 1½ तो
मालकंगनी ——)॥ की १ छटांक
गोदन्ती हड़ताल —)। की ½ पाव
मनशिल —)। " ½ छटांक
केसर —— ॥)३ का ३ माशे
अकरकरा =)॥ १ तोला
जायफल —— —)॥ २ तोला
जावित्री —)॥ —— २ तो.
मीठा तेलिया =)॥ —— ½ छटांक
सुरमा सफेद ≡) —— १ सेर

~~अल्मोड़े के अलमोड़ा~~
पता १ मा ...
Distt. अलमोड़ा
मुकाम गंगोली
गोपालदत्त पंत
शिलाजीत, कस्तूरी, निर्बिसी ...

... १२ ½
भाई लहनासिंह ...
हकीम मुहम्मद शाह ...
...

(प्रेम कली प्रेम भावना प्रेम पुजारी आए)

श्रीयुत विनायकरावजी केतकर
गांव सावरपा
जि. रत्नागिरी Via बम्बई
गुजराती वैद्य

श्री लालूभाई निकम जी
New manik chok mill
Ahmedabad

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ओ३म् (1)

पाण्डुरोग — मर्गी, मट्टीखाना आदि कारण

१) मीठा नींबू, कागजी नींबू, नारंगी, तरबूज खावे तथा मूली को कद्दूकस करके उसका पानी निचोड़ उसमें कच्ची शक्कर मिलाकर पीवे। १, २ हफ्ते में तो मामूली पाण्डु दूर होता है। यदि कमजोरी पीले होने लग जाय तो ४, ५ सप्ताह भी लगेंगे॥ मिर्च गर्म चीज, बादी तेलन खावे। खटाई नींबू आदि तो खावे।

(२) दही केलाके केलाव १ तोला मीठा नाद प्रातः दो लाल मिर्च, प्याज केसात ...

तिल्ली - जिगर

(३) फटकरी खील १ तो. + मुरकी २ तो. / दोनों ...

१ जोती, अजवायन, ... ८ मात्रे ... ॥ पीले रंग की चीज ...

१ - मूली को नमक लगाके रात को चीनी के बरतन में रख ओस में रख सबेरे टट्टी जाने के बाद खावे तो तिल्ली न रहे॥

२. सूखे अंजीर को जामुन के सिरके में खिलावे तिल्ली न रहेगी।

३. जिगर के लिये खट्टी लस्सी में नौसादर जरासा डाल पिलावें तो जिगर तिल्ली ठीक हो।

४. जामुन के सिरके में पपीते का अचार डाल खावे तो तिल्ली की

8. जामुन के सिरके में ... का अचार तिल्ली को जड़ से दूर करता है॥

५. नौशादर, सुहागा, काला नमक, जीरा काला, स्वर्ण ... खोराक दो रत्ती, दिन में ३ बार ३ खुराक दो। (१३६८. ...)

(६) ... + कासीस + ... तिल्ली की अपूर्व दवा है॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

औषधि —

१. अखरोट पके हुए को चूल्हे में जलाकर बुझाके उसकी १ तोला उसकी राख + ७ तुलसीपत्र + ७ कालीमिर्च घोटकर ठंडाई बनाकर पीलो। तुरन्त खून बंद हो॥

२ - बहेड़े की गुठली के बीज निकाले दूध में खूब औटावे तो उस दूध को पीते ही खून बंद हो। नाक से कभी नहीं होने देता है॥

३ - हाथीचक्कू (पत्थरचट्टा या ददमार) के तीन पत्ते + ५ कालीमिर्च डाले (चाहे नमक भी डाल लें) पीवें तो खून तत्काल बन्द हो॥

४ — नारियल के छिलकों की राख बकरी के दूध से पीवे।

५ - गेरू चबाते रहने से खून बंद होता है (धनजयराम वैद्य)

६ - सुखवा या भांग की टिकिया [illegible] बांधे।

७ - कहरुवा की गोली — बड़ी मूली में रसौत भरके उसपर कपड़मिट्टी करके भट्ठी में दबावे जब भर्ता हो जावे तो सारी को कूट ले। उसमें सूखे सिंघाड़े, निम्बोली की अन्दर की गिरी, हरड़, गेरू, रीठे के अन्दर के बीज की गिरी, पीपली, कालीमिर्च, जीरा, त्रिशोध आदि सब चीजें डालकर गोली बनावे बेर के बराबर। नमक, मीठा, तेल, खटाई मिर्च न खावें। मिस्सी रोटी घी के साथ खावे॥ गाजर, मूली खूब खावे। (ब्रजबहादुर)

(८) मृगांक रस अजादुग्ध के साथ दो खून बंद होगा॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(मामा ब्रजबहादुर के दो गुटके)

(६) मगांर [illegible] के छेद्र से कुनाव से खून बंद होगे ।

ज्वर प्रकरण —

तृतीयक ज्वर — अंजनहारी की मिट्टी मकोय, पपताय व कपड़ेके रोगी को दे एकबार में रोग नाश है ॥ शीतलजी [illegible]

1. मौसमी बुखार या मलेरिया दूर न हो तो कलमी शोरा (बच्चे को ४ रत्ति) जवान को ८, १० रत्ति पानी में घोलकर पिलादें ऊपर से चादर ओढ़ादें । पसीना आकर बुखार उतार देता है ॥

2.—हजारदाना ३, ४ माशे को कालीमिर्च ३, ४ डालकर दो इलायची डालकर घोट पिलादो । मलेरिया या अन्य सब ज्वर क्षण में नाश हो जाते हैं । विषम विरेचनादि ज्वर में सब शान्त हो जाते हैं ॥ पिलादो, मलेरिया या अन्य सब ज्वर क्षण में नाश हो जाते हैं । विषम विरेचनादि ज्वरों सब शान्त हो जाते हैं ।

3. मलेरिया सरदी का — नीमपत्र $2\frac{1}{2}$, कालीमरिच ७ संख्या, करंज १ फल पीसकर ३ गोली बनाके एक सुबह, एक दो घंटे पूर्व, एक एक घंटे ज्वर से पूर्व देवे ।

४. तृतीयक ज्वरे — लालमिर्च बीच की उंगली से बांधकर ज्वर से एक घंटे पहले जल में डुबो रखें ॥ (४) स.मु.

(५) आधपाव सौंफ तवे पर भूनें, नीचे मिसरी गीले खद्दर के कपड़े में लपेट के भुभल (राख) में दबादें । फिर दोनों को पीसकर गर्म २ तीन तोला खालें पसीना खूब आवेगा, बुखार उतर जावेगा । (३५/६.१

(६) फिटकरी की खील १ रत्ती से ४ रत्ती तक बताशा में खाने से मलेरिया के लिये उत्तम है । बुखार से पहिले खाओ । (४८) स.मु.

(७) सहदेवी में कृष्णा मरिच मिलाकर पिलावें । सिर में सहदेवी बांधे । व तृतीयक चतुर्थक बुखार में जड़ पत्ते आदि ५ माशे, २ कालीमिरच दें ।

(८) [illegible] — गिलोयहरी ६ तोला, गुलबनफशा ४ तोला, गुलकन्द [illegible] बताश सफेद ५/-. शर्बत तय्यार करके खुराक २ तोले [illegible]

(९) फिटकरी खील, बताश सफेद प्रत्येक १ माशा [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अर्श—

1. अखरोट पके हुए को चूल्हे में जलाकर बुझा के उसकी १ माशा की राख + ७ खूबकलां + ७ गोल मिर्च घोटकर ठंडाई बनाकर पीलो। तुरन्त खून बंद हो॥

२ - बहेड़े की गुठली के बीज निकाले दूध में खूब औटावे तो उस दूध को पीते ही खून बंद हो। ताकत कम नहीं होने देता है॥

३ - हाथी चकू (फ्लावर या दर्दमार) के तीन पत्ते + ५ काली मिर्च गोल (चाहे नमक भी डलले) पीवें तो खून तत्काल बन्द हो॥

४ — नारियल के छिलकों की राख बकरी के दूध से पीवे।

५ - गेरू चबाते रहने से खून बंद होता है (धनीराम वैद्य)

६ - सुखवा या भांग की टिकिया [illegible] बांधे।

७ - बाबाजी की गोली — बड़ी मूली में रसौत भरके उस पर कपड़ मिट्टी करके भट्ठी में दबावे। जब भर्ता हो जावे तो सारी को कूट ले। उसमें सूखे सिंघाड़े, निम्बोली की अन्दर की गिरी, हरड़, गेरू, रीठे के अन्दर के बीज की गिरी, पीपली, काली मिर्च, जीरा, त्रिशोध आदि सब चीजें डालकर गोली बनावे बेर के बराबर। नमक, मीठा, तेल, खटाई, मिर्च न खावें। मिस्सी रोटी घी के साथ खावे॥ गाजर, मूली खूब खावे। (व्रजबहादुर)

(८) मूंग की दाल छिलकेवाली दूध के साथ दो खून बंद होगा॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(३)

(५) मगांर ... कच्चेढ़ ... बुखार से छूट जायेंगे।

ज्वर प्रकरण—

तृतीयकज्वर — अंजनहारी की मिट्टी मकड़ी, अपतापक कलेदर के रोगी को दे एकबार में रोग नाश है ॥ शीतलजी मलकर के.

1. मौसमी बुखार या मलेरिया दूर न हो तो कलमी शोरा (नमक) को ५ रत्ति, जवाखार ८, १० रत्ति पानी में घोलकर पिला दें ऊपर से चादर ओढ़ा दें। पसीना आकर बुखार उतार देता है ॥

2.—हजारदाना ३, ४ माशे को कालीमिर्च ३, ४ डालकर दो इलायची डालकर घोट पिला दो। मलेरिया या अन्य सब ज्वर क्षण में नाश हो जाते हैं। विषम विरेचक तीव्र ज्वर में सब शान्त हो जाते हैं ॥ पिला दो, मलेरिया या अन्य सब ज्वर क्षय में नाश हो जाते हैं। विषम विरेचक तीव्र ज्वरों सब शान्त हो जाते हैं।

3. कालेरिया सरदी का — नीमपत्ता $2\frac{1}{2}$, कालीमिर्च ६ तोला, करंज १ तोला पीसकर ३ गोली बनाके एक सुबह, एक दो घंटे पूर्व, एक एक घंटे ज्वर से पूर्व देवे।

४. तृतीयकज्वरे — लालमिर्च बीच की उंगली से बांधकर ज्वर से एक घंटा पहले जल में डुबो रखें ॥ (१) स. मु.

(५) आधपाव सौंफ तवे पर भूनें, नीचे मिसरी गीले खद्दर के कपड़े में लपेट के भुभल (राख) में दबा दें। फिर दोनों को पीसकर गर्म 2 तीन तोला खावें पसीना खूब आवेगा, बुखार उतर जावेगा। (३९. जे. १

(६) फिटकरी की खील १ रत्ती से ४ रत्ती तक बताशा में खाने से मलेरिया के लिये उत्तम है। बुखार से पहिले खाओ। (४८) स. मु.

(७) सहदेवी में कृष्णा कालीमिर्च मिलाकर पिलावें। सिर पर सहदेवी बांधें। व तृतीयक चतुर्थक बुखार में जड़पत्ते आदि ५ माशे, ३ कालीमिर्चें।

(८) ... — गिलोयहरी ६ तोला, गुलतीलोयहर ४ तो., मुलहठी ... बताशे सफेद ... शर्बत तथ्यार करे खुराक २ तो ले ... तक

(९) फिटकरी खील, बताशा सफेद प्रत्येक १ माशा ...

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मृगीरोगपर—

१— नरकपालास्थि (३ तीदिन जलतीनिकाल) भस्मकरके मधु से अपस्मारनाश हो॥ (साधु मानचन्द्र कामिनी)

२. शीशा का ३ माशा सपूत फूंकें। सांप, अफीम, [illegible] तकको पास दस करताहै। जगनिती को कभी न दे। (२०५. रु.)

(३) नागदन्तीमें काली मिर्च ३ ४ दिन [illegible] समयपर नस्यदेने से तुरंत आराम होताहै।

(४) मृगीनाशक ब्राह्मी — पत्ती ब्राह्मी + संखपुष्पी + बच + छोटी इलायची सबबराबर चूर्ण मात्रा १ माशा से ३ माशा तक लेके इसमें आधी रत्ति रससिन्दूर मिलाकर शहद या घी से खावें तो मृगी शीघ्र नाश होती है। [illegible] है। यदि रससिन्दूर न मिले होतो प्रातः सायं इसी चूर्णको दो २ माशे घी या शहद से खाने भी अपस्मार रोग शीघ्र नाश होता है।

(५) अर्क ब्राह्मी — ब्राह्मी १० तोला + बच १० तो. + शंखपुष्पी १० तो. + गिलोय ५ तो. इन सबको २४ घंटे पानी में भिगो. कर रख छोड़ें। फिर इनका भभके द्वारा अर्क निकालें। इस बार अति उत्तम अर्क बनेगा। इसकी १ तोला मात्रा है। (दूध में डालकर पीवें) या पीकर ऊपर से दूध पीवें। (बी. २० तोले शीशी २) ॥ इसके पीने से लाभ होते हैं। दिल दिमाग, बुद्धि, मेधा वर्धक, अपस्मार, उन्माद, मस्तिष्क, दिमाग की कमजोरी आदि हैं।

(६) ब्राह्मी अर्क १ छ., बादाम ४ छ. + मिश्री २ तो + छोटी शक्कर [illegible] शर्बत बनाओ। ३ तोला २ बार जल में मिलाकर पीओ। दिल दिमाग बुद्धि वर्धक है॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(५)

२. श्वित्र गलित कुष्ठ पर — (मधुपकली)

१- त्रिदिन सप्तमलिं मधागुरुच्चे मूलं सत्त्वं विपाच्यं

पश्चे च मधागौ निष्कास्यतां, शेष्यां मधागुं भक्षयेत् ।

एवं त्रिदिन पवलिं नवजन घातेन तस्या त्रिदेनं च मधागौ

[illegible] । इति चक्रकान्तिः ॥ [illegible]

[illegible] ॥

२) चित्रक + चिरमिटी लाल को महीन चूर्ण लगाना कोढ़। श्वित्र

(३) गोदन्ती प्रातः २ रत्ति, दोपहर १२ बजे और ४ बजे फिर दो दो
मक्खन से

रत्ति गोदन्ती उन्नाब शर्बत से । रात को मलाई से दो रत्ति गोदन्ती दो

एक मास पश्चात् बाद मात्रा बढ़ा दो, मास तक चार रत्ति से अधिक

एक काल में न बढ़े । चौलाई बथुआदि खूब खावें । गलितकुष्ठ अवश्य

दूर होगा । एवं मणि का रस सभी " ॥ (महादेव)

{गोदन्ती के बहुत लाभ हैं; ज्वर, दिल धड़कन, दिल की गर्मी, मसाने की
गर्मी, सुजाक, प्रमेह, बालरोग ज्वर इत्यादि, कुष्ठ मन्दिता शरू में
{गोदन्ती + स्फटिका + गैरिक + चन्दन बुरादा शीतल चीनी (महादेव)
से सुजाकादि दूर होता है॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

३-श्वास, दमा पर —— (६)

१. सर्पभस्म मधुना लिहिन्नवसप्तदिनं लेहनेन भीरोगो प्रशाम्यति ॥

२. ताम्रकार्षपणं (पैसा) मध्याह्नोपरि नीलवस्त्र [illegible] ... स्नुहीपत्र चे दत्वा गजपुटेन भस्मकारयेत्। तद्वा [illegible] ताम्रं ... १२ बार गालकरके पुटपाक ... खण्डं कृत्वा मधुना ताम्बूलेन वा कणमात्रं भक्षणेन श्वासं नाशयेत् ॥

३. अदरक रस + प्याज रस + शहद खाने से श्वास दूर होता है

(४) दमा बलगमी —— गेहूं, हल्दी को अलग २ भुना जावे। फिर पीसकर सम भाग से पुड़ियां बनावें। पांच माशा प्रथम दिन। पांच माशा १ रत्ती २ दिन। ५ माशा २ रत्ती आदि ४१ दिन पानी के साथ खिलावें पुड़िया रोज़ दें। दमा सर्वथा दूर हो जावेगा ॥ (१.६.१ ...)

(५) दमा बलगमी — कीकर छाल + तीन सालका गुड़, दोनों को
५ सेर २ सेर
मिलापानी २ सेर में डालके पकाके से अर्क खींचो। फिर उसे प्रात: काल =) मा), (=) आदि प्रति दिन १ तोला तक बढ़ाओ फिर =) तक घटाओ। १० रोज़ दौड़ने से भी दम नहीं चढ़ेगा ॥

(६) तम्बाकू खार से वा "बांसा + [illegible] गिदड़ तम्बाकू" साथ लेकर [illegible] देने से वा पान से तो अवश्य दूर हो (मंगलसेन ... गुरुकुल)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(८)

४ पद्मा (कालाज्वर) ——— गिलोय, खूबकलां, मुनक्का, मुलहटी, बनफशा प्रत्येक ६ माशे लेवें पावपानी में औटावें। चतुर्थांश बचे तो छान मिश्री डालपीवें। ८ दिनमें ही ज्वर खांसी अन्दरसे दूर होजावेगी॥

(२) जीपर गर्मी रहे तो बनफशा २ माशे, खीरे ककड़ी के साबुत बीज, इलायची तीनों को घोट मिश्री डाल ठंडाई की तरह पीलो॥ (उपरलिखे दोनों ही प्रयोग श्री बाबू भगवानदास जी से मिले, जिन्हें वैद्य [illegible] करतारसिंह करानी से मिले थे)॥

३. खांसीपर — बदाम दो भूने हुए लो। छिलका उतारकोमिट्टी चूसते रहो। कुपिद टे दे, २ बदाम दिनमें चूसलो॥ (भगवानदास)

४. खांसी पर भी बदाम, किशमिश, मिश्री मुलहठी इन तीनों को कूट कर गोली बनाकर मुंह में रखावें ३ माशा रात तो खांसी उड़ जायेगी॥ (कैशीराम जी)

५. (तपेदिक) वरक चांदी एक तोला + सफेद चंदन ४ माशा दोनों को हल करके खिलावें ऊपर से अर्क गावजबां १ तोला, शर्बत नीलोफर २ तोले मिलाकर पीवें॥ १९२३.८.१५

(६) यक्ष्माजित ~~[illegible]~~ माशा पान में देवें। नमक, मिर्च, खटाई, मिठाई, रबड़ी, हलवादि न दें। ४० दिन तक खावें। (बूलदेव राजजी)

(७) जर्मनी से आया हुआ खानसे निकला हुआ अंजन मणि ब्रासीला पोस्टा १ तोला की डली, गौ के घी १ सेर में पकावें। जब मोमकी तरह होजावे या सलाई आरपार निकलजावे तो निकाल ले। इसकी १ चावल मात्रा रोज खावें। दूध पीवें तो यक्ष्मादि निश्चित होताहै। (आनन्दागिरि जी) (लिखने वाले ने [illegible] लिखा है)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दन्तरोग —

१- हल्दी बारीक पीसी और लाल मिर्च बारीक पीसी [illegible] कर पानी में पीसके, पानी को [illegible] मिलाकर शीशी में भरलो। दांत दर्द में १ [illegible] काफी है। लाभ होगा॥

२ — [illegible] आनंद जी [illegible] — [illegible] स्वर्ण, [illegible], मुलहठी [illegible] दांत के सब रोग [illegible]॥

३. लाल मिरचों को पानी में उबाल कुल्ला करने से कैसा भी दांत वा दाढ़ का दर्द हो आराम हो जाता है॥

४. मंजन — कुनीन ३ भाग, [illegible] १ भाग।

५. दाढ़ दर्द और दांत दर्द का शर्तिया इलाज — चूना [illegible] १ माशा + कुनीन १ माशा + नीला थोथा १ रत्ती + मारफिया ½ ग्रेन (⅛ [illegible])। सबको मिलाकर बारीक खरल करके रख छोड़ें। दाढ़ के दर्द के स्थान में लगावें, यदि गढ़ा पड़ गया हो तो साफ करके दवाई इसमें भर दें। दर्द तत्काल बंद हो जायेगा।

[illegible] जनवरी ११०८

६. हल्दी के खेत में से एक [illegible] (यह [illegible] कि उसका पता [illegible] है चाहे [illegible] हो वा नहीं, [illegible]) उसकी गांठ (जो [illegible]) को १ [illegible] लपेट कर दाढ़ में भर दें, मुंह खोल दें [illegible] अन्दर न जाने दे॥ (शायद [illegible] विक्रय होती है)॥ [illegible]

७. दांत हिलने को — रात को बड़ के दूध लगाकर [illegible] दांत पर [illegible] सो जाओ और [illegible] (एक [illegible] कैसे भी दांत हिलते हों [illegible]) [illegible]

८. [illegible] (जिसके दांतों [illegible] उखड़ [illegible] हो) [illegible] ३ भाग + [illegible] [illegible] जाते हों॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हींग १ भाग मिलाकर हड्डी ... लगावो। ...

हैजा — प्रमाण भाग

१. प्याज का अर्क निकाल (खरलमें) बोतलों में भर लेवे।
५,५ मिनिट बाद हैजे वाले को पिलादो प्यास लगे तो
सौंफ का अर्क पिलावे (स्वामी ...)

२. लशुनादिवटी दे — लशुन, जीरा, हींग, काला नमक, गंधक
सोंठ पिप्पली सबको कूट पीस नीबूरस से गोली
बनाकर हैजे में दे॥

३. मिट्टी का तेल १ चम्मच पिलादो बच जायेगा॥

४ — महागंधक दो

५ — सोमलबिन्दु (संखिया) दो। सुधा अमृतादि दो॥

६. अनुभूत हैजा — हैजा होते ही लहसुन, जीरा, सेंधा नमक (काला)
गंधक शुद्ध, सोंठ, कालीमिरच, पीपल, भुनी हींग
इनके समभाग चूर्ण को नीबूरस से खरल कर गोली बनावे
इससे हैजा शीघ्र आराम होता है। अर्क पोदीना, सफेद
या बर्फ चूसने को देवे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वाजीकरण—

१. अंगूर छोरा कपड़े में से रस निकाल बरतन में डाल मंद अग्नि पर पका लो। दो छटांक रह जाने पर उतार के बोतल में भर लो। २½ तोला रोज पीने से नामर्द आतु खूनकी, निर्बलतादि सब ठीक होता है।

२- पारद गुटिका— हिंगुलोत्थ पारा लो। उतनी ही चांदी के वर्क डालो। तो गोली बंध जायेगी। इस गोली को कपड़े में बांध एक धागा बांध दोलायन्त्र लकड़ी लटका दो। इस बरतन में २ पाव पानी आध पाव काली उड़द की दाल ½ पाव हो। सारा पानी सूख जाये तो उतार के दाल फैंक दे। पारे की गोली निकाल लो। यह सब धातु वर्त सख्त हो गए हैं। गर्म होते थोड़े दूध में डाल दूध पिया करो। उस एक गोली को वर्षों ही चला सकते हैं। (पाखंडी लोग वंग पत्रों से धूपन कर गोली बना दिखाते हैं।) धातु पुष्ट करती है॥ (स्वामीजी)

वंग भस्म विधि— एक उपले पर पीपल वृक्ष भस्म चूर्ण बुरका के ऊपर वंग पत्र बिछा ऊपर से फिर पीपल छाल चूर्ण बुरका के उपलों में रख गज पुट में फूंक दे। यह खील की भस्म हो जावेगी। शीतवीर्य बनेगी। इसे प्रमेह जरी आदि रोगों में दे। वंग कलई प्रायः बाजार में ही शुद्ध ही मिलती है॥ (स्वामी जी)

जी। शीतवीर्य है। इसको शतावरी आदि दें॥ (स्वामी)

(वंग [illegible] प्रायः बाजार में शुद्ध ही मिलती है।)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पारा [illegible] शुद्ध हो जाता है। (जगराम [illegible])

खांज, कंडू दाद —

(1) मनसिल, गंधक, साधारण पारा तीनों समभाग मिला खरल करो तत्काल पारद भस्म हो जावेगी। इसे कड़वे तेल मीठे में ... मालिश हो तीन दिन में दूर हो जावेगी।

(2) पारा, आंवलासार गंधक, सुहागा, मुर्दासंख,
६ माशे ६ माशे ६ माशे ६ माशे

लौंग। इन सब चीजों को बारीक पीसकर और घी गौ का
३ माशे

एक छटांक लेकर एक सौ एक पानी से धोकर इन में मिलाकर बदन पर मालिश करें रात को मालिश करके प्रातः गरम पानी से नहावें॥ (मामाजी)

(3) दाद जो जंघाओं में होती है — आंवलासार गंधक, बारीक पीस मीठे तैल में डाल एक नुस्खा लगा दो, कपड़ा नरम रहे। दो चार दिन में आराम होगा। (गंगेशगिरि)

(4) ... — गंधक + सुहागा + मिश्री + फिटकरी समभाग पीस छान नीबू के रस में दाद को खुजलाकर रोज़ एक बार ७ दिन तक लगावें। कष्ट होगा परन्तु दाद चाहे कितना पुराना गहरा भी क्यों न हो पुराना भी हो दूर कर देगा ...
(देखें पृ० ...)

(5) पामा (छाजन की) — खील सुहागा + गंधक + कर्पूर +
१ तोला १ तो. १ तो.

मुर्दासंख। सब बराबर बारीक पीस ज़रा सा नारियल का तेल मिला
१ तो.

सब ठीक कर ले। मरहम बन जायेगी। ... लगावे॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कमरदर्द पर —

१- सोंठको मारी मापीस पानीमें आटेकी तरह गूंधलो तो
[एरंडपत्र तथा]
बनालो (ऊपर एरण्डपत्र लपेटो फिर कपड़े लपेट गाजनी पर
मिट्टी पुत कपड़े लपेट चिकनी मिट्टी लगा भट्टी में भूनलो।
२, ४ घंटे के बाद उसे निकाल साफ करलो। इसे २, ४ दिन
खिलाने से कमर का दर्द दूर होता है। गुड़ दूध के साथ इसे
खिलाना चाहिये (चन्द्रकान्ति, गायक आर्यसमाज)

२— सोंठके मुरब्बेको खिलाओ। सौंफके अर्क का
अनुपान दो। वायुका दर्द दूर होजावेगा। (स्वामीजी)

(३) डूटसिंह या पुनर्नवाको उबाल उस के पानीसे बच्चेको
नहलाओ और उसको थोड़ा सा पिलो तो (श्यामजीलाल
सूखारोग दूर होगा अमृतसर)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मसाना या बच्चों का सूखना — दांत निकलने से पहले होता है — १- मुर्गी के अण्डे पर आयलपेट उसे भाड़ में भून लो। फिर मन्द का भाग चुटकी २ पांच दिन दो तो बच्चा ठीक हो जाता है।

(२) स्वर्णभस्म दो

(३) च्यवनप्राश अंजातु च्यवन दो ॥

३. इटसिट को उबाल उसके पानी से बच्चे को नहलाओ और उसके दो चमचे पिलाओ। (श्याम. मोमल अमृतसर)

१. स्वर्जिकाम्ल दो. — "सोडा सज्जी २१ भाग + जल २१ भाग, घोल दो.
{ नीबू citric acid ४१ भाग + जल ४१ भाग, घोल दो.

पुनः दोनों घोलों को मिलाकर चीनी के पात्र में मन्द २ पकाओ, पानी जलने पर नमक बचेगा। उसे ही "सर्जिकाम्ल" कहते हैं। बच्चों के लिये देते हैं ॥

English पुस्तक — Elementary Pharmacopia of medicine

41 grain Carbonate of Sodium + 1 oz water १ औंस जल में Dissolve करो।
citric acid 20 gr. + $\frac{1}{2}$ oz water में Dissolve
दोनों को घोल मिला दो। फिर कार्बनाम्ल निकल जाने के पीछे आग पर उड़ाओ। (Citrum, स्वर्जिकाम्ल बनेगा।)
(फिनाले)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आतशक — (१) मंहदी + इलायची + कत्था सबको समभाग पीस के गोली बना। एक गोली प्रात: पानी के साथ। [illegible]

१. कुतिया (गहरा नीला रंग लिये हो) लेकर उसे पावभर दूध में छोड़कर

फिर उसके के बुरादे में रख कपड़ा मिट्टी लीप कर के गजपुट की आंच दो, निकाल कर रख लेवे। उसके दो चावल भर माला मक्खन, मलाई या बताशे में डाल कर खिला दो। रात भर में पानी न छूने दे। दूध भी प्यास के समय पीने को दे। प्राय: यह दवा सोते समय खिलावे। सोने न दे। बहुत तड़फेगा तो भी पानी न दे। प्रात: काल या १२ घंटे में गलित इंद्रिय भी सर्वथा अच्छी हो जावेगी। दो चावल की मात्रा एक दिन की दी हुई दवा चमत्कार दिखलाती है। फिर दोबारा न दो। (स्वामीजी कृष्ण दास परिमाल)

२. बैंगन कूति पे [illegible] भी दे सकते हैं।

३. मरहम आतशक — माजू सब्ज़ — मतानिल दोनों को समभाग लेकर चूरा करके तवे पर भूनें, सपूर करके मक्खन में हल करें, मलहम लगाते रहें। यदि कुछ रक्त रखें तो १ माशा की गोली बना रोज़ प्रात: बासी जल के साथ खिलावें। (१५८६ स.ग.)

४. सूज़ाक — दाना इलायची छोटी — कत्था सफेद + फिटकरी सफेद भुनी कबाबचीनी — तबाशीर — कापूर + सफेद खाण्डरी हरएक [illegible] १ माशा। पीकर के स्वरस में चार पहर खरल करके जंगली बेर जैसी गोली बनावें। (और रात १ गोली प्रात:, १ दोपहर, १ शाम दूध की लस्सी से लावें। (१८० पृ. स.ग.)

५. आतशक — [illegible] + सफेद कत्था + चूना [illegible] [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible]। [illegible] १ [illegible]

६. इन्द्रायण मूल का क्वाथ बना २१ दिन तक पिलाता है। आतशक

५. इन्द्रायणमूल का क्वाथ बना २१ दिन तक पिलाता रहे (आतशक नाशक)।
(१५)
(चुन्नीलाल)

औपिधान, सूजाक, प्रमेह पर — (पेशाब खुलकर आवेगा)

१. वात प्रमेह तक के लिये अच्छा है — इमली के बीज जल में भिगो रखें, गिरि निकाल कर ताल मिश्री मिला घोट के पीने से आराम होता है॥

२. बताशे में बड़ का दूध के दो बिंदु डाल रोज पिलाने से ठीक हो जाता है। [illegible]

३. तकोंदिकनी (अपामार्ग) ७ रत्ती, १ रत्ती अफीम, शुद्ध करें। पानी में खरल कर ११ गोली बनालें। जो मानों लिंग अमृत या रामबाण है (वैद्य आरामजी पाटियाला)
अमृत या रामबाण है (...रामजी)

४. मालकंगनी ५ घंटे पानी में पीस कर के जंगली बेर सम काबबगोलियां
बना प्रतिदिन दूध के साथ खाओ॥ (४४६. ह. मु.)

५. हस्व सूजाक — असल अस्सुस मकूशर को सम्पूर्ण [illegible]
बिरोजा खाम पिघला कर अनाव से छोटी गोलियां। ८ के गोली
रोज १ पाव गोदुग्ध से खावें या बासी पानी के साथ खावें॥

६. सम्पूर्ण जरयान — भंगबीज + तालमखाना + समुद्रसोख + बीजबंद, प्रत्येक सम भाग लेकर अलग २ पीस कर सब को मिलावें
प्रतिदिन दो माशा जल के साथ खावें। (१२२५. मु.)

७. सूजाक — छोटी इला + संगजराहत + जौखार हरेक तीन माशे मिलावें
दूध की लस्सी के साथ फांके।

८. विशुद्ध गंधक १ छटांक को ७ दिन नीमपत्र रस में भावना दे फिर भांग के दो बोतल रस में ४० दिन भावना दे सुखा रख छोड़ पाक करे तो [illegible] लाल हो। १ रत्ती गंधक मलाई या दूध में लेवे तो धातु [illegible]
[illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अन्यकुव्याधिविकारोंपर – (१६)

अकेडुम्भमें बासमती या साठी के चावल भिगोदो फिर पीस छूंक निकालो। नस्यदेने से मुखकेजबड़े यदि बंद हों तो खुल जायेंगे। [illegible]कामदूर होगा। सर्पविष, भांग आदिमें इस नस्यसे वमन होकर रोगी चंगाहोजाता है। एक चुटी मात्रा पान या शहद या गुड़ या मक्खन मलाईके दे तो खांसी दो पुड़ियोंमें उड़ जातीहै। (स्वामीजी महाराज भजनरामजी)

१: मुचकुन्द के फूलोंसे तिलतेल बनाओ इसे मलनेसे शिरवेदना दूर होतीहै। (महादेवलालशराफ सेठ कलकत्ता)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जीर्णज्वर

तापतिल्ली के — यकृत् ज्जाया (गुरुजी से मिला)

१. नौशादर + ४ काली मिर्च को कूट (पान के साथ) खाने से लाभ हो (स्वामीजी)॥

२. घीकुमार के रस के दो बूंद पताशे में डालकर खिलाने से लाभ है।

ॐ (३) कुटकी + चिरायता + पित्तपापड़ा + नागरमोथा + ...
इनका काढ़ा ४ दो पूर्ति प्रातः सायं पिलाते जाओ। अवश्य आराम होगा। (चि. चन्द्रो) (पिताजी पर अनुभूत) जीर्णज्वर पर

(४) यकृद्ज्जाया — मुसब्बर १ तो. + नौशादर २ तोला + सज्जी ६ तोला। मात्रा २ रत्ती। अनुपान जल। यकृच्छूल में अव्यर्थ।

(५) इन्द्रायण जड़ + हरीतकी त्वक् समभाग पीस गरम जल से देते हैं
रद्दी होती, तिल्ली दूर होती तथा रक्तशोधन करती है आतशक का
नाश करती है। (जगदीश नीलकंठ देहली)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नाभि या नाफ उतर जाने में

(१) एक हिस्सा नकछिकनी (अग्रगंधा), दो भाग गुड़ मिला कर जल से खिलाने से (३ माशे मात्रा खिलावे) तो आंत नीचे ऊपर हो स्वयं ही ठीक हो जावेगी। आवश्यकता पड़ने पर दूसरी गोली दो। नहीं तो एक ही काफी है। (हो जावेगी। आवश्यकता पड़ने पर दूसरी गोली भी दो नहीं तो एक ही काफी है।

॥ ओं प्रकाश की जन्म कुण्डली ॥ नीचे के पन्ने देखो

अथ शुभसंवत्सरे १९८१ विक्रमे पौषे मासे शुभे शुक्ले पक्षे तिथि तृतीया घ० ४९/३३ नक्षत्रोत्तराषाढा घट्य: ६/४० व्याघात योग घ० ७/१४ दिनघट्य: २४/४५ रात्रीघट्य: ३५/१५ तयोरैक्यं रवावि घट्य ३६/३८ कन्यालग्नोदये श्रीमान लाला लक्ष्मीदास क्षत्री पलाद तदात्मज श्रीमान गुरुचरणदास गृहे धर्मपत्नी प्रसूता पुत्ररत्नमजीजनत। होराशास्त्रानुसारेण अवकहडा चक्रे जन्म खेमराज नामकृत: मकरराशी शनि स्वामी विडालवर्ग। अन्य पूर्वोक्त चिन्हादित्यादि वि लोकनीयम ॥ मंगलं, शुभम, शुभम, शुभम

अथ जन्मलग्नम् — अथ चन्द्रलग्नम्

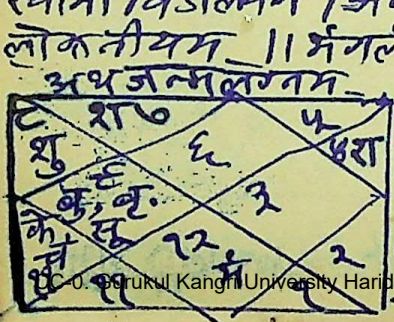

ग्रह
उ०
प्रका
शकी
जन्म
कुंडली

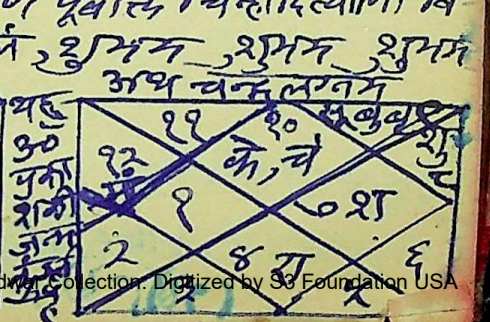

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शरीर सौगन्ध्यकरणम् — (२५)

कपूर कचरी + पत्रज + नागकेसर + कूठ इन चारोंमें घृत मिलाके तीन टंक परिमाण लेकर नित्य इस औषध को चालीस दिन तक सेवन करे। यह रसायन है। इस पर दूध भात का पथ्य भोजन करे॥ इसके गुण — इसके सेवी के परम सुगन्ध हो जाता है। पास के मनुष्य अपने मोहित हो जाते हैं और वशीभूत हो जाते हैं। कभी उसके शरीर में केसर की सी सुगन्ध की लपटें आने लगती हैं, कभी कपूर कचरी की सी और कभी कपूर की सी और कभी चन्दन की सी लपटें उठती हैं। उसका स्वरूप अति प्रिय हो जाता है तथा उसकी देह सब मनुष्यों को प्रिय लगने लगती है॥ (रस चिन्तामणि ?)

जन्मपत्री पर लिखे श्लोक

श्रीगणेशाय नमः — मङ्गलं भगवान्विष्णुः मंगलं गरुडध्वजः। मंगलं च महेष्वासो मंगलायतनो हरिः॥१॥ उमा गौरी शिवा भद्रा दुर्गा भगवती जया। कल्याणं सम्प्रयच्छन्तु यस्यैषा जन्मपत्रिका॥२॥ न मया हारितं शंकू नक्षत्रं न विलोकितम्। परोपकार वेलायां लिख्यते जन्मपत्रिका॥३॥ अथ शुभसंवत्सरे ... इत्यादि ... लिखे होते॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सर्पविषहरप्रयोग — (20)

(1) मयूरपित्तमादाय तत्कालं चान्तरे क्षिपेत्। मरिचानि
विशोष्याथ चूर्णं सूक्ष्मं च कारयेत्॥ यदि वो चेद्
भवेदंगे दष्टः सर्पो भयंकरः। नासापुटेऽस्य दातव्यं
तच्चूर्णं हि क्षणे क्षणे। अपि कालगृहीतो निबद्धो
निगडैर्युतः। यमो रुष्टः स्वयं चेत्स्यात्तदाऽगच्छ
ति न जहात्॥ (रसचिंतामणि से परीक्षानुभूत)

(2) रीठे के फल की छाल पानी में घोलकर लो

(3) बिच्छू काटे की दवाई — सफेद फिटकरी फूला एक रत्ती लेकर चार बूंद पानी में घोलकर दोनों आंखों में डालने से आराम होता है। जादू का असर होता है।

(4.) सब ज़हर दूर करने का नुस्खा — तूतिया या नीम की निमौली या फूल या छाल या पत्ता हमवजन लेकर कूट पीस चने बराबर गोलियां बनाओ। ज़हर खाने वाले रोगी को एक या दो गोलियां ठंडे पानी या घी से देने से सब विष वमन द्वारा निकल जाते हैं। सांप के काटने पर एक या दो गोली खिलावें और बिच्छू के काटने पर चिलम में रखकर पिलावें। (प्रज्ञानन्द योगी सं- १९०८)

(5) घीकुवार की जड़ पत्ते लाकर बूंटी ले बांध देवें दो नासूर [illegible] जल्द कम हो जावेंगे। मेरा अनुभूत है। (देखो ८४६)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सर्वरोगौषध (२१)

१. मुस्तापर्पटकं ज्वरे, तृषि जलं मृद्भृष्टलोष्टोद्भवं। लाजाश्छर्दिषु, बस्तिजेषु गिरिजं (शिलाजतु), मेहेषु धात्री निशे। पांडौ श्रेष्ठमयोभया निलकफे (पाण्डु, वात, अर्शरोगेषु त्रिफला, हरड़ च), प्लीहामये पिप्पली। संधाने कृमिजा (हड्डी के संधान में लाख), विषेषु शिरीष कतकबीजं मेदोऽनिले गुग्गुलुः ॥१॥

२. वृषो (बांसा) ऽसृपित्ते, कुटजोऽतिसारे, भल्लातकोऽर्शः, सुगरेषु हेम (कृत्रिम विषों में सोना)। स्थूलेषु तार्क्ष्यं (और स्थूलों में रसौत) कृमिषु कृमिघ्नं (बायविडंग), शोषे सुराच्छागपयोऽनुमांसम् ॥२॥

३. अक्ष्यामयेषु त्रिफला, गुडूची वातासृरोगे, मथितं ग्रहण्याम्। कुष्ठेषु सेव्यः खदिरस्य सारः, सर्वेषु रोगेषु शिलाह्वयं च ॥३॥

४. उन्मादं घृतमनवं, शोकं मद्यं, विसंस्मृतीं (मृगी) ब्राह्मी। निद्रानाशं क्षीरं, जयति रसाला प्रतिश्यायम् (पीनस) ॥४॥

५. मांसं कार्श्यं, लशुनः प्रभंजनं, स्तब्धगात्रतां स्वेदः। गुडमंजर्याः खपुरो नस्यां स्कंधांसबाहुरुजम् ॥ (शाल्मली निर्मित नस्य)

६. नवनीतखण्डमौदुम्बरमौक्ष्णं मूलं पयश्च हन्त्युदरम्। नस्यं मूर्द्धविकारान्विद्धिमचिरोत्थमस्रुविस्रावः ॥६॥

७. नस्यं कवलमुखजो, नस्याञ्जनतर्पणानि नेत्ररुजः। वृद्धत्वं क्षीरघृते, मूर्छां शीताम्बु मारुतच्छायाः ॥७॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्त्रीविषहरप्रयोग — (२०)

(1) मयूरपित्तमादाय तत्कालं चान्तरे क्षिपेत् । दारिचापि

(२२)

८. "रसमशुक्तार्द्रकमाला मंदे वन्हौ, श्रमे सुरा स्नानम् ।
दुःखसहत्वे स्थैर्ये व्यायामो (दुःखसहताशीलार्थ), गोक्षुरुर्हितः कृच्छ्रे ॥"

९. "कासे निर्दिग्धिका (कटहली) पार्श्वशूले पुष्करजा जटा (पोहकरमूल की जड़) ।
वयसः स्थापने धात्री त्रिफला, गुग्गुलुर्व्रणे ॥ २८ ॥"

१०. "बस्तिर्वातविकारान् पैत्तान्रेकः कफोद्भवान्वमनम् ।
क्षौद्रं जयति बलासं, सर्पिः पित्तं, समीरणं तैलम् ॥"

११. इत्यग्र्यं यत्प्रोक्तं रोगाणामौषधं शमायालम् ।
तद्देशकालबलतो विकल्पनीयं यथायोगम् ॥"

तथा च — आत्मवंतोऽपि रोगिणः, अनात्मवन्तश्च स्वस्थाः दृश्यन्ते इति किमर्थमायुर्वेदः ? इति

१ "कस्यासिद्धोऽग्नितोयादिः स्वेदस्तंभादि कर्मणि ।
न प्रीणनं कर्षणं वा कस्य क्षीरगवेधुकम् ॥ १ ॥
२ कस्य माषात्मगुप्तादौ (कौंचबीज) वृष्यत्वे नास्ति निश्चयः ।
विण्मूत्रकरणाद्वेषौ कस्य संशयितौ यवे ॥ २ ॥
३. विषं कस्य जरां याति, मंत्रतंत्रविवर्जितम् ।
कः प्राप्तः कल्यतां पथ्याद्वते रोहिणिकादिषु ॥ "

तस्मादस्त्येव आयुर्वेदो विश्वासस्थानं मानितो बृद्ध वाग्भटः

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

खूनका न बंद होना (प्रदर)

(1) सिललड़ी + अंजन हरि की मिट्टी + गेरू इन तीनों को बराबर ले कूट कपड़ छान कर ६ माशे की पुड़िया बनाले। एक २ घंटे बाद एक पुड़िया ठंडे पानी के साथ पिलादे। दो चार पुड़िया में ईश्वरेच्छा से अपूर्व लाभ होगा। इससे नारियों के रक्त का बहना एकदम बंद होगा। मूर्छा हट जायेगी। और उसका पीलापन और अचैतन्य कुपथ्य: तत्काल नष्ट हो जायेगा। (अनुभूत अनेकों पर पोस्टमास्टर कलका)

(2) जिन स्त्रियों को खून जारी हो जाता है और बंद नहीं होता तथा अतिकृश तथा मूर्छित हो जाती हैं चार पाई से उठ नहीं सकतीं। पुरानी पीली ईंट का अत्यन्त महीन चूर्ण कर तीन २ माशे की ६ पोटलीयां बांध एकदम सातोंही योनि में एकदम धारण करो फिर दो घंटे के बाद नई सात। दो घंटे के बाद नई सात। दूसरी बार में ही सर्वथा आराम हो जायगा।

(3) प्रदर तथा फसूल रोग — पक्का अस्वपफल + शक्कर पीस १ तोला खाने ऊपर से दूध पीने। अब श्य सजी होगी

(4) अशोक घृत तथा चंदनादि का व्यदि कषाय लाभदायक है

(5) खोंटी मूल लेकर ६ माशे औटाकर मिश्री मिलाकर पिलाने तो खून एकदम बंद होगा।

(6) चूहे की मींगनी २ माशे दूध के साथ पिलाते हैं (खून बंद करने)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कृमि विषहर प्रयोग — (20)

(28)

मधुमेह (Diabetes) तथा अधिक मूत्ररोग — चिलक 2 तोला जल आधा सेर, पकाकर एक छटांक शेष रहे तो छानकर प्रातः पिलाओ। मधुमेह ठीक (विच का ...) है॥

१ माशा

(यो) अफीम, कुनीन, केसर, कस्तूरी, Silver
2 ½ तोला. 1 ⅛ तो. 1 ⅛ तो., 1 माशा, ~~2 रत्ती~~ 2 रत्ती.

चाँदी के वर्क 50 संख्या, सोने के पत्र 25 सं. / इन सब मूंगरे भी छोटी 500 गोली गिन कर बनावें।

पथ्य — सायं भोजन से पहिले दो गोलियां खाके ऊपर से धुले हुए बादाम 8 कालीमिर्च में घोट बिना मीठा के पिलादें। (लंघन सर्वथा अच्छा है)।

मीठा, Starchy, चावल, दाल आदि सब बंद। सब्जियों में टिंडल, तोरी, कद्दू, दोनों, चने की तरी, चौ की दाल, चने का सब कुछ अच्छा है। दही, पनीर, अधा नमक डाल के खूब यथाशक्ति पीवें। इससे रोग में सर्वथा आराम हो जावेगा। नहीं तो 21 रोज में अवश्य ही। तीन दिन तक कुछ पता न लगेगा चौथे रोज 5% घटकर मूत्र अच्छा हो जावेगा। साल भर में कभी 2 सात दिन के लिये इसे पथ्य से सेवन करते रहें उम्र भर की बीमारी हट जाती है। अधिक मूत्र रोग में 3 दिन में आराम होता है। परन्तु इलाज के पहिले Test अवश्य करावें॥ (नाम ...)

(2) बस ... का रस शहद के साथ अच्छा है। (1 ... को)

(3) पूर्णचन्द्र रस + ... 1 माशा + ...
... Diabetes ... न ...

(4) ... पानी की + ... भाग ...

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(४) [illegible] ईसबगोल की + [illegible]

(४) सूंठ देकर [illegible] — कुमारी + हल्दी चूर्ण [illegible]
दिलादिलाकर दूध हो।

(५) हमीस लागी + ईसबगोल [illegible] समान पीसकर [illegible]
[illegible]

(६) केवल गोखरू [illegible] /

(७) अथवा गोखरू [illegible]

(८) इसपथ्यी दूध चावल, रोटी, खीली /

نسخہ ذیابطیس - یہ دوا کہنہ سے کہنہ ذیابطیس کی بیخ خصوصاً اکسیر ہے اور مقوی باہ
اور امراض بارده رطبہ میں مفید ثابت ہے - صنعتہ - سم الفار سفید ایک
تولہ کھرل میں ڈالکر اول پہر بھر تک تنہا ہی باریک کریں - اور پھر عرق میٹھا
ڈالکر کھرل کریں کہ ۲۰ سیر عرق بذریعہ کھرل اس میں جذب ہو جائے - اور کھرل
میں جب پہلا ڈالا ہوا عرق خشک ہو جائے اس وقت دوبارہ ڈالیں - پھر
ٹکیہ بنا کر خشک کریں - اور ایک میٹھا خوردنی کا وزن قریب ایک سیر
کے ہو - لیں اور اس میں وہ ٹکیہ ڈالدیں - اور منہ بند کر کے گل حکمت
کریں - اور ۲۰ سیر اوپلوں کی آگ دیں - شگفتہ سفید برآمد ہوگا - سرد
ہونیکے بعد نکالیں اور حفاظت سے شیشی میں رکھیں - اسکے استعمال سے اور
بہت فوائد معلوم ہونگے - خوراک چار چاول تک مناسب بدرقہ سے دیں

(९) चन्द्रकला [illegible] (१ [illegible]) १ [illegible]

(१०) सोमरोग में प्रवालभस्म शहद से / [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्वप्नविकार पर प्रयोग — (20)

मधुमेह (Diabetes) (28)

(26)

बवासीर खूनी —

(1) मूलीस्वरस १सेर, कलमीशोरा ५तोला दोनों को कढ़ाई में पका गोली बनाने लायक होने पर जंगली बेर समान गोली बनावे।

पथ्यविधि,— १गोली प्रातः अग्यारिका के साथ ७ दिन तक दो। फिर ७ दिन नागा करादो। फिर ७ दिन दो। फिर नागा करो। फिर ७ दिन दो। २१ दिन में लाभ होगा। १½ पाव

(2) दालमूंग — दाल मसूर, दाल उड़द, दाल चना सब एक २ तोला (मात्रा) माजूफल एक (संख्या) के टुकड़े। इन सबको जर्द आहुती में भाजा कूट के बारीक चूर्ण एक माशे से ३ माशे तक पानी या अर्क बारतंग के साथ रात को खावें। प्रातः केवल दूध पीना चा०। बवासीर को पूर्ण लाभ (हं० ह० वै०)

(3) सुहागा चौकिया भुना हुआ — ... — समान भाग कूटछान कर कन्द स्याह मुनक्का मिलाकर मीठेबदाम रोगन से चिकना के नखूद के बराबर गोलियां बना लें। बवासीर तथा दायमी कब्ज़ को लाभ है। (व० ह० वै०)

(4) खिरनीबीज १तोला बारीक कूटछान कर सफूफ बासी जल से दो तो बवासीर के खून को अकसीर है॥ (जदीद कु०)

(5) मस्से बवासीर के — कुईमुई बीज १ तो०, सुपारी सादी महीन चूर्ण १ तो० दोनों को पीस सफेद खांड मिला के ठंडा पानी से सुबह शाम ३ दिन पीने से ही मस्से गिर जावें। परहेज़ बादी खटाई, मद मुंकी॥

(6) चन्द्रप्रभा कटजा बलेह सर्वोत्तम है तथा मकरध्वज २ रत्ती काला तिल १ तोला, मिश्री १ तोला, बकरी का दूध ... तोला खूब पीसकर मिलाकर दिन में दो बार खावें। पहिला... (गणेश...)

(7) बवासीर (खूनी) नागकेसर (खूनको) ... (तेल से ...)

(8) कुटजावलेह, अभिसार... के ...

(५) कुकरे जाव लेह, अभिष्यन्द औरों के ... ...
आंख का ठेकेक कुकरे के लिये — (२८)

सुहागा खील, फिटकरी खील, नौशादर, ...
१ तोला 1 तोला ६ मासे

कलमी शोरा / इन चारों को पीतल की पतीली में डालकर और
६ माशे

आध सेर पानी डालकर. पीतल के कटोरे से रगड़ना चाहिये
जब पानी खुश्क होजावे और दवाई सर्वथा सूख जावे तो
प्रयुक्त करो। दवाई के सूखने पर कपड़छान लिया जावे। और
दवाई ४० घंटे रगड़ते रहें ॥ (सामान्य) कुकरे, तीजानिह,
आंख का पानी ... में ... (नवकाम करो।

2. धुंध, कुकरे, छोटा फूला —— पठानी लोध, इमली के पत्ते
१ छटांक ½ छ.
नीमपत्र, रसौंत शुद्ध, फिटकरी कच्ची, अफीम खालिस
½ छ. १ रुपया भर १ तोला भर ८ आने भर
इन सबको पीतल के बर्तन में ½ छ. पानी में रात को भिगोदो
प्रातः छान, पानी को लोह पात्र में गाढ़ा करके, चौअन्नी जैसी
एक गोली बना लो। दो गोली १ बोतल गुलाब जल में
डालो घुलने पर दो बूंद आंख दर्द पकने ... तो ८ दिन में ...
(3) ... धार आंख में लगाओ ...
(4) शिरीष या ... की ... ...
(5) मेंहदी (...) पत्र + जीरा सफेद + फिटकरी खील / प्रथम ...
१ तो. १ तो. ३ तोला
मेंहदी पत्र को तीन दिन थोड़े गुलाब जल में भिगा रखें। फिर (...) छानकर
फिटकरी ... ... शीशी में डाल ... , ...
... ...

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(2.8)

दायमी कब्ज़ — (1) सौंफ के चावल ५ तोला, गूदा बीकुर १५ तोला दोनों को मिलाकर गोलियां बनावे । १ गोली, १ रत्ती की हो । १ गोली प्रात : एक शाम खावें । दायमी कब्ज़ रफ़ा होजावेगी ॥

2) रूमीमस्तगी ४ माशा, सफ़ेद शक्कर ६ माशे ठंडे पानी के साथ लिये जाय, प्रात : पखाना आजाता है । (अनुभूत है) (3.१९.ल.मु

आधा सीसी — (1) लहसुन 1 तोला, हींग ... को ... 2 माशा

पीसकर कपड़े से निचोड़ लें। जिधर दर्द हो उधर की नाक में 3 बूंद टपकायें। तुरंत आराम होगा॥

(2) केशर 2 रत्ती, माजू 1 रत्ती पानी में हलकरके माथेपर लेपकरो (ई. 28 ...)

(3) जलेबी पर जाने के पीछे जो घी शेष रह जाता है उस को इस ... की नाक में जिस ओर आधा सीसी हो खूब ज़ोर से अपने से खींचें, फौरन आराम होगा। (अजीत देव. ई. 20)

(4) ... कूनीन की गोली (जो मिलादे) ... कालेरा ... निकलने के पहिले दो घंटा पूर्व 1 गोली ... पानी से खिला दो ... छूट जायगा॥ ... दर्द हो तो ... गोली खिलाओ। सब ... हो ... चाहे आधा ... का हो॥ (बलदेव ...)

(5) श्वेतचन्दन + कपूर + उशीर + ... + गिलेअरमनी (लाल मिट्टी) + ज़हरमोहरा (... पत्थर) सब एक 2 तोला लेकर गुलाबजल में पीसकर सूर्यावर्त में सूर्योदय से दो घंटा पूर्व लेप करो (शेष शंखक आदि में दिनमें एकबार लेपकरके, शीला करते हो और ... लगाते हो॥ यदि घोर पीड़ा हो तो 6 माशा अफीम भी डाल दो। (पिताजी)

(6) आंखें दुखने के साथ कनपटी में घोर पीड़ा होती है कुंकुम + अफीम की काग़ज़ी दोनों ... पर चिपकादो (पिताजी)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(२०)

कढ़राली — कुचले को नींबू के पानीमें पीसलेप करें तो एक रात में आराम हो॥

(२) मिर्जैसार का गौंद पानी में पीसकर लगावे तो फोड़ा तथा बद तुरंत बैठ जाते हैं। (ज़ुबदतुलहिकमत)

(३) दुंबल लगाल — जिसको अरब, आदमें कबौरी कहते हैं, यह गुटका अत्यन्त उपयोगी है। — کندر ،، مغز تخم ،، - [illegible]

दोनोंको मिलाकर और पानीमें पीसकर नीमगर्म लेप करें और ऊपरसे एरंडपत्र बांधदें। अत्यन्त उपयोगी सिद्ध है (१६६६)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(पथरी) अश्मरीरोग —

1. सैंधानमक और कुलथी का क्वाथ पथरी को तोड़ २ निकाल
नं ८,।   २ तोला
देता है॥ (सफेद सरफोंका नं ८,४ डेढ़ पाव पानी में पकावें जब $\frac{1}{2}$ पाव
रह जावे तो ३ बार दिन में पिलावें / ३ दिन तक)

(2) नवसार 10 माशा (नं ८।०), सुहागा १० माशा (नं ८।०)
(शायद १½ माशा हो)
बारीक पीस कर गोदुग्ध में मिलाकर देवें। मूत्रोत्सर्ग करते निकले
पेशाब को बरतन में जमाकर देखे (लेख 23 ९)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ऋतु ठीक न होना —

(१) रेवन्द चीनी एक तोला बारीक करके पीसकर चार पुड़िया एक प्रातः, एक सायं शरबत बजूरी के साथ ऋतु से ३ दिन पूर्व दो। ऋतु के असमता को दूर कर है। ऋतु के दिनों में न दें। यदि कोई कष्ट हो तो अर्क मको, अर्क बादियां, शर्बत बजूरी के साथ दे॥ (ई.ल.मु)

(२) ऋतु बंद हो या ठीक न हो तो लोध्र, मुर्दा परकी, एलुवा तीनों बराबर पीसकर २ तो. पानी में घोलकर रुई उसमें डाल के उस फोहा को योनि में धारण करे। एक रात को लगावे। अगली रात को फिर लगावे तो ठीक हो जाय है॥ (गणेशगिरी अनुभूत)

(३) वीरबहूटी ७ दाने, चावल ११ दाने, शिवलिंगी ६ दाने इन तीनों को एक खौराक समझ ऐसी कितनी खौराकें एक बोतल में भर ऊपर से मुंह बंद करके रेतवार के दिन भूमि में गाड़ो ४० दिन के बाद निकाललो। फिर वीरबहूटी ७ दाने, चावल ११ दाने, शिवलिंगी ६ दाने उसमें से पहले एक खौराक भर निकाल इसको तोल लो। ६ माशे से जितनी कम हो उतना इसबगोल मिलाओ। ६ माशे होने पर एक पुड़िया बना उसे दूध के साथ प्रातः रजधर्मी को दिनदें। सात रोज तक दें तो रज के दूषित दोष दूर हो कर गर्भ अवश्य रहता है॥ (जमना प्रसाद शर्मा)

(३) रत्न गुलाब... ४ तो. पके...

(४) चिरचिटे की जड़ को ... में बांधकर गले में पहनें तो... ठीक ... आवे...

(५) ... पुष्प ... वटी (सरल ... भगवान ...)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रक्तातीसार —

(1) छुहारे की गुठली ३ माशे खूनको बंद कर देती है। (१६ लं.पृ.)

(2) पेचिश व खून आना — थोड़ी बेड़ी बिना
मिठाई फीता खोलानेसे निश्चयसे १ या दो दिनमें आराम
होजायेगा॥ (पृ २४९. देखो)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

२- वाजीकरणानि—

(१) कुचला शुद्ध – नवीन द्राक्षा, बदाम समानभाग लेकर [illegible] चने के समान गोलियां बनाओ। रात को सोते समय खावें तो वाजीकर तथा वल्यु कुशल भी है॥ — (२२५. [illegible])

(२) संखिया सफेद, हड़ताल, शिंगरफ समान भाग अर्क नीबूं में खरल करके मोठ के समान गोलियां बनावें। खाना खाने के बाद १ गोली खावें दूध पीवें। भूख नहीं लगती। (अजमलखां हकीम)
इसे अर्क नीबूं में खरल करने के बाद अर्क [illegible] में भी खरल करें तो भूख न लगने का दोष दूर हो जाता है। ([illegible]) ([illegible])

(३) हलवाह— सफेद संखिया + शुद्ध कस्तूरि + कथ सफेद महुवा को
१ माशा ६ माशा ८ माशा
आधी रत्ती के बराबर गोली गोदुग्ध [illegible] भोजन बाद [illegible]॥ ([illegible])

(४) पारे की गोली— [illegible] धतूरा फल में पारा शुद्ध डाल गोली बांध १ रत्ती तक की उसे पेड़े या पान में रख के खाओ।

(५). धातु विशेष [illegible] औटाकर उसके काढ़े में पारे को छोड़ के फिर गोली बांधके (ज्यादा[illegible]) उसे दूध में डाल गरम किये। दूध में मलाई न आने दो। गोली खुलने पर पीलो। बहुत [illegible]

(६) स्वप्नदोष— त्रिफला + बच + कापूर को (गुड़) [illegible]
१ तो. [illegible] १ तो ½ तो
बांध १ गोली बराबर मात्रा दूध से खिलाओ। [illegible] कब्ज हो। पेशाब कम आवे तो ठंडे पानी से [illegible] या कमर में दिन को [illegible] बांध दो। [illegible] न होयेगा॥

(७) पारा + बंग + सीसा [illegible] भस्म [illegible] बनाके [illegible] [illegible] रस लो। वीर्य [illegible], [illegible]नाशक, [illegible] के लिये [illegible]॥ [illegible] के साथ १ रत्ती [illegible] [illegible]॥ ([illegible] [illegible])

(८) [illegible] [illegible]
[illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(५४)

नासूर — ४ नुस्खे (१) बरी देखने से ३ महीने तक दिन में दस बार लगाइये। ... (२) ...

(१) नासूर — तेल तिल्ली दोनों को खूब मिलाके नासूर में पिचकारी
२ तोला ५ तोला
या गीले कपड़ा लगाने से। (अनुभूत ... ५८८ ...)

(२) पुराने या नये व्रणों के लिये वटवृक्ष का पिचु लगाओ॥ (५८८ ...)

(३) सांप की केंचुली + आंबाहल्दी मठे में पीसकर मलहम बनाले। घाव या नासूर पर लगावें तुरन्त आराम होगा। (कुल ... चिकित्सा)

(४) नासूर — जो कुछ ही दिन में सर्वथा आराम करदेता है चाहे कैसा ही पुराना और बिगड़ा हुआ क्यों न हो अच्छा होता है। रीति — १ फिटकरी सफेद बिरियां ३ तोले, नौशादर देसी ३ तोले, समुद्र-झाग ३ तोले, सुरमा काला ३ तोला, तूतिया १ तोला, गंधक आमलासार ६ माशे, सबको बारीक पीसकर खरल में डाल के हमराह पानी बूटी जंगली गोभी के तीन दिन खरल करके (गोली) बना लें, छाया में खूब सुखाकर दो प्यालों में बंद कर नरम आंच पर रखके जौहर उड़ालें, ऊपर के प्याले को पानी से ठंडा करते जांय। सब जौहर चार घंटे में निकल आयेंगे। फिर उतारकर तोलें, जितना वजन हो उसके समान वजन सफेदे को मिलाकर कुछ दिन ... करके छोड़दें। और जरूरत के समय कपास के फूंवे की बत्ती बनाकर शहद में डुबोकर (...) इस पर दवाई ... को छिड़क कर नासूर में रखदें। फिर चार पहर दूसरी ... चाहिये। इस के वास्ते चन्द ही रोज में पुराने से पुराना नासूर जाता रहता है। निहायत मुजर्रब और जरूर असर है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्लेग —

नीलपत्र सब्ज़ — बनफ़शा — कलौंजी प्यालाभरपानीमें
$\frac{1}{2}$ पाव   २ $\frac{1}{2}$ माशा   १ माशा

घोंटकरदें। हर तीन घंटेके बाद या कम जो ज्यादा। गिलटीपर नीमका मद चढ़ाना चाहिये॥ (प्रयु. ल.गु)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बुखार —

(१) सतगिलोय, बंसलोचन, दालचीनी प्रत्येक ४ माशे। बनात १ तोला, चार पुड़ियां बनावें। एक पुड़िया रोज़ जलके साथ खावें, बुखार को रोक देगा। (१२६ पृ. ल. गु.)

(२) खूबकलां ६ माशा, शर्बत नीलोफर दो तोला पानी में जोश दें। आधा रहने पर बिना छना प्रयोग करें। (१२४ पृ. ल. गु.)

(३) जंगली केले के पत्ते आधसेर मिश्री स्याह २ तोला, चने के बराबर गोली बना। पुराने बुखार के लिये॥

(४) बकरी हड़ताल को गुलसीरस की २१ भावना देकर मोठे में कपड़ मिट्टी करके कड़ाही में या गजपुट में फूके, सफेद भस्म होगी। इसकी जवान आदमी को १ रत्ती की खोराक देने से शीतज्वर मलेरिया ज्वर रह नहीं सकता।

इसी को नीबू की शिकंजबी में डाल के या मिश्री में मिला डाल शर्बत बनाकर बेचा जावे तो अति लाभकर तथा गुणप्रद हो। १ औंस की शीशी में शिकंजबी [illegible] मर उसमें १ रत्ती भस्म डालकर हिलादो। यह चार खोराक हुई। तीन घंटे के बाद दो। मलेरिया को चौपाई॥ (गोपाल एम.) हल्द्वानी वैद्य [illegible]

(५) अर्कमूल छाल + नागफनी का गूदा दोनों सम भाग पीस कर बना गोली। (ठंडे पानी से दो, मलेरिया आदि में से (रेशा न आवे सिर्फ गूदा ही गूदा हो)) (पं. पदमसिंह जी)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पसलीकादर्द —

(१) पीले अर्कपत्र पर तेल चुपड़ गर्मकर ऊपर सोंठ बुरककर बांधे ऊपर और अर्कपत्रोंसे ढककरके बांधो। ५ मिनट मेंआरामहोगा। (गणेशगिरि)

(२) बच्चों कीपसलीकादर्द —

१. बूरनिया १माशा } इनकी गोली बाजरेकेसमानबनावे
२. रीठा २माशा } घिसकर पिलावो, दस्त, वमनहोके आरामहो जावेगा। और वमन होनेके बाद यह दवाई अन्तमें देनी चाहिये॥

(३) रीठा का छिलका १ खसखस भर मातादूधमें देते हो (बच्चेको) ५ मिनटमें आरामहो। (नेष्ठा) अधिकतरीहातो दिनमें देना।

(४) सन्दुकी की मछली १ को घिसे मादूध में और दो तो दे। आराम हो। (नेष्ठा) {पं. बलदेवराम जी मीणा नेष्ठा अटारी}

(५) [illegible] — जलतीत + रसौत + [illegible] पानी के
१तो. १तो. १तोला
साथ गोलियां बनाले एक (...) १रत्ति की। आधे पानी के साथ प्रातः, दोपहर तथा सायंकाल प्रयुक्त करावें (...) बच्चे को आधी गोली माताके दूध में घिसकर प्रातः सायं देते हैं। (जमालकोट ...)

(६) [illegible] शहद में मिलाकर पसलीपर चिपका दे [illegible] आराम [illegible] बन्द होगी। (लालचन्द...)

[illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गठिया आमवात —

(१) कुड़ा की छाल कूटके बकरी के दूध के साथ पीओ ॥

(२) सोंठ का चूर्ण कांजी के स. प. दिन में ३, ४ बार फंकाओ।

(१) पक्षाघातपर तैल — शिंगरफ २ तो. + आकके फूलों की कली २ तो. + कुचला १ तो. + कालेधतूरे के बीज १ तो. + अफ़ीम ३ माशे + गोला १ तोला। इन सबको एकत्र बारीक कूटपीस कर एक सेर तिलके तेलमें मिलाकर यथाविधि तैल को सिद्ध करे। इस तैलको लगाने से पक्षाघातमें विशेष लाभ होता है। वैद्य ३२४ द. चर्ण ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पेटशूल –

1. तात्कालिक (तथा आकस्मिक) निवृत्ति के लिये सोडा बहुत अच्छा है।
2. चक्रदत्त के शूलाधिकार का नारिकेललवण अव्यर्थ है।
3. महाशंखवटी (जेन्डू) की अच्छी है।
4.

ग. ओ.

आतशक का मल्हम (वैद्यकाली चरणी)

पारद, गंधक आमलासार, जस्त, मुर्दाशंख, कत्था सेलखड़ी, कौड़ी जारित, सुपारी जारित, ऑतके तिके बेल (या कन) जारित, कमीला, प्रत्येक द्रव्य सम भाग लें। घी में सोते [illegible] मिलाकर लगावें तो आतशक के घाव फोड़े फुंसी आदि को अवश्य नष्ट करता है।

अनेक शत अनुभूत

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नपुंसक —

वृहल्लिंगा मलावचन कारणकी देखो तथा वृहत्कामदेव मदनको पचादि दोनों के द्वारा मालि चढ़ेगा ॥

۲. حبوب دافع جریان و سرعت انزال نزلہ اور قوت باہ اور امساک کی قوت
بیحد مؤثر ہے۔ کچلہ ۱۰ درم۔ شیر گاؤ دو سیر میں جوش دیکر چھلکا
دور کر کے صاف کریں۔ فلفل گرد ۵ درم۔ دار فلفل ۵ درم ملا کر گولیاں
باندھیں ۔ اور گولی بقدر نخود ہو۔ خوراک ایک گولی صبح اور ایک شام ہمراہ شیر
گنجینہ طب ۱۸۵

جلوق کے واسطے مفید ہے۔ ناہمواری کو درست کر دیتا ہے۔ جونک جو عفونت
خریدہ چسپاں کی گئی ہوں اور خوب سیر ہونے کے بعد اُتاری گئی ہوں۔ مگر خر
جوان سیاہ رنگ اور خوب قوی ہو۔ اُن جونکوں کو سایہ میں خشک کریں
بسباسہ۔ لونگ ۔ جوز بوا۔ حبہ بید ستر۔ چربی سگوہ ۔ چربی شیر ۔
چربی شہیر گ ۔ ہر ایک مساوی الوزن خوب کھرل کر کے گولیاں بنائیں اور استعمال
عنبر کے ذریعے سے روغن کشید کریں ۔ (گنجینہ ۱۸۶)

بیحد مقوی بدن ۔ باہ۔ اعضائے رئیسہ ۔ دافع سرعت ۔ رقت جریان ۔
حرودین کی واسطے از بس مفید ہے بلکہ کیمیا صفت ہے۔ مروارید ناسفتہ ۔
طباشیر۔ بنسلوچن۔ زہر مہرہ خطائی ہر ایک تولہ جدا جدا باریک کر کے کھرل
میں عرق بید مشک کے ہمراہ اس قدر کھرل کریں کہ خمیر اُٹھ آوے۔ اور دوا
اس قدر غلیظ ہو جاوے کہ دستہ نہ چل سکے ۔ تب نخودکے برابر گولیاں باندھلیں
خوراک ایک سے تین گولی تک روز صبح کو گلاب اور بید مشک کے ساتھ دیں۔ اور رات کو
روغن تخم کدو۔ روغن بادام شیریں۔ ہمراہ دونوں پاؤں کی ہتھیلیوں اور ہاتھوں کی ہتھیلیوں

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दर्द गुर्दा (See Page 143) (४२)

८ लालमिर्च, ८ पीपली, २४ लौंग, गुड़ [दो दाने लेने की विधि]
गोली मटर बराबर बना १ गोली प्रात: एक वक्त
गर्म पानी से खाओ। ७ दिन खाने से उम्रभर न होगी

(२) यदि पेट में अफारा हो तथा [illegible] आदि से दर्द हो तो दारुहल्दी, बच, कूठ, सौंफ, हींग, सेंधा नमक इन को कांजी में पीस पेट पर लेप करे तो आराम हो। (चिकि. चन्द्र १०८)

(३) अपानवायु, मलमूत्र रुका हो तो उपरोक्त औषधि में एक अंगुल मोटे कपड़े की बत्ती पर लगा, घी तेल आदि से चिकनी कर गुदा में डालो। [illegible] के [illegible] भी बाहिर आता है। डाक्टर लोग Glycerine आदि की बत्ती का प्रयोग करते हैं। (चि. च. १११)

(३) पीपल, पिपलामूल, अजवायन, बच इन सब को जल के [illegible] पीस कपड़े पर लेप कर [illegible] गुदा पर रखे तो दस्त होगा। (चि. च. ११२)

चौ. दस्त [illegible] के लिये —

(१) बूटी हिरनखुरी तोला, ६ काली मिर्च पानी के साथ पीसकर पीने से [illegible]

(२) अलूचा मंडी — बुखार [illegible] - [illegible] - एक २ माशा, [illegible] - आधा माशा का चूर्ण करके [illegible] शरबत बजूरी [illegible] २ तो. बनफ्शा, मा. १ तो. तुख्म खयारैन, मा. १ तो. [illegible] या शीरा तुख्म खरबूजा के।

(३) कलमी शोरा ५ तोला, आमलासार गंधक ३ माशे, नौशादर ३ माशे [illegible] २ माशे [illegible]

[illegible]

[illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible]

(४३)

नाक हे [illegible] नकसीर —

(1) गधे की ताजी विष्ठा + कानल मुश्क काफूर निकाल सुंघा देने ही बंद होगा। लीलाजी ॥

(2) श्वेत दूर्वा + अनार की कली कागज मिलाकर के दो बूंद नाक में डाले हे अवश्य बंद हो ॥

सूखा करा रखने रोग पारे की गोली (वै. का. च. दि)

शुद्ध पारा ५ तोले (दही का पानी निकाल कर) पनीर ५ तो. रगड़ें ५, ६ दिन तक। फिर बहेड़े का चूर्ण ५ माशे कपड़छान चूर्ण ले थोड़ा २ डालकर घोटे। एक जान होने पर पोले हाथ से गोला बना ले। इसे पत[illegible] ले[illegible] कपड़े में लपेट कर उबलते दूध में ३ दिन [illegible] पनीर गौ या भैंस के दूध का हो। १ छटांक हि[illegible] [illegible] रस में २ छटांक पनीर डाल ५, ६ दिन घो[illegible] घोटते रहें। बहेड़े की छिलके ५ माशे मात्रा का[illegible] रखें। घोटते २ कभी मिल जायेगा कभी पृथक २ हो जायेगा। अक्षत्वक ५, ६ दिन बाद डालते ही बंध जायेगा। किन्तु उसे दबायें नहीं। दूध में दो ३ वार पकाते ही यह कठोर हो जायेगा। पहले २, ३ दिन का दूध फेंक दें। १ छटांक का गोला काफी है। इसके दाम ५) १०) से कम नहीं होने चाहिये ॥

लपकावे। उस दूध को फेंक दिया करें। चौथे दिन से कपड़ा अलग कर दें। यह कड़ा गोला बन जायेगा। इसमें [illegible] [illegible] पिलावे [illegible] [illegible]

दिया करें। पकने पर [illegible] [illegible] [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रसूतरोग

(१) १ माशे लोबान का सत और दो रत्ती कस्तूरी मिला कर ७ गोली बांधे १ गोली नित निहारमुंह खावे॥ [illegible]

(२) बीरबहूटियों को पकड़ कर १ डिबिया में बंद करदे और उसमें चावल डालदे। महीने दो महीने रहने दे। जब बीरबहूटी मर जावें, तब उन चावलों में से एक चावल नित खालिया करे। [illegible]

(३) गर्भवती स्त्री धाऊं धवका लवङ्गादि चूर्ण सदा खाती रहे तो कोई रोग न आवेगा। (धाऊं धवका)

बालक शीघ्र पैदा करना —

1. कण्टकारी मूल, अतीसी मूल और पाढलकी जड़ इनमें कोई [illegible] या सबको नीले कपड़े की लीर में ऐसा बांधे कि कुछ दीखती रहे। गर्भवती की सांथलों और बाजुओं पर कस के बांध देवे।

2. अथवा चौपहर सुपारी लेके स्त्री के दोनों सांथलों के जोर से चुभोवे या बांधकर गुदगुदी चलावे।

3. अभिमन्यु, अर्जुन बीज के नाम कांसी या पीतल की थाली पर (चांदी) लिखकर स्त्री को धोकर पिलावे। और चक्रव्यूह बनाके निकालकर खावे।

4. अथवा इस यन्त्र को लिखकर दिखावे। बालक शीघ्र जनमेगा।

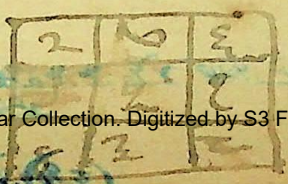

२	७	६
[illegible]	५	१
[illegible]	३	[illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(४५)

पेटमें बालक मरगया हो तो निकालना

(१) छटांकभर गौका गोबर डेढ़पाव पानीमें घोलकर पिलादे। (२) अथवा कालेसांप की कांचली की धूनी अंगके भीतर देवे। तुरन्त बालक हो पड़ेगा। यदि कुछदेर लगजावे तो शंकासे करवाले॥ [illegible]

(२) कृष्णसर्पकिञ्चुक को अन्तर्धूम भस्मकरलेवो, गर्भवतीके दोनों आंखों में सलाईसे धरदेवे। इससे तुरन्त बच्चा बाहिर आजावेगा। चाहे मृत गर्भ ही क्यों न हो। नाहीं अकेले दा: घी लगाकर हाथसे अन्दरवाले पानी बाहिर लेवे। (धात्री)

(३) यदि बच्चा पेटमें मरगया हो तो पालककी जड़ अथवा शालपर्णी की जड़ अथवा दोनों समभाग लेकर की गोली योनि, पेडू, गुदा, पैरोंकी तलियों पर लेप करदे फिर मृतक गर्भ को भी योनिसे खींचकर बाहिर करलेगा। (धात्री)

(४) मस्तकपर थोड़ासा खून निकाल उसमें तुरन्त ४,५ बूंद थोहरका दूध लगानेसे शीघ्र बालक स्वयं भी बाहिर आजाये। (धात्री)

(५) गाजरके बीज १¼ तोला + मुनक्कामूलक २ तोले, फिटकरी ८ माशे, लोटाबज्जी १ तो० + सिंदूर ८ माशे, सबको खरलमें पीस १० तोले पानी मिला पिलावे। चाहे मरा हो चाहे जीता हो तुरन्त बाहिर आवेगा। (धात्री)

(६) चिंदालडोडा के १ तोले चूर्णको पानीमें पीसकर पिलानेसे गर्भ उसीसमय गिरपड़ेगा। (धात्री)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

Gonorrhea —

(१) गोंद कीकर को ~~पानी में घोल~~ कपड़छान करके पानी में घोल बोतल में भरके सुज़ाक को १ आठ दिन में ३ बार देने से आराम हो जाता है। (दक्ष [illegible])

(२) गन्ने को पानी मारे ~~[illegible]~~ [illegible] के [illegible] छ में दिन के पाठ ६ पानी पाके चीन [illegible] लेवे।
इसे अधिक [illegible] प्रयोग [illegible] रोग के [illegible] के लिये प्रयोग [illegible] (सुजाक)

(۳) نسخہ سوزاک ہر قسم کا بفضل خدا ہفتہ عشرہ میں صحت پذیر ہو جاتا ہے۔ صفت
مگر سنگرا اسپغول بریاں ایک چھٹانک۔ کباب چینی آدھ پاؤ۔ طباشیر کبود
ایک تولہ۔ الائچی خورد ایک تولہ۔ ست بہروزہ ایک تولہ۔ سب کی
میدہ ۵ کر کی ہمراہ عرق گلاب یا صندل کی بقدر ایک تولہ بوقت صبح استعمال
فرمادیں۔ غذا نان گندم بے نمک یا روغن زرد۔ اگر ۱۰ سالہ ہو تو انشاء اللہ تعالیٰ
صحت ہوگی۔ (گنجینہ طب ۱۴۲)

(१) सुज़ाक पिचकारी — त्रिफला ½ पाव + २ पाव पानी में रात को भिगोकर छान प्रातः बोतल में डालें। फिर लौंग + सुपेदा + काफूर + [illegible] + दम्मुल अखवैन + नीलकलावती + सियाल कोटी कागज़ की राख। इसमें स्त्री या नारी मूत्रेन्द्रिय में पिचकारी करें। ज़ख्म शान्ति करने वाली है।
(सिरकारी हकीम)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आतशक — { रसकपूर की गोली बनाकर खाने से मुंह आदि नहीं आते। }

१ तोला चांदी powder (मिल सकता हो), १ रसकपूर १ माशा

दोनों को उत्तम [illegible] के संपुट में रख कर मंदी आंच से कपड़मिट्टी करके रखते जाओ। इसके बाद जो धुआं हो वह पारद बन जावेगा। उसे नीचे बचे को फिर [illegible] उड़ावो। फिर तीसरी बार उड़ावो। फिर तीन बार के बाद चौथी बार [illegible] करके बोतल में डाल दो। ½ से १ तोला मलाई में [illegible] दो। घी ज्यादा खिलाओ। [illegible] काफी है॥

(१) जख्मों पर कड़वा तेल चुपड़ कर मेंहदी बुरका दो। [illegible] आतशक के [illegible] दूर हो जाते हैं। [illegible]

(१) आतशक जखम चाहे कैसे ही गला सड़ा हो बदबू आती हो आराम होगा — पारा शुद्ध + जंगार + शिंगरफ + हड़ताल + मुर्दासंग + राल + [illegible] + [illegible] + [illegible] प्रत्येक चार माशा + घी १५ तोला [illegible] मिलाकर मरहम बनाओ।

(२) आक की जड़ का छोपला कर + कन्द + घी [illegible] मिलाकर ४ माशे से ८ माशे तक खाओ रोज। घावों पर घी लगाओ। [illegible] रोटी घी से खाओ। १००० [illegible] दो तिहाई के [illegible] दूर हो जावेंगे। [illegible]॥

आतशक (आक) [illegible] है। [illegible] है।

(३) बड़े पीपल [illegible] भस्म (अलसी) करके दिन दिन भस्म के दुगना मुर्दासंग मिला बारीक पीस कर १½ माशा तक [illegible] पानी [illegible] को चबाकर निगल जाओ। १५ दिन में [illegible] दूर हो जावेंगे। [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रसूत सुगमता से हो —

(1) अपामार्ग पंचांग + कालीमिर्च दोनों सम भाग लेकर बारीक कर लो उसमें १ पाव [illegible] को लेकर [illegible] पानी में घोले से निकले पर पानी लेकर छान कर पानी घंटे [illegible] पहिले प्रसूत होने से पिलाओ। सुगमता से बच्चा होगा।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(३०)

(४८)

लिंग वर्द्धनार्थ — तिलादि

(1) अमलतास के बड़े वृक्ष की जड़ की छाल और भंगरे के चूर्ण के रस में पीसकर गोली बनाय छाया में सुखाले। फिर इन गोलियों को अपने मूत्र में घिसकर लिंग पर लेप करे तो उपस्थ लंबा, स्थूल तथा कठिन होगा। (चिकित्सांजन) विद्यापति लिखित

(2) असगंध, कूठ, चिरचिटा, गजपीपल इनका चूर्ण करके भैंस के घी के साथ मिलाय कर उबटन करे तो लिंग अति स्थूल हो (चिकित्सांजन)

(3) मूलगंध, गजपीपल, हल्दी, पारा, अफीम, बकायन धतूरे बीज, जायफल सब बराबर २ चूर्ण किये। घी में मिला लिंग लेप करे, शिथिलता दूर होगी।

(4) स्त्री में सुस्ती हो तो तिला — पट्टी - पारा २ माशा + गंधक २ माशा + हड़ताल ३ माशा + हिंगुल ३ माशा + जमालगोटा २ माशा + खिरनी का बीज २ माशा। इनको खरल में डाल खूब घोटना। खूब घोटने के बाद इन्हें ताम्बूल पर लगा के पट्टी बांधना और कपड़े से बांधना। फुंसी हो के पानी बहके निकल जावेगा। बाद साफ हो जावेगा। अधिक फूले तो मक्खन लगाने से साफ होता है॥

(5) जायफल + जावित्री + जोंक + मत्स्यपित्त + केंचुवा + इसबगोल इनको तेल में स्थापन करले। इन्द्रिय दोषों को ठीक करता है (उपनिषद् [illegible])

(6) ऊंटकटारे की जड़ मुंह में चबाकर लार को इन्द्रिय के आगे लगावे बाद १५, २० मिनट तक संभवतः [illegible] होगा / (पी. लिख [illegible])

नपुंसकता (५०)

(१) ५० साल की तागदी भी दूर हो — सफेद घुंघची दो छटांक + (...) ... कनेर सफेद दोपैताभर सबको कूटछानकर चारसेर दूध औंटके जोशदे जबदूध दूधमें मलाई पड़ने लगे, और ये पूर्व होजावे। नीचे उतारकर जमादे प्रात: इसका रोगन निकालकर शीशी में रखें। इसको कुछ फोहा लेकर इन्द्रिय पर तिलारे (ऊपर से बंगला पान सेंककर बांधे। कपड़े की पट्टी ऊपर बांधे। यह काम १४ दिन तक करें। और एक सींक पान में लगाकर खाया करें यदि नामर्द ५० साल भी होगा तो मर्द बनजायेगा। अतिउत्तम है, केला नहीं करता। आज़माया (हकीम खूबचन्द गुप्त कुलहम्य) ...

(२) स्तम्भनार्थ — इसबगोल + सिलाजीत + मिश्री एक २ मात्रा लेकर बारीक चूर्ण करके ६ मासे लेकर डेढ़ पाव दूध से खावे। इसका नाम कामिनी कलोल है। लाभ करती है।

(३) केले की जड़ कमर से बांधे तो सुखते लगा है। आज़माया। (...)

(४) (...) दो तोले पीपल १ सेर दूध में पकावे दूध जल जावे तो छाया में सुखालो पीस समभाग खांड मिलाकर १ ¼ तोला प्रात: गोदुग्ध से खावो। धीरे २ बढ़ावो। पथ्य से १ सप्ताह में ही ताकत मालूम होगी। (देखो ...)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(५१)

स्तंभन —— वाजीकरणं च

(१)
शुक्रस्तम्भनी बत्ती —— अहिफेन की बत्ती करके लिंग के छिद्र में रखने से वीर्य रुक जाता है। (चिकित्सांजन)

(२) गोखरू, तालमखाना, असगंध, शतावर, सफेद मूसली, सेमलफूल, भांगरी, सोंठ, कौंचबीज, खरैंटी, लजूड़ा, मोचरस। सबका समभाग चूर्ण कर शहद + खांड से चाट ऊपर से दूध पीवे तो वीर्य बढ़े। (चिकित्सांजन)

(३) मैंसिल, सुहागा, कूठ, इलायची, मालती पत्र इन सब को पीस कुचल कर तिल तेल में डालकर तेल सोधकर और उसको उपस्थ लेपन करने से शिथिल लिंग को दृढ़ करता है। (चि०)

(४) केशर, [illegible], जायफल, खुरासानी अजवायन, [illegible], मस्तगी, कौंच, लवंग, तालमखाना, तुख्म बीज, वज (वच) तमालपत्र सब बराबर ले। चौथाई भाग सब का अफीम ले। फिर इन की भांग में घोट कर एक २ माशे की गोली बनावे। एक रोज़ खावे तो इससे स्तम्भन धातु वृद्धि हो। (चिकित्सांजन)

(५) सफेद मूसली, सेमल के मूल दोनों को बराबर लेकर बारीक चूर्ण करे। आठ माशा भर चूर्ण को शहद + मिश्री से खावे और ऊपर से दूध पीवे तो धातु पुष्ट हो।

(६) [illegible] दूध में शहद और दालचीनी डालकर पीने (चिकित्सा) इससे इतना वीर्य बढ़ता है कि बताने वाली है, दो० [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(५२) तिल्ली जिगर

(1) घीकुआर का ताज़ा गूदा ५ तोले + उत्तम छना हुआ शहद ५ तो० मिट्टी के पात्र में बंद कर ३० दिन रखो। (कतक फल डाल दिया करे) बाद छानकर फिर बोतल में रखलो। रंग ज़र्द होगा (पुराना होने से) लाल रंग होगा। मात्रा ६ माशे से १ तोला तक। पुरानी का गुण बहुत अधिक होगा। इससे ज्वर, कब्ज़, हृदरोग, बढ़ी तिल्ली, खांसी, मन्दाग्नि, दमा आदि गुणदायक है। जिसे मासिक धर्म ठीक न हो; वह पहिले ३ माशे दालचीनी चूर्ण शहद से चाटे ऊपर यथानियम ४ दिन दवा की मात्रा पी जावे। मासिक धर्म से तीन दिन पहिले और तीन दिन पीछे तो सब शिकायत दूर होंगी॥ (ह० ...)

(2) मगनेशिया + कुनीन + खटाणा खील + कलीनजब्बा + पीत कौड़ी भस्म + सबको पीस बोतल में डाल नीबू रस भरके बोतल भरदें। ६ माशे सुबह ही, ६ माशे शाम पिलादो॥
१० तो॰ 1 तो॰ 1 तो॰ 1 तो॰ १० तोला

(बलदेव ...)

(५३)

संग्रहणी— निवारणचन्द्र जी के नुसखे

१. रात सफेद को आमसीर की ६ मासा दे कर प्रयोग करे। संग्रणी, गदर, क्षातीसार बंद होगा। (निवारणचंद्र महाचार्य)

२. भिलावाँ + सुपारी दग्ध करके मट्ठे के साथ देवे आराम होगा। (निवारणचन्द्र)

3. पद्दधिपद्रव्य —— कुटकी, कालाजीरा, अमलतास, चूहेकी मींगन, दारूहल्दी, पांचोनमक, हींग रूई। नाभि पर ऊपर दर्दानुसार इन्हें पीसकर गोमूत्र वा पानी से लेप करे तो दर्द बंद होगी। (निवारण)

४. छोटी कटेरी के बीज + अकरकरहा, शोधित विधारा बीज, धूपगंध, समभाग लेकर √चौगुने दूध में पकावे। मावा बनावे। चाशनी डाले। चांदी सोने के वर्क॥ २ तोले का नाश्ता, भोजन पौष्टिक खावे, १ मास ब्रह्मचारी रहे। मदनानंद मोदक (निवारण)

५. चूना अनबुझा + तिल काले + बकायन बीज ना पक्व चूर्ण शत धौत मक्खन में या अन्य में लेप करे। कैसा ही दाद हो (निवारण) दाद १ तोला

६. दन्तीबच्ची (५५) तोला दाम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(५४) बालकों की काली खांसी

(1) बच्चे को भेड़ों के रेवड़ में रखें, एक ही दिन में काली खांसी भाग जायेगी। टहल्के [?] · ६११ भी देखो।
(लोग इसे ४० दिन में जाना मानते हैं)

(2) काली खांसी में पहिले कफ न निकले तो श्री चन्द्रामृत के चूर्ण को देते रहो। दो चार दिन बाद कफ निकलने पर ओ [?] मकरध्वज + कण्टकारी चूर्ण दो, अवश्य आराम होगा।
(प. प. मिश्रा)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्रीसीता राम रावलपिण्डी के हकीम के नुस्खे ———

(१) शुद्ध गुग्गुल १ छटा० + ८ तोला लोहा + ८ तो. शिलाजी…
चने बराबर गोली। आदि सब रोग पर ॥ लोते

(२) आरण्योपल का पातालयंत्र से तेल कुष्ठ हर। (लो…

(३) आरण्योपल भस्म २ तो + मिर्च १ तोला + तुलसी रस से
चने बराबर गोली बनावो। गर्मपानी आदि से सब रोगों पर
अनुपान ॥ लोते।

(४) कब्ज दूर — एलुवा, मगनेशिया, सालट, सनाय
सौंफ, हरड़ —————— . . . — — ——
पीसकर रखो गोली बना गर्मपानी से रात को खाओ प्रातः
१ दस्त आवेगा ॥ लोते ———
——————————

१ रक्तमल दूर करना — आधा सेर फिटकरी लेकर पानी में
पकावैं। जब यह स्फटिक हो जावे तो जहां डालें वहां से रक्तमल
दूर होवें। (देखो ५६२)

२. तिल्ली दूर करना — ऊपर पसली की तरफ हाथ से तिल्ली में
चक्कर हाथ से रोके हैं फिर बायें ओर से पेट मलता है जो देह
दहिनालाने मेंही दिखा है। पालते जाते सब रोग एसा दें (कुछ
दिनों में पता न मिलेगा। (देखो ५१०)

Hair oil — (५६)

इसके ६ मास के प्रयोग से बाल काले होजाते हैं और फिर
कभी सफेद नहीं होते। नुसखा यह है—

चंदन सफेद १ पाव, बालछड़ ४ तोला, छड़ीला, लौंग, अगर
प्रत्येक ४ तोला, अंबर १ माशा, मुश्क १ माशा, ,,
अबद १ तोला, असगंध ६ तोला + कपूर ६ माशा,
मौलसरी के फूल १ पाव, नागरमोथा १० तोला, कपूर-
कचरी ५ तोला, सबको मिलाकर तेल तिल दो सेर में
डालकर धूप में रक्खें। या नरम आंच दें, जब सुगंधि आ
जावे तो तेल को निकाल लेवे और अंबर और मुश्क
पीछे से मिला देवें, अगर तेल का रंग सुर्ख करना हो तो
रतनजोत मिलावें। (मल्लानाजोगी १-१-१९१८)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

साधु दत्त राम जी लाहौर के नुसखे
कोई Hydrochloric Acid की ही बूंद डालते हैं।

(1) अजवायन सत ६ माशा + कापूर १ तोला + Acqua Amonia। ऑंस (५ तो.) मिलाके अमृतधारा बनाओ (रतनजोत डाल दिया करो)

(2)
अनबुझा चूना ½ तो + पानी ४ तो रात भर घोल मिलाके रख छोड़ो। प्रातः पानी साफ़ निथारकर बोतल में भर लो ऊपर से २० नींबू का अर्क निचोड़ दो। बस बन गया। १० माशे की एक मात्रा। ऐसी दिन में चार मात्रायें पिलाया करते हो। सब ज्वर, पर्याय ज्वर, चौथिया ज्वर, अजीर्णादि, तपेदिक नाश हो।

(3) गेरु माटी + गंधक का तेजाब डाल भिगो दो। ठंड हल्के से ठोक तवे पर रखकर गरम करो। तेजाब उड़ जाने पर शेष गेरु की दो रत्ती मात्रा, ज्वर वाले को दो ज्वर दूर हो॥

(4) सब पुष्पादि बंद हों यदि माजूफल की पोटली रख दी जावे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्वित्र कोढ (५८)

(1) बावची + आमलासार + (गन्धक शुद्ध) एक एक माशा। इन तीनों को, पीसकर रात में पावभर पानी में भिगोदें। प्रातः उठकर पानी ऊपरसे निखार लें और ... अलग करलें। अब निखरा हुआ पानी मरीज को पिलावें और ... दागों पर लगावें। (एक लड़की आधी सफेद बदन होगया था केवल १ साल इलाज करने से सब दाग दूर होकर नया शरीर निकल आया। (जामा अखबार ... 8 थाइसिल्का 2328८ / ...

(2) गंधक रसायन (रोग कुष्ठ चर्म रोग)

पत्नी का नुसखा (गर्भ स्थापक)

सुपारी
हड़छोटी
माजूफल
गुलधावा
बिलगूदा
गोंद लाल (लाख)
शतावरी
सोंठ
लोध
कमलकेसर
वाराहीकंद
गोंद
छाले

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्री मंगलदेव जी न तनीक गुरुकुल कांगड़ी

(1) सफेद रत्ति न संखिये चारों (बाजितनेमिलें) दोना समानभाग ले। गोमूत्र में पहिले रत्तियाँ दो ता अलग दाल निकाल रात को गोमूत्र में भिगा दे (थोड़े में) फिर प्रातः उसी गोमूत्र में रत्तियों के छिल्ल तथा उसके बाहर संखिये चारों डाल कर लेकर १ दिन के बाद एक रत्ती की गोली बनावे। जहां तिमकारे सब दुख डालते है (बराबर ०) साफ़ करके (यदि कात नहीं तो, नहीं तो नहीं) फिर पछ लगावे, फूलाविका लेकर धोदेवे। फिर गोली जल के पानी में घिस के सारी गोली काही लगवा देवे। यदि गला खुश्क हो जाये तो इसी गोली को पीसकर हलवे में मिला गले पर बांधदेवे।

सिर्फ इतने से ही आराम होगा। प्रोफ़ुल

(२) रीठे का छिलका चबा तजाये जबतक कड़वा न लगे। श्री

(३) रीठे का दाना जीवना यदि सांपवाले पर डाला जाये तो सांपदर दिखजाते है।

म्हा०

(४) बच के टीठे के पानी में कोई कपड़ा भिगो कर बिस्तर पर रखने तो पिस्सू भी नहीं आता। (अनुभूत)
(पकड़ने से वही को रहे (मिलता है)।)

(५) (अनुभूत) तम्बाकू का टीका मैल + चुलके की टद्ध का मैल + टीके की पुन्द छी मिट्टि। (इमली नाँ कोज एक
इन सबको बराबर पीस कर एक रत्ती की गोली बनावे। जहां सांप काटे (वहां पछना लगा, खून निकाल) उस पर लगावे। और अगर सांप के मुंह में जरा सी पिस कर डाल दे तो तत्काल सांप मर जावे।

इसी को बिच्छु काटे पर लगावे तो तुरंत आराम हो जावे॥
(अनुभूत) मंगल देव जी है डा. जियालाल वैद्य अलवर की अनुभव भी है।

(६) वह बूटी शब्द { खुरासानी इ.पी. कलकत्ता का देता है। जिस सांप को पकड़े नहीं जाता है ढबके जिस तरह और, फिर कब आदमी मारते है। वही कुचला नहीं है। }
काली निर्विषी लोग कहते हैं। (निर्विषपद

(७) नागरमोथा की ७, ? ऊपर लेवे नाला मंगा लेवें खा लेवे तो भूख और प्यास दोनों तक था ... तक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दस्त के चट — श्री पं० मंगलदेव जी भगवतीकद्वारा

(1) संभालु (नीलपुष्प वाला) की कोंपल १ तोला + नमक (स्वाद के लिये), आधी संख्या पीपली + काली मिर्च १ संख्या (इन सबकी जंगली बेर के समान गोली बनाके गरम पानी से देवे। दस्त आंव के दोनों बंद होंगे। हैं बेचारे लोग (अनुभूत) मंगलदेव जी।

× सुजाक अनुभूत (पीप, खून लगने तथा जलन दूर करने के)

(1) कलमी शोरा १ तो. + जीरा सफेद १ तो. + इलायची छोटी १ तो. + कत्था सफेद १ तो. + जीरा १ तो. (हिन्दी) + सदचीनी १ तो. + पक्का (शुद्ध) बिरोजा १ तोला + वंशलोचन १ तो. । इनको चूर्ण करे। इसमें से ६ माशे कच्ची लस्सी से दें १ पाव या २ पा. दिन में दें। (सलोने १४ दिन), गरमी में दो बार ॥ फक्त नहीं। १०, १२ दिन में दूर होगा।

---

(2) लघुबूटी (जंगली, कलीबूटी) चौलाई २½ तो. इसे पानी में पीस कर प्रतिदिन प्रातः पीवे। दिन में कई बार पीवे। इससे सुजाक दूर होगा ॥ (अमृतसर निवासी के नुसखे)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(५) ततीयकज्वरमें — बड़ीयाछोटी दूधी कोइभी दोनोंमें से एकके ४,५, (तिपत्ते कोंपल बीज द्वाव) मेपीस गुड़ में लेकर बंद कर गोली निगले (पानी नदेवे ऊपरसे) तो चढ़ेगा नहीं। चढ़ेगा तो ज़ोर से चढ़ेगा। पर फिर उस गोली के प्रभाव से न आवेगा॥ (गुरुदत्त लैंड़ा वो)।

(६) नाक के कीड़ों पर अजमाया गया अलच्छो —

(१) सिलारा (पंजाब [illegible]) (बदाल या जवार के खेतों में २ ढूंढी रहने वाला चैत का [illegible] निकलता है फूल की शकल में होता है रंग लाल + [illegible] होता है। उसमें काले रंग के बारीक चिन्ह होते हैं) उसका [illegible] पीस कर कलकी गुलवाए तो नाक के कीड़े मर जावें

(अनुभूत)

(७) वा ?

[illegible] गंगाराम महाराज के उन्होंने बतायाथा। चाकरी बूटी (फाकटेरी) (चचरफल [illegible]) उसको पानी में डाली भिगो आल के घोट के पीते हैं, ३ तोले रोज़ पीवे तो १०,१२ रोज़में [illegible] हो जावेगी मेंने देखनी

(८) ककोड़ा के बीजों की मींगी का तेल निकालकर [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(६३)

(८) (१) खूनआंवरदस्त (चाहे २० बार जावे) अजुरन अथवा सेमल के गुलर के फूल ३ तोले सब्ज पीसकर रोज विकरौ पर काली मिरच मिलाकर पीवे तो २,४ बार में ही बंद हो जावेगे। (कंगलप्रकी)

(९) (२) राब को २ मासे कूट कर की टेगो द को भिगो कर प्रातः मिश्री डालकर पिलादे। त्रौ का भिगोया शाम को पिलादे (अनुभूत ज्ञान से लिखा)

फुफेश उतर जावे या बढ़ जावे नहा होतो अजुकर पर
(१) रत्ती छ पीसे पीस कर दोनों पालने से चढ़ जाता है। (अंगनदेव)

(२) नक के लिये — सम थानकी गली सफेद ही पीस छिड़क ने से नकेस अच्छा होता है॥

कंवल का अनुभूत है — शीशम की कुल की लकड़ी के टुकड़े / नाखून का साफ छिलके दोनों मिलाकर कर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

१) पारदभस्म —— धतूरा का बीज १० तोला, जमालगोटा बीज
१० तोला इसमें पारा एक तोला खरल करो। एक कूजे में
डालकर खूब मुंह बंद करदें। और एक मिट्टी के ही चौड़े
मुंह के बरतन में रेत भरो और इसके बीच में पारे वाला
बरतन देकर आंच नीचे जलाओ। रेत के ऊपर गेहूं
के दाने रखो। जब दाने भुन जावें आग बंद करदो और
ठण्डा होजाने पर आहिस्ता से निकालो। खील बनेगा
और बहुत उत्तम ~~[illegible]~~ लाभ होगा।। (از زبانی بک صاحب [illegible]
دیش ادہا مارک)

(२) बंग की डब्बी बनाओ, इसमें एक तोला पारा भरदो।
डब्बी छोटी हो जो पारे से भरजाये खाली न रहे। फिर
पावभर मेंहदी लो, उपले में छिद्र करो। थोड़ी सी ऊपर
मेंहदी बिछाकर ऊपर डब्बी रखदो। ऊपर बाकी
मेंहदी डालो। और डब्बी चारों ओर से ४ उंगल मेंहदी
से जरूर ढक जावे किसी तरफ से नंगी न रहे। फिर
ऊपर एक और उपला बड़ा देकर खूब जमादो और
आग दो। मेंहदी के ताप से डली कच्ची रहेगी। ~~[illegible]~~
पारा मरेगा। खील होगी। बड़ा ही बलवान बनेगा।
खोराक १ चावल, दोनों से नामर्दी दूर होजावेगी (हीरालाल)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(६५) पारे की गोली

(1) शिंगरफ से निष्कासित पारद ६ माशे, नकछिकनी के रस में एक पहर खरल करके नकछिकनी के लुगदे में पारे को बंद करके मिट्टी के दो सकोरों के अन्दर बंद करके कपड़ौटी कर ५ सेर उपलों की आंच दे फिर निकाल कर गोली को तीन घंटे तक नींबू के रस में डाल कर निकालें। और धोकर साफ करके काम में लावें। जिस दूध में यह गोली डाली जावे उसमें बिजली की सी ताकत आ जाती है। मनी को ताकत देता है और दूध का असली फायदा हासिल होता है।

आल महारावमी भूपाल देश। ८४०

(2) चांदी भस्म १ मा० १ ॥ + पारा १ तोला खरल कर गोली बनाओ।

(अनुभूत)

१) पारदभस्म —— धतूरा का बीज १० तोला, जमालगोटा बीज

(५५) अण्डकोष उतरने पर

१. खसिये की चोट को नाड़ा —— हल्दी पीसकर मुर्गी के अण्डे में मिलाकर कोसा २ लेप करें।

२- कि फोते पर लगाते हैं उतरी हुई आंत को ऊपर चढ़ाता है और आगे को उतरने आंत की रक्षा करे। अफ़ीम २ माशे बहेरा ज़ा ६ माशे। सफूफ करके छिड़कें, और खसियों पर रोग़न बाबूना, ख़्वाह रोगन सरशफ़ (...) लगा के कपड़े मज़बूत खोलकर बांधें। और चार पहर के बाद दूसरी पट्टी बांधें। और आंत के चढ़ जाने के बाद भी कुछ दिन प्रयत्न करे॥ (देशोपकार. १९२५)

३) (फोतों का बढ़ते रहना) – बैंगन ताज़ा लेकर उसके चार टुकड़े जो एक दूसरे से अलग न हों, करके अंगारों में गर्म करें कि नरम हो जायें। फिर इनको नीमगर्म फोतों पर बांध रात दिन बंधा रहने दें। अगले दिन ताज़ा बांधें। चन्द बार बांधने से लाभ होगा। दर्द तो प्राय: एक दो दिन के अन्दर ही मौकूफ़ हो जाती है॥ (...)

(५) फोता छिलकना — कोड़ा पालोबान + मैंदा सुगन + कनेर के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मरहम तय्यार करें। और ...

[illegible] करो। और [illegible] माहा [illegible]
[illegible] तेगोटाला। शीघ्र [illegible]

पारे का शरीर में जाना, और हानि [illegible]

<u>इलाज</u>

(1) दसने ([illegible]) के बीजको कूटकर रातको भिगोकर प्रात: मल और छानकर पियो तो पेशाब के रास्ते से पारा निकलेगा (नोट्टक महाराजा साहिब) ॥
(2) कड़वे हींगों ([illegible]) कालें पिलाओ, और उबालकर पारे का ([illegible]) करलो। पारा निकल आवेगा ॥
(3) हिरनखुरी आधी छटांक रगड़कर पियो। पारा पेशाब के द्वारा निकल जावेगा।
(4) पेठेका पानी सारे शरीर पर मलकर रातको सो जाओ, और करेले खाओ तो आराम हो जाता है।
(5) जवांसा को छायामें सुखाकर इस को भस्म करके ([illegible]) चोया करके शुद्ध पानी लो। शुद्ध गंधक 2 माशे इस पानी से खावें तो पारा कच्चा बनकर पेशाब के रास्ते से निकलेगा ॥
(6) ([illegible]) पानी सर्पोंका, हल्दी, चिरचिटा, हरमल, मूली के बीज, मकोय, आकाश बेल प्रत्येक 5 माशा, त्रिफला 15 माशे बासी पानी से पियो, पारा निकलेगा।
(7) गंधक दूध में साफ करके 4 माशा त्रिफला के पानी से पियो। मूत्र द्वारा पारा निकलेगा ॥
(8) कड़वी मूली के बीज 10 माशे + गोपीचंदन 6 माशे। पानी में [illegible] के पीयो। पारा निकलेगा ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

संखिया भस्म (श्वेत) (६८)

(1) हरमल (हिरि) ताज़ा बूटी २ ई तोले लेकर उसका लुगदा करके इसमें तोला भर संखिया देकर कपरौटी करके सुखादे फिर १५ सेर के गढ़े में आंच दो। सफेद रंग का बनेगा। अर्क मुश्क, गुलाब, केवड़ा मे खरल करके प्रयोग करते। मात्रा १ चावल से २ चावल तक है। अत्यन्त लाभदायक है
(नरेन्द्र महाराज. १५-८-६.)

(2) १ तोला संखिया को गलगल के रस में खरल करके और टिकिया बनाकर सुखाओ। आक के दूध में अच्छी तरह भिगोकर इस टिकिया को आक के पत्तों में लपेटकर दूसरी गलगल काटकर और इस में डालकर खूब कपड़ौटी करो और फिर चीथड़े लपेट दो। गाजनो मे भिगोकर सुखाओ। फिर १५ सेर जंगली उपलों की आंच दे। ठंडा होने पर निकाल लो। मात्रा १ चावल। सब रोगों को अनुपान से खावे। और यदि ऊंटनी के दूध से खावे तो शर्तिया जलोदर दूर होवे॥ (पेशोप. १५-८-६.)

(3) एक तोला संखिया पाव भर अरंड के पत्तों के लुगदे में देकर संपुट करके पांच सेर के गढ़े में आग दो। ऐसी ६ आंच से तय्यार होता है। सम्मुख प्रयोग करते॥ (१९३५. [illegible])

(4) [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible]

(4) फुफ्फुस की [illegible] अच्छी [illegible] चेहांडे में [illegible] की डली [illegible]
की [illegible] | [illegible] [illegible]
[illegible] (अनुभूत)

शिंगरफ़ (मोमी) (देशी)

(1) बड़ कोदाड़ी १६ छटांक + पानी ३२ छटांक मरके में डाल कर उबाल ले कोरे कपड़े में दो तोले शिंगरफ़ बांध कर डोलजंत्र से बांध कर लटकाओ। ६ पहर की आंच दो। मोमी बनेगा॥ {३

(2) शिंगरफ़ की डली २ तोला बैंगन में दे भर्ता करो। ऐसे १०१ बैंगन में करो। मात्रा १ चावल। (नोट [illegible]) १० ३८

(3) १ तोला शिंगरफ़ की डली १ कडुवे तुम्बे में भरके तुम्बा भूनलो। इसी तरह १०१ बार भूनकर खरल करालेवे। सब रोग दूर हों। (१८३६ [illegible])

(4) १ तोला शिंगरफ़ को 20 तोला लहसुन के रस में [illegible] थोड़ा २ डालकर खरल करो [illegible] गोला सा बना के उस पर चारों ओर डेढ़ छटांक लोगड़ [illegible] लपेट कर एक प्याले में धरे ऊपर से [illegible] लगा के कमरे के दरवाजे बंद करदो। [illegible] सवेरे दरवाजे खोल कर निकालो। [illegible] १ चावल [illegible] चावल तक [illegible]। [illegible] ताकत, [illegible] के लिये अमूल्य। [illegible] (अनुभूत)

(5) १० तोला शिंगरफ़ डली [illegible] पटोला खूब लपेटकर हण्डी में रखो ऊपर [illegible] चला ले [illegible] ऊपर [illegible]
[illegible] | [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुहांजनी (आंख) फूलादि

(१) इमली के बीज पानी से घिसकर दिन में दो तीन बार लगाओ। एक ही दिन में आराम हो जावेगा और फिर कभी न उभरेगी। गुहांजनी का उत्कृष्ट इलाज है। (अनु० [illegible])

(२) अमृतधारा फूला — १ तोले कपूर + १ रत्ती अनबेधा मोती (लालां [illegible]) दोनों को खरल करके, सुरमा करके आंखों में डाले। फूला दूर हो

(३) फूला चिह्न — सफेद फिटकरी + समुद्रफेन + बीकानेरी मिश्री (कच्ची)। (१९-८-१९ [illegible]) तीनों समभाग अत्यन्त महीन पीस ३, ४ दिन तक पीसो। फिर २, ३ चावल भर कागज पर रखके ठीक चिह्न पर डाल दे। प्रात: एक बार। २१ दिन में कट जायेगा। खटाई तेल बन्द, हाथ न लगा वे॥ (ला० मुकुन्दलाल पाठशाला उदासी)

(४) फूला पर अत्यन्त गोप्यतम शर्तिया नुस्खा — सफेद फिटकरी १ तोला + उत्तम काली मिर्च दाने ५ इस अनुपात से तीन दिन घोट पीस शीशी में रखे। चमची से फूले पर डाल दे। सात दिन से अधिक दिन तक आराम अवश्य होगा॥ (ला० कृष्णदासजी व दुर्गादास हकीम पटियाला)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(87)

पारा का मोरकोह धातु जोड़ से निकालने की रीति

(1) यदि रामतुलसी 1 तोला आध पाव पानी में पीस कर सात रोज़ से 14 रोज़ तक पिलावे तो रोगी निश्चय है पारा का जो कच्ची भस्म खाई गई हो इसकी छुटकारी रोग होजाता है। और वह भस्म पेशाब मार्ग से निकलता है। पेशाब रोज़ ([illegible]) में जमा करें जितने दिन पेशाब ([illegible]) जमा होंगे, उनको धोकर नथरा दें तो बह जाता है और शेष भस्म रह जाती है। पं० बालेराम का कुश्ता हटाने हेतु किया

([illegible])

चांदी भस्म (८२)

(१) इश्क पेचा के (बेल) पत्ते का अर्क निकाल कर चांदी के पत्र को ४० बार बुझावे (इसी पत्तों की लुगदी में बंद करके तीतर के (पाचक दस्ती) की आंच दे (कुश्ता होगा)॥ (अरुद्धीकर दस्ती २०४)

ॐ तत्सत प्रभु

$25\frac{8}{53}$ × आंत उतरने पर परीक्षित योग × प्रोताब उतरता हो तो इसका उपाय

कमरकस + नकछिकनी + सुपारी दक्षिणी + लाल फटकरी
५ तोला ५ तो ५ तोला

की खील + गोंद कीकर + गंवार पाठा रस + गोंद छुहारा
५ तोला $2\frac{1}{2}$ तोला $2\frac{1}{2}$ तोला $2\frac{1}{2}$ तोला

+ शुद्ध मधु / सब को कूट पीस छान ले। बाद में कीकर
$2\frac{1}{2}$

की गोंद को ग्वार पाठा रस में डाल दे तो गल जायेगा। तथा गोंद छुहारा को शुद्ध मधु में डाल तो घुल जायेगा। फिर सब को सम्मिलित कर ले। डेढ़ २ माशे की गोली बना कर दिन में तीन बार दूध के साथ निगल जावे, चाबे नहीं तो सात से २१ दिन में आराम होगा। यह (कृष्णा गली नं. ६ दुलाहोट में रहने वाले हो शियापुर के हकीम राजवैद्य लक्ष्मन दास यक्ष्मा [illegible] हो रियासत छुट्टे होना जाते हुए ...... गांव में वे रहते हैं / प्रसिद्ध हैं)
(श्यल [illegible])

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(८३)

नासूर

(1) सिन्दूरको एरंडपत्रके ४० तोला पानीमें खरलकरें
१ तोला

फिर एक बत्ती बनाकररात्रको नासूरमेंदेवें, प्रात: बत्ती निकालें। (देखोगे अतिसूक्ष्मतम कृमि बत्तिसे लिपटेहुए (खुर्दबीनद्वारा) दिखाईदेंगे। इसप्रकार तीनबारकरनेसे सबकृमि बाहिर आजायेंगे; और नासूर स्वयं चारपांच दिन में अच्छाहोजावेगा (डाकुरका रिपो० २०६५)

(2) तम्बाकू तथा पियाज़ दोनों को समान वज़नलेकर तिलतेलमें (इतना जितनेमेंदोनोंडूबजांये) पकावें। जबजलजावे निकाल कर साफ़कर दें और थोड़ासा धोयाहुआ मोम मिलाकर मरहम तय्यारकरें। इससे नासूर और ज़हरदार हथियारोंके घाव दूर होजावेंगे॥ ✓

(3) सांपके ज़हरमें जनतीहै तिसका मास एक स्थानमें लगावेंतो समस्त नासूरदूरहोवे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कायाकल्प (०४)

(१) करौंदा बूटीके ताजे पत्तोंके साथ हरे पत्ते अर्द्ध ५ तोले (?) : मासे कालीमिर्चके खूब बारीक पीसकर मिलालेवें और एक गिलासमें डालकर पीजावे। चालीस दिनके अति सुन्दर कायाकल्प होजाता है। सातादिन उसके पुराना खून दूर होकर नया होजाता है, त्रिजन्य देहगंध भी कल छूट हो जाते हैं। सफ़ेद बाल इस कल्प करनेसे काले निकलने शुरु होजाते हैं। भूख अच्छी लगती है। घी और दूध इसके साथ मिलाता है। मैथुन, गुड़, तेल, लाल मिर्च, अधिक नमक परहेज हैं। कमजोर वालोंके हैं। ४० सालकी आयुके बाद करें॥

(देशोपकारक २३१)

(२) मकरध्वज + रससिन्दूर + शिंगरफ़ + नाग + वंग + अभ्रक + ताम्र + स्वर्णमाक्षिक + शंख + कपर्दक + शुक्ति भस्म + धतूरा + सत्वगिलोय + शिलाजीत + बसन्त जायफल + जावित्री + कापूर सब डेढ़ माशा + लौह ३ माशे + संखिया १५ रत्ति + कस्तूरी ३ रत्ति जयपालबीज चूर्ण ४ रत्ति + पिप्पली ६ माशे + विदारीकंद चूर्ण ६ माशे + भांगचूर्ण ६ माशा" सब निंबूरसमें घोटकर २ रत्तिकी गोली बनाओ। सर्वरोगनाशक, खून, बढ़ाई, कान्ति + तिल्ली जिगर + भूख, रुचि, मनोशक्तिवर्धक है॥ घी दूध खूब पीना चाहिये॥ (मुंव. रंजनकी)

(३)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(८५)

मृगी

(1) कुंवारी कन्याका प्रथमवारका रज हैमाता पड़ालो उसका छोटाला चीथड़ा एक छोटी ~~लकड़ी~~ लकड़ी जैसे आक की एक छीढ़े एकलिटे पर रखकर उसको आग लगाओ और बूढ़े हिटैको नाकके पेर छुआओ रखओ ऊसका धुँआ खींचे । एवं तीनचारदिनकरलेने से मृगी दूर होगी / सायुरामजी के कागज से

(2) शंख का चूर्ण + ~~चूना~~ [illegible] + रेता / पीसकर नस्य दो तीनदिनके अन्दर दिमागके श्वेत कृमि बाहिर आजायेंगे / और रोगी सदा के लिये अच्छा होजावेगा // मरीज़ लंमालेटा है नाड़ी पर फूक मारे दिमाग तक पहुंच जाने / नाक में पानी चढ़ी दिन लगातार गिरेगा / फिर धीरे आहिस्ता होजावेंगे / फिर आयुष्मान आकेंगी (मैजोपुलिकों) [illegible]

(3) पंरी खिल ——

इलायची छोटी + कमरजूर बड़ा + आक कातीना + कश्मीरी
१ तोला . १ हं. ३ हं.

पत्रा + ऊंटकृमि —— छान बनाकर पीसकर नस्य दे रोग
१तो. ३ लंबा

जाय // (मल्लकराजजी)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(७६) कुनैन कड़वा हल्का

(1) जंगी हड़ का पान लगाके दो तीन घूंट अंदर तक लेजाओ फिर कुनीन खाओ तो कड़वी नहीं लगेगी।
(दे.गो.)

श्री वैद्यराज कालीचरण जी के नुसखे ओ
जो पं. मथुराप्रसाद दीक्षित
हृदय, बाहु आदि शूल जिनसे उपचार चलता था

(1) ~~मद्यतन~~ शंखं ताम्रं च लौहं च यशदं जहरमोहरकं
हृद्रोगं बाहुशूलं च नाशयेत्तच्च भद्रकः। अर्थात
शंख ताम्र [illegible] ये तीनों की एक पुड़िया शहद से दाय-
(1 रत्ति 1 चावल 1 रत्ति)
हल्का 1 पुड़िया दें। जहरमोहरा 1 रत्ति
(2) जहरमोहरा यशद की पुड़िया प्रातः सायं ही शहद से दें
1 रत्ति 1 रत्ति
(नोट- प्रातः त्रिफले 6 माशे का जल 2 छटांक में मिलाकर शहद मिलाकर पिलावें)
या होम्यो वैधिक दवा दी
(1) Cratagus (mother Tincture) 20 बूंद दिन में दें
(2) Spigilia (" ")
Definite medication (Elegi Sons

(५८)

अर्श (६८)

1. खूनी तथा बादी अर्श — घी गौ १४ छटांक, लहसन ७ तोला। १ तोला लहसन साफ करके २ छटांक घी में इतना भूने कि बहुत कोमल कीचड़ हो जावे। फिर लहसुन को घी से अलग करके फेंक दें और घी को निहार मुंह पी जावें। ७ रोज़ तक ऐसे ही करें। शर्तिया लाभ देता है॥ (स्रोत॰ 332 ई

२. मनशिल से बने नाग की भस्म ½ रत्ति॰ प्रात॰ मक्खन में खिलाओ। १५ दिन के बाद ताम्र भस्म ½ रत्ति खिलाओ। दूर होगी। (N.K. Mitraji)

~~(३) फौलाद भस्म २ रत्ति + रसौत १ माशा दो मासे की १ गोली बनावें। इसी प्रकार और गोलियां बनाकर पानी के साथ बनाओ। प्रात: काल गोली नागकेसर जल से लगाओ। इसे प्रकार की बनानी से ठीक होती हैं। (निमान गुप्ता / वैद्य)~~

~~(४) तथा भाग्य का नागकेसर पीका लौह है से अर्श निमान हो जाती है। (आयुर्वेद)~~

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(७८) अण्डकोषकी खाज

(1) हल्दीको चिरागमें जलाकर अण्डकोषपर लगावें 3 दिन में आराम होगा (332 द. [illegible])

(2) दूबकी [illegible] करके [illegible] के पानी में उबाल करके खुजलीपर लगावें। दो घण्टे बाद धो डालें। तीन दिनतक यही काम करें। आराम होगा (238 द. [illegible])

(3) गंधक आमलासार + कापूर समभाग नारियलतेलमें पीस कर लगावें। (326 द. [illegible])

(4) कमीला [illegible] + वहमन[illegible] + कापूर प्रत्येक दो (तोले) ([illegible]) एक छटांक। एक थालीमें [illegible] कटोरेकी पीठसे दोपहरतक रगड़ें कि [illegible] की तरह हो जावे फिर खाजकी जगहपर लगावें॥ 88 द. [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(८५)

कब्ज

(1) कामपीकुब्ज — सौंफ ५ तो. गुदापीछ्छा २ तो.। दोनों को मिलाकर गोलियां बनावें एक २ रत्ती की। (एक गोली प्रातः, एक शाम (१८००.४) से खिलावे। इससे कब्ज दूर होगी (देखो · ३३४९)

(2) श्री चिन्तामणि रस की गोलियां [illegible] पकड़ा गया ५६ गो ॥ (दाम ॥=)

नुसखा — एलवा ५ ग्रेन + लौहचूर्ण ५½ ग्रेन + सोप पाउडर (१ ग्रेन) सबको मिलाकर १० टिकिया गोली बनाओ। गुण यह हैं" बदहजमी, दर्दसिर, खिन्नमना, तिल्ली [illegible], पेट का दर्द, कब्ज, बेचैनी, बेख्वाबी, बदहजमी, अरुचि, पेट भारी, जिगर, दौरा सिर, खट्टी, दिल धड़कना, चमड़े के दाग, फोड़ा, फुंसी, भूख न लगे, पेशाब, हैजा की खराबी (चीफ चं· दे॰)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हीरा भस्म (८०)

(१) इसे कोई बनाता नहीं, श्री जियालाल जी अपने [illegible] हैं

नुसखा — (گندھک آملہ سار) - - - - - - - एक अदद, (سنکھیا) - - - - - - - १ तोला, (فولاد) - - - १ अदद, पानी के (عرق) -- इसके नुगदा बनावें और इसमें ~~कनी~~ हीरा देकर पंद्रह सेर पत्थी आग दें। सात आंच में भस्म हो जावेगा। लिखते हो कि ([illegible]) - - - - पारा (سیماب) है। (عرق) और [illegible] का भी इसी मतलब के लिये इन्हीं दवाइयों में [illegible] होता है॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(८४) कनपेड़े का रोग (मम्प्स)

(1) कनपेड़ों का तिलस्म — जिस ओर के कान के नीचे दर्द हो या वरम हो उस ओर के पैरों के तलवे में मोचरस ६ माशे बारीक पीसकर ताजा पानी में जलकर लेप करें। कल्ले ते रुई का फाहा गरम गरम बांधें। एक दो बार के लेप में तिलस्म का काम दिखाता है (हकीम अली मुहम्मद देहली -४२०६)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(१) मोती ने बताया। भंगरा को दो चार तोला मिर्च के साथ घोटकर बार बार सर्पदष्ट को पिलावें। यदि बिल्कुल बेहोश हो गया हो तो [illegible] ताजा जड़ इसलिए की [illegible] पीठ तल में डाल दे, १५ दिन के पीछे मकान के छप्पर या छत पर कपड़े में बांध कर लटका दे ज़मीन पर न गिरने दे। समय पर पानी से जीरे घिस कर [illegible] सर्पदष्ट की आंखों में लगावे। तत्काल होश में आ जायगा और [illegible] विष उतर जावेगा। पीछे भंगरा [illegible] करदें
(देखो ४० पृष्ठ)

(२) पांच तोला जामुन की छाल + १ तोला काली मिर्च का चूर्ण पानी में घोलकर पिला दो। अथवा तत्काल काढ़ा बनाकर पिला दो। कमाल का गुण रखता है (६०३९. देखो).

(३) भांगरे का रस (पंचांग का लें) १ तो. + मिर्च काली ५, ७ दाने पानी में पीसकर पिलावें। ५ मिनट में बिच्छू का ज़हर दूर होगा॥

(४) बिच्छू का ज़हर दूर करे — सत्यानाशी का लेप करने से [illegible]
(देखो [illegible])

(५) सांप — सर्पदष्ट वाला बेहोश हो तो कुचला ८ रत्ती लेकर बारीक चूर्ण कर २ रत्ती से ३ रत्ती तक ठंडे पानी से पिला दे। और कुचला पानी में पीसकर [illegible] लेप करे। आध घंटे में चाहे कैसा भी बेहोश हो होश में आ जाता है। (देखो [illegible])

(६) [illegible] का बीज घिस के लगाओ। ठण्डे पानी से

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(७) [illegible] दो [illegible]। (अवश्य अच्छा हो जाता है [illegible]

[illegible]

... देते हैं। (अवश्य ...) हमारे अनुभूत

(८) सर्प दंश को दवा / पशु चिकित्सा (८३)
पानी पिला देते हो।

(1) यदि किसी पशु की आंख के [illegible] आवे और इतना बढ़ जावे कि बाहर निकल जावे तो छोटी हरड़ (काली) घिस कर लेकर आंख में छोड़ दो, दो तीन दिन आंख बिल्कुल साफ हो जावेगी।

(2) यदि कुत्ते को खारिश हो गई हो और वह उससे बेचैन हो रहा हो तो सांप की केंचुली गुड़ या रोटी में मिलाकर खिला दो तो तीन दिन में ही धूल सी उड़ जावेगी। (सांभर इससे मनुष्यों को भी लाभ है। (४ थी द. पश.)

(3) जहां जख्म हो कीड़े पड़ गये हों तारपीन का तेल लगाओ। मजाल नहीं जो कीड़े रह जावें, मक्खी भी नहीं बैठेगी। और आयोडीन की तरह वातदर्द में (अपने पैरों) भी लगा लेते हैं। (द. पुरा. २)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(जैरपातन) प्रसवकुगमहै। (८४)

(1) हीरादोवी मसूरमर को कौड़ी बराबर रुन्दस्याह में लपेटकर निगलावे, पानी न पिलावे। १५ मिन्ट से ३० मिनट के अन्दर दोवागया है कि बच्चा कुशलता (३४०) होवे। निकोलहेनी माता को रुग्नहो। (21 बारप्रीक्षित है। देशोप. ०१४६.)

जेर गिरानेके उपाय –

(1) स्त्रीके कंठ के बाहर बालों वाले Brush को खूब रगड़े। अंगुली में बाल बांध भीतर कंठको खूब मले।

(2) कलिहारी या मोठतेलिया पानी में पीस हथेलियों व तलवों पर लेप करें। और

(3). कड़वी तुम्बी सरसोंके तेल में मिलाकर योनिमें धूनी देवें। ऐसा करने से भैंसगौ घोड़ी तक की जेर गिरपड़ती है। (धातृप्रकाश)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गर्भनाशक (८५)

(१) नौसादर, हड़ताल को लेकर पीस कर मैनसिल ... प्रदर घटे। इससे गर्भ नहीं होता है। इसको [illegible] नहीं है। (देखो ४९२)

(२) यदि बूढ़ा पुरुष हो स्त्री युवती हो तो स्त्री का वीर्य शिथिल करने के लिए ... होगा (४) काफूर चीनी सुहागा दो दो माशा लेकर १४ गोली या २१ गोली बनाकर रोज़ या नित्य एक स्त्री को खिलावे तो स्त्री का वीर्य शिथिल होवे।

(3) ऋतु के पीछे नीम का तेल अन्दर धारण करने से कभी भी गर्भ नहीं ठहरता (अनुभूत)

पारे की गोली X वैद्य काली चरण

शुद्ध पारा (हिंगलोत्थ) ५ तोले लेकर (पानी निकाले दही के मौवा में रखकर) ६ छटांक पनीर में रगड़ना शुरू करें। क्रम से यह पारा मिलेगा कम भी घुल जायेगा। ५, ६ दिन में जब भली भांति घुल जावे तो बहेड़े का कपड़छन किया चूर्ण ५ माशे लेकर थोड़ा २ डालकर घोटें। एक जान हो जाने पर पोले हाथ से गोली या गोला बना लें। इसे पतले कपड़े में लटकाकर उबलते हुए दूध में तीन दिन तक टांगें। इस दूध को फेंक दिया करें। चौथे दिन से कपड़ा अलग कर दें। यह कड़ा गोला बन जायेगा। इसमें धागा पिरोकर इसे प्रति दिन पकते दूध में लटका दिया करें। पकते ~~पूर्व~~ दूध उतार कर पिये। दूध में से निकाल कर प्रतिदिन धोकर सुखा दें। नित्य प्रति ऐसा ही करें दूध गौ या भैंस का हो। बहेड़े का चूर्ण इसकी गोली बांध देगा पर इसे दबायें नहीं। दूध में २, ३ बार पकाते ही यह कठोर हो जायेगा, १ छटांक का गोला हो जायेगा। वैद्य काली चरण

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अश्मरी (८६)

(१) अश्मरी हेतु को लेकर कुछ दिन रात भिगो कर रखें जल में, जितना अधिक जल को उतना हो, अन्यथा ७ दिन काफी हैं। तब अंग अमलता मदाय कुछ श्वाता है जो तोड़ कुल्के में आसानी से जा सकता है। जितना जानी है। (देखो. ६१)

(२) कुष्माण्डक को कुकुड़ छिद्दी के रस में भावना देवे। केवल तीन पुट में ही निश्चय करके मल हो जाती है सिद्ध है। (बाबू कृष्णादास जी)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नशा उतारना:

(1) धतूरे का नशा उतारना हो तो नागदरी १०, १२ कोंपलें पावभर पानी में पीसकर पिलावें, तत्काल नशा उतर जावेगा

(2) भंग का नशा कानमें खालिस तिल्लौ का तेल डालने से उतर जाता है। (हि० ६३८)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इन्द्रियपुष्टियां (८८)

(1) नीलाथोथा डली १ तोला लेकर दस्तपनाह लेप करकर कोयलों की आग पर रखकर फूंकते हैं कि लाल सफेद हो जावे खरल कर रखें। १ रत्तिमात्रा मक्खन में डालकर निगला करें। और कपूर को हलका कर के मक्खन से मालिश किया करें। सावधान रहें कि तूतिया की डली आग के ऊपर न रहे, जलती रहे।

(शा ६३८)

अष्टधातु भस्म (८७)

(1) सोना + चांदी + लोहा + सीसा + तांबा + जस्त + पारा + पीतल " इनकी भस्में लेवे और बराबर लेकर घीक्वार के रस में खरल करे। दस दिन तक खरल करके टिकिया बनाले मिट्टी के सम्पुट में रख कर कपरौटी करके सुखा लेवे। उसके पश्चात एक टोकरा नीचे ऊपर डालकर कुल्ली गड्ढे में रखकर गज पुट में आग देवे। अर्थात् जमीन के अन्दर गाढ़ देवें। चारों ओर आग लगा जावे। शीतल होने पर बारीक पीसकर सोने की डब्बी में रखे। इसके सेवन करने वाले को मौत के सिवाय किसी रोग को छोड़ता नहीं। [illegible]

दवा ५७८

खटमलादि दूर करना (८०)

(१) मूलीके पत्ते जितने उपलब्ध हो और पारा समान भाग लेकर खरल करें। एक जान हो जावे तो बत्ती करें और चारपाई के चूलों में रख दें। खटमल दूर होंगे। अनुभूत

(२) जूं — यदि इसी खरल किये पारा मूलीमें धागा भिगोकर गलेमें डाल लेवें या कमर में बांधें तो जुऐं मर जावेंगी। और जबतक वह धागा [illegible] रहेगा कभी जूं पैदा न होंगी॥ (२१। ६६

(३) लो शीशे पर लपेट तिल तेल की मालिश कर सोवे (२१। ६०

(४) जड़ [illegible] चरखे की खूंटी पर बांध दो। दो साल पीछे खटमल कम हो जावेंगे। अनुभूत (ट्रैक्ट ५६८.

(५) कान खजूरा कान में चला जावे तो — एक बल्बी बेड़ा कान में लगा के दूसरी तरफ पानी ठंडा की टब में डाल दे। फिर गरम २ तिल तेल की मालिश करे। अन्दर गर्मी पहुंचने से घबराकर नली द्वारा ठंडे की तरफ जल्दी आ जावेगा। बहुत कान खजूरे कान में पैदा हो जावें तो भी इसी तरह निकल आते हैं॥ (१०५ देखो।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तृतीयकज्वर (८१)

(१) फटकरी १ भाग + गेरू ३ भाग बारीक पीस कर समान
तीन पुड़िया बनाकर पानी से निगलावें। प्रथम तो इसी से ज्वर
नहीं चढ़ेगा और नहीं-अवश्य। (अनुभूत (वैद्य)।)

(२) धतूरे के पत्ते नीला वेता, शान्ति काला २ दाने पहिले
जलकर दौरे से पहिले सेवन करादो। ज्वर न होगा॥
तृतीयक ज्वर में आराम होगा। (बलदेव...)

(३) चौथिया ज्वर का नुसखा — घोड़े का पर १ दिन गले में दो।
(बलदेवरामजी)

(४) पानी के गिलास पर + करके पिलादो। तृतीयक न होगा।

(५) रविवार या चलते हैं पहिले रूपकी ओर मुंह करके रोगी के
पीठ पर ऊपर से नीचे तक एक बिना टूटी लकीर खींचे
तैयार हम जायेगा।

(६) छिपकली की पूंछ को हनी पर बांधो नहीं आवेगा।

(७) सफेद गोल मिरच पानी में घिस कर दोनों आंखों में
अंजन करे ओडसी दिन की ज्वर न आवेगा। (अनुभूत)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शिलाजीत की जांच (८२)

५। शिलाजीत को बिना धुंए के कोयले की आग पर रखें जल कर राख हो जाय तो पानी के गिलास में डाल कर उसको डाले यदि बारीक धागा होकर सारी राख नीचे बैठ जावे तो उत्तम नहीं तो खराब समझें। यही आजमाई प्रमाणीक है।

(२५८८ दे. देखो

(८३) सिरपर बाल तुरंत उग आवें - ४.

(१) हत मण्डूक को भस्म करके हरताल १ शीशी में जिसमें तिल्ली का तेल भरा हो डाल दें। खूब हिलाकर आवश्यकतानुसार लगावें। जहां बाल न हों वहां पर बाल तुरंत उग आवेंगे। यदि हाथपर लग जावे तो वहां भी उग आवेंगे। (नत्थूसिंह [illegible]

[illegible] १९६

बेहोश और होशियार करना (९४)

(१) अफ़ीम खालिस १२ रत्ती + चरस + तुख़्म भंग + (उ॰ टैं॰ हं॰) बीज नग्काह कौड़ल + तुख़्म धतूरा + तुख़्म काहू प्रत्येक १२ रत्ती सबको पीसकर पानी में एक रात भिगोदें। और सबीख़ (इं॰) को मन्द जोश दें। जब आधा पानी रह जाये तो खड़े छानकर फिर दूसरी बार इसी पानी में भिगोदें और फिर उसको जोश देकर छान लें, इसी तरह तीन बार करें। फिर इस जुशान्दे में तुख़्म बारतंग (?) नरदर १२ माशा मिलादें। जब तुख़्म बारतंग तमाम पानी को जज़्ब करले तो खुश्क करके पीसलें और किसी जवान आदमी को बेहोश करने के लिये दरम (इं॰) खिलायें। और जब होश में लाना चाहें तो

(२) क — जन्द बेदस्तर + फ़रफ़्यून (इं॰) + सोंठ प्रत्येक समान वज़न लेकर बारीक करके इसको नाक में फूंकें। इससे छींकें आयेंगी। और अगर इन तीनों दवाओं को सिरके में मिलाकर एक शीशे के अन्दर डालकर शीशा के मुंह को नाक के सामने रक्खें तो और भी उत्तम है। यह हिकमाए फ़िरंगी की तदबीर है ॥

नोट — यहां तुख़्म बारतंग कोई चीज़ लिखी है, हमारे राय में गन्दम दाने होंगे ॥ एडीटर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(कुमारानन्दकी नोट) नारवा - रोग। (८५)

१. कली बुझाई हुई (चूना) २ माशा की पुड़िया दही के साथ दोनों समय तीन दिन तक खावे तो ही नहरुआ जावेगा।

(२) रतौंधा — नौशादर में केले के रस की २, ३ भावना देकर अञ्जन लगाने से रतौंधा नाश होता है।

(३) Zinc Lotion — Zinc Sulphas — ३ रत्ती
फिटकरी स — ५ रत्ती
Boric Acid — १० रत्ती
पानी या गुलाब जल — ५ तोला

(४) Tincture Iodine — Potasium Ayodide ५ ड्राम (या १ 1/8 तोला) आधे औंस पानी में हल करके उसके बराबर ही Iodum Resublim ५ ड्राम डालकर उसको चालीस गुना अर्थात् २० औंस Spirit methelated डाले, यह external है और Rectified Spirit से internal

(५) ज्वराञ्जन — मनःशिल पारद गंधक सोंठ पीपल निम्बु की गिरी (बीजगिरी) प्रत्येक ६ माशा केले के अर्क में घोटकर गोली बनाकर अञ्जन करे, तो आशु ज्वर का नाश होवे।

(६) निकट, त्रिफला, सरसों, सिरस के बीज, कुटकी, सैंधव, हींग सब बराबर नदी के पेशाब की भावना दे गोली बनाकर अञ्जन करे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पेशाब से धातु बन्द करके जमा देना (५६)

1. सीतलचीनी चूर्ण १रत्ति को बटजटा + बबूल गोंद + बबूलछाल चूर्ण " इन तीन चीजके दो आने मिलित चूर्ण मिला १पुडिया आन: शीतलपानीसे खिलादो। ४० दिनतक (१रत्तिसे अधिक मात्रा नदो) (हेतराम का अनुभूत नोहोग)

2. आंबाहल्दी २तोले, छोटी मानकचन्दीसुपारी दोतोले साबुत लेकर दोनोंको ½ सेर भेडदुग्ध (गोदुग्धवा) ½ सेर पानी में डालकर आगपर रखदो। दूध जलजाने पर दोनोंको निकाल कतरलो और इनमें दोनों के बराबर अर्थात् चार तोले (कतीरा गोंद) का Potasium bromide डालदो। पीसकर चूर्ण करो। अधिक से अधिक १ माशे मात्रा प्रातः दो। धातुवर्धक, गाढक. (बलीराम

3, श्वेतराल + मूलीरसभावित करके ३से६ रत्तितक दिनमें दोबार ऊपरसे दूध पीओ तो प्रमेह, संग्रहणी रक्तप्रदर, ववासीरादि बंद हों। (चक्रपाणि स्वामी

(4) बुहदपि + गाजरबीज + कीकरपत्ते। कमायबूटछाल ३माशे चूर्ण ... (...)

... गाय दूध ... मं दो (महाराज ...

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(२) गाढ़ नीमजल म बलन में दो (१ म हासल

(१) प्रातःशक

धोसीलिया १ तोला + छोटी कंटकारी फलों का रस १ छटांक

इस रस में खरल करके बाजरे दाने समान गोली बनाओ । १ गोली प्रातः दही के साथ से दो । ७ दिन तक आराम हो गया । कांजी दही मैदे माश केले आ चाहें खावे, मांसादि खावे । (लवण, [illegible]

(२) इसी को ही कुनी बवासी वाले को दे दें । (बलवान को न लो दूध ले दें । मठा या कढ़ी

(३) सुजाक वाले को कच्ची लस्सी दें । लस्सी खूब अधिक दिन में दें ।

(४) गर्भ या हो तो इसे गर्म दूध से दें ।

(५) रोगी न को दवा पर गर्म दूध से दें । घी दूध खावे ।

{बलदेवरामजी वैद्य गंगोह

युवती प्रसंजन (श्री बलदेवरामजी)

१. बाजीकरण — १ रति मात्रा (३ माशे) हलवे में लपेटकर निगलवे शाम को । ऊपर से हलवा या खीर खावे । दवाई रात को खानी । नमक खटाई आदि न खावे । रात भर चोट नहीं पड़ेगी ।

२- इसी की १ चावल भर मात्रा हलवे में जब हमको प्रेम हलवाई को दे । नमक न खावे । आचार खटाई बन्द । चीनी खांड खीर रबड़ी आदि खावे ॥

३. १ चावल व उसी की डिब्बी दे तो [illegible] जावे [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

१. तार मल्हम (हरि...)

(१) सफेद कत्था २ तोला + कपूर १ तोला + सिन्दूर आधा तोला, और गाय का घी सौ बार का धुला हुआ आध पाव। पहिले कत्था और कपूर को अलग २ पीसकर महीन करके में छान लो। पीछे घी को १०० बार कांसी की थाली में धोलो। फिर उसी घी में कत्था कपूर, और सिन्दूर मिलाकर खूब फेंट लो। जिससे दवा और घी एक दिल हो जाय। इस मल्हम से घाव बहुत जल्दी भरता है। घाव भरने के लिये रामबाण है। हर तरह के घाव साफ हो जाते हैं। कम से कम हजार बार आजमाई है।

(२) १ तोला सफेदा + १ तोला सिन्दूर दोनों को लोहे के पात्र में डाल कर ऊपर से १ तोला तिल डाल कर खूब ही रगड़ो पीलो जब एक जान हो जाय तो फिर १ तोला मोम तेल डालो फिर रगड़ो, ऐसे ४ तोला तेल तोला २ डाल कर रगड़ते जाओ जब खूब घुट जावे तब अंगीठी २ आंच पर पकावो। जब [illegible] तभी उतार लो। सांप के काटे के घाव से लेकर हर प्रकार के फोड़े फुंसी, घाव, जख्म को दूर करती है। (बिल्लू बाबाजी वैद्य)

(३) सफेदा + सिन्दूर + कापूर खूब पीस के मिला के घी या मक्खन में मिलाकर मलो। खाज खुजली, गर्मी के घाव, फुंसी हुई होंगी।

(४) इलाज की तरह की बूटे [illegible] पहाड़ों पर पैदा होती है पत्ते छोटे २ और (महादेव) लाल उसको इन्द्रौ कहते हैं। उसको कूटकर रात को [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ओपाधिगन्ध ज्वर
या
टाईफाइड फीवर

अंग्रेजी वाले २० से ३० दिन तक लंघन कराते हैं तथा एरंड तेल देते हैं।

वैद्यक वाले "सर्वगन्ध का काढ़ा" पिलाते हैं तथा "पुष्प गंध की धूनी देनी चाहिये"॥

(1) सर्वगन्ध — "तज + तेजपात + बड़ी इलायची + नागकेसर + कपूर + शीतलचीनी + अगर + केसर + लौंग" ये नौ सर्वगंध हैं। इनका काढ़ा पिलाने से ओपाधिगन्ध और विषलेह ज्वर नष्ट हो जाता है। ओपाधिगंध ज्वर में बेहोशी होती है उसके लिये हिंगुदा या [illegible] सेवन करने चाहिये।

(2) पुष्प गंध — "काली अगर + कपूर + कुन्दरू का बक्कल + तालद्रव्य + तगर + खस + सफेद चन्दन + राल" इन सब की धूनी देने से [illegible] रोगी का [illegible] नाश होता है। [illegible]

[illegible]

विषूची चिकित्सा (सोमानन्द सरस्वती)

(१) हैजा पर — सुहागाखील + शुद्ध स्वर्णमाक्षिक + सोंठ + पारा शुद्ध + गंधक शुद्ध + विष शुद्ध + (~~सर्पविष शुद्ध~~) अफीम शुद्ध ये सब बराबर २ सबके बराबर शुद्ध हिंगुल, जंबीरी के रस में खरल करके मोठ के समान गोली बनावे। विषूची व सन्निपात जनित अतीसार को नाश करे दही भात भोजन करे ॥ (सोमि [illegible] के अध्याय से) — बलदेव शास्त्री

(२) हैजा — ताम्र भस्म १ रत्ती उसकी जीभ पर डाल दो (या उलट हो तो श्री कृष्ण चूर्ण [illegible] को मिला कर दो) उसके लोगों पानी [illegible] चम्मच पीने लाओ। यदि के आजाये तो फिर एक रत्ती देदो। तो आंखें अन्दर चली गई हैं ऐसे हैजे के रोगी भी अच्छे हो जाते हैं। मुंह को खुला कर देवो। १० मिनट के वास्ते छः रत्ती शहद के साथ चटादेगा। इसका दश्त [illegible] है (बलदेव जी)

(३) यदि असल [illegible] हो तो हैजा हो गया हो तो भी ताम्र भस्म १ रत्ती अवश्य दो ॥

(४) हैजे पर "अग्नि तुण्डी वटी" दो। दिलाराम जी का मजा [illegible] है। [illegible] दो ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(२०१)

(1) ऑं. फूलेका इलाज (शपथाइल्म)

नौशादर + गंधक + शीशानमक + ताम्राचूर्ण
१तो १तो १तो १तो.

इन चारों को पीसकर बोतल में डालकर १० तोले अर्क नींबू में डालदें। १५ रोज़ खुली रहने दें। फिर जब तक घुल जावे ऊपर से निथार २ कर दो बूंद आँख में डाले तो फूला, धुंध, गुबार, जाला, पानी निकलता जावे। यदि चांदी की सलाई से डाले तो उत्तम। लालड़ी और मोतियाबिन्द शर्तिया बन्द हो। इसी प्रकार प्रतिदिन बार २ लगाना अच्छा होगा। ये याद रखे रहे॥ माताके फूले तक को उड़ा देता है।

|| बल्देवराम
ताऊ

(२) छोटा सा फूला हो तो ! कुंवारपाठा कांसी के कटोरे में (थाली) तांबे का पैसा घीसके उंगली से लगा बीच में कन्याकी औका दूध डाले। रगड़े। नीला होने पर आंख में सलाई डाल दें। ५, ७ दिन में आराम होगा। रात्रि नया बनाकर डालो।

(३) अण्डी के पत्तों के रस को डाले। फूला दूर होगा।

(४) फिटकरी सफेद १ तोला + कालीमिर्च ५ संख्या खूब पीसकर रखे आँख पर सफेद फोले पर लगाले अवश्य नाश होवे। (कृष्णादास जी)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मासिक धर्म खोलने के लिये

(१) लालगञ्जा का बारीक चूर्ण पीस छान कर उसको पोटली बना भग में रखने से मासिक धर्म खुल जावेगा। देवदारु की धूनी देने से भी खुल जाता है। (बिनौला, ...) सौंफ, मालकांगनी, ... गुड़ में तिल का ... काढ़ा ... लेने से खुलेगा।

२) कालेतिल, सोंठ, मिर्च, भारंगी, पीपल, गुड़ प्रत्येक एकत्र करके और ये काढ़ा कर १५ दिन पीने से स्त्रियों में नियमित होता, रुका रज जाता रहता है॥

(३) इक्ष्वाकुबीज (कड़वी तुंबी के बीज) + दन्तीमूल + पिप्पल + गुड़ + मदनफल + किण्व (सुरा की झाग) मुलठी + यवक्षार मिलित ८ मा. + थोहर दूध ८ मा. / आगपर पका बत्ती बना योनि में रखे॥ कुसुमसंजनी॥ रजोवरोध को

(४) रजःप्रवर्तिनीवटी —

{राम किशन हकीम कलकत्ता रोड (पट्टी) वैद्य किशन} ६८ नं. ८० : अर्श प्रवर्त

(१) चन्द्रोदय + अभ्रक + फौलाद + नाग + बंग + मोती (ये सबभस्में सदतालीस की बनी हुई हों) + इलायची छोटी दाना + लौंग + जायफल + महुआ के फूल + आंवला + सीमसेनी का फूट + कत्था + सोया के बीज + कटेरी फल इन सबको एक २ तोला लेकर [illegible] पिप्पल के रस में खरल करना, फिर एक दिन बकरी दूध में खरल करना फिर १ दिन खट्टी के रस में खरल करना। तीन २ रत्ती की गोली बनानी। एक गोली सुबह, एक गोली शाम को अर्क केवड़ा व गुलाब दोनों मिला के इसके साथ गोली देवो खून को शीघ्र बंद कर देती है। जो बवासीर किसी रोगी के हरमास या हर साल कभी २ दौरे बाद या सदा दौरे करती हो। उस बवासीर खोल की बवासीर को यह दूर करती है, जैसे पीसने के बाद भी ... हुए हाथी भी नहीं बचते, इस दवाई के ... बवासीर ... फिर कभी ... दौरा नहीं करता। जितने साल की बवासीर होगी उतना समय देनी होगी। अगर दवाई १०, १२ दिन ... भी ज्यादा दिन लाई जावे उतना ही अधिक लाभ होगा। इस दवाई से मस्से सूख कर गिर जाते हैं। भूख लगती है, खाना हजम होता है ... , चेहरे का रंग ... जल्दी ... करती है।

नोट — यदि बवासीर के रोगी को ... जाते हों तो ...

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ओ३म्

खीरा ककड़ी के बीज — २ तो.
धनिया — ०॥
सेवती के फूल — ०॥
गुलाब फूल — ०॥
कद्दू के बीज — ०॥
कुलफे के बीज — ०॥
कासनी — ०॥
खस — १ तो.
सफेद चंदनचूरा — १ तो.
कमलगट्टागिरी — १ तो.
सौंफ — २ तो.
कालीमिरच — २ तो.
13 सफेद मिरच — २ तो.
14 छोटी इलायची — १ तो.

मोटी २ दरदरा करलो / कमलगट्टों को रात को हांडी में भिगा दो। छील हरी पत्ती निकाल दो। फिर गिरी कुचल लो / फिर और दवाओं के साथ कुचलो / पोटली [illegible] कर लेना ताकि पीछे न पड़ जावे / जबान [illegible] १ तोला है। रात हांडी में १ पाव जल में भिगो दो प्रातः मल छान मिश्री डाल पी जावे।

१ तो. ठंडाई का दो पीस कर [illegible] में १ पाव पानी डाल छान लो।

यदि ये चारों चीजें डाल लोगे तो गर्मी में दोनों समय पीवो / सिर घूमना, चक्कर आना, दिल का धड़कना, [illegible] गर्मी वश नींद न आना, [illegible] हाथ पांव तलवे जलना, आंख जलना, पेशाब जलना, अधिक फिक्र या चिन्ता करना, क्रोध, [illegible] / गर्मी वादी के सब रोग दूर। उन्माद, [illegible] भी बहुत लाभ देखा है। [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भुन जाता है। गर्मी की लू हैजा नहीं होगा। यदि घुली भांग २ रत्ती छानलें तो हैजा लू न लगने पाती है। यदि इसके पीने से जुकाम होजावे तो जुकाम हटने तक न पिवें फिर पीवें। लेकिन लगातार रोज पीसकते हैं (१०, १५ दिन लेके इसे आजमाई है। ([illegible]

गण्डमाला पर मल्हम — (साधु)

एरंड फल + सिन्दूर + अमरबल्लरी ले। घोटित
(४ तो.) १ तो
करके तेलदार मल्हम बनादो। ७ दिन तक लगाने से गण्डमाला का निश्चय नाश होगी॥ साधु

-ॐ- स्वर्णसिन्दूर बनाने से पूर्व यदि रस शुद्धि को रतनजोत की १ पुट देदो तो फिर स्वर्णसिन्दूर जिलाने से भी सोना सा ही बनेगा काली नहीं बनेगा। हां नौसादर मिलाओ तो कलई पता लगजावेगी। दत्तरामजी महान

(१) १ हांडी में पुष्कल केली भस्म ऊपर नीचे भर बीच में ५ तो संखिया की टिकिया धर आठ पहर आंच दो। ठीक वजन में खील होगा। इसे चावल भर मक्खन में दो। लगाने को छिपकली को तेल में पका तेल लगाओ अथवा संखिया ही तेल में पका लगाओ। अनुभूत (अर्जुनमुनिजी)

(२) अपामार्ग जड़ + कालीमरिच पानी में पीस रोज प्रातः पिलावे ७ दिन से २१ दिन में समूल नष्ट हो गण्डमाला सिद्ध योग है (कृष्णानन्दजी)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रमेह (१०६)

(1) दाहिनी आटे का प्रमेह अच्छा होता नहीं भाई
खोटा का नहीं। शिंगरफ मल खिलाओ। मालकंगनी
की तेल की मालिश कराओ। मालकंगनी का तेल
कमाल की चीज़ है ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गंडमाला (१०८)

(1) सर्पभस्म

(1) सांपकी केंचुलीकी भस्म को कड़वे तेल में मिलाकर लगावें तो गण्डमाला को फोड़ता और दूर करता है (सुखेच्छ) (कु. मालती)

(2) काले सांप की केंचुली की भस्म + चिलम मलमल से मैंपोट गोलियां बनावें। पानी में घिस कर लगाने से शरीर के श्वेत दागों को दूर करता है। (कि.मा.) (मञ्जुलता गौतम १२ अ.)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(एंगुलिका) चन्द्रा फोड़ा, अंकोटि, चिप्प Vitule

(1) सांप केंचुली + घीकुआर में घिसके बांधदो ३ दिन लगाने से ही गल जायेगा। (बलदेव)

(2) या लालमिरच अति बारीक जल में पीस बांधदो।

(3) तलवार से कटे घाव पर अतिबला की जड़ की छाल का महीन चूर्ण डालो। डालते ही रक्त तुरंत बंद होगा। शतशः अनुभूत है (मुकुन्दलाल जी वैद्य देहली)

(4) क्षतव्रण पर बबूलारिष्ट के छींटे मारते हैं वा अपामार्ग पत्ररस डालने से भी तुरंत रक्त बंद होता है (शिवदयाल जी)

(4) चन्द्रा फोड़ा पैदा होते ही अंगेजी साबुन दिन में तीन चार बार थूक मिलाकर लगाओ। आराम होगा कील सी निकल जायेगा।
अन्त में जलन शान्त करने के लिये इसबगोल का लुआब लगाओ। ठंडक आवेगी। (हरद्वार [illegible] जी)। अर्थात जब फोड़ा निकल ही आवे घोर दाह हो तो इसबगोल को थोड़े पानी में भिगो जब लुआब बन जाये एक थैली में भरकर उंगली पर चढ़ादो। दिन में दो बार चढ़ावें। तीन दिन तक लगाते रहने से कील सी निकल कर दर्द दूर होकर बिलकुल आराम हो जायेगा। (हरद्वार [illegible] जी)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चातुर्थ ज्वर (२०८)

(1) नीमपत्र १०, हींग १ रत्ती, अफीम १ रत्ती,
चाड़कापर ३ रत्ती, गुड़ ६ रत्ती, इनकी
चार गोली बनावे। १ मंजिल १, २ से दिन २ गो
३ से दिन ३, ४ पौटि चा गोली ठंडे पानी
से देवे। खीर खिलावे। ५, ६ दिन खीर खिलावे
यह ओषधि १५ दिन तक ज़रूर देवे तो स्थिर लाभ है।
([illegible])

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(११०) ताकत की अपूर्व दवा   द्वारा म. गोवर्धनजी Photographer, बनिव,

आरम्भानिक भाव —

केसर	१ तोला	१॥)
सिंगरफ भस्म	१ तोला	१॥)
जायफल	२ तोला	।)
जावित्री	२ तोले	=)
लौंग	२ तोले	=)
दालचीनी	२ तोले	=)
अकरकरा	२ तो.	=)
पिप्पलामूल	२ तो.	=)
चिड़े की खिल	२ तो.	=)
मिन तेलिया	१ तो.	।)
नागरमोथा	२ तोले	=)
सोंठ	२ तोले	=)
कस्तूरी	१ तोला	५०)
मोती सच्चे	१ तोला	४०)
मुश्क अम्बर	१ तोला	१००)
भीमसेनी कापूर	१ तोला	२०)
चांदी के वर्क	३ तोला	५)
सोने के वर्क	१ तोला	४०)

पानपत्ररस —

३००) के लगभग खर्च पड़ेगा

इन सब चीजों का मिश्रण करके छानकर पश्चात लोहे की कढ़ाही में लोहे की मुंगली से एक सप्ताह बराबर रगड़ो। पश्चात उपरोक्त कस्तूरी को मिलाकर गोलियां कर छाया में सुखाकर एक गोली प्रतिदिन दूध के साथ खाओ।

(पान के रस में खरल करो, गोली १ रत्ती की होनी उचित है)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

— मूत्रलाना —

(1) तीन तोला एरण्डतेल को गर्मपानीमें मिला पिलादो २० मिनिटतक पेशाब बहुत आता है (देवराजजी)

अतिशपार्य

(1) गंधक तेजाब २ तोला + कापूर १तो. + नौसादर १ तोला। मोटी बड़ी चौड़े मुंह की शीशीमें डाल धूपमें रखे। उफनड़ेगी, फिटदो, फिर उड़ेगी। तीनबारकेबाद शान्तहोजायेगी। १५ मिनिट धूपमें रखें। आंखआदि बचावें। जुकामादि में सूंघें। धुआं ऐसा निकलेगा। (श्री कृष्णानंदजी लखनऊ)

बबासीर

1. निम्बबीजगिरी + बकायनबीजगिरी + एलुआ। समभाग मूलीरसमें गोली बना। दूधवापानी वा दही से सोतेसमय दोगोलीदो। गोली माशे भरकीहो। (विद्यानंद)

2.
मलेरिया सर्व ज्वरपर

करंज के बीज + कालीमिर्च + करेले के पत्ते समभागपानी से पीस २ रत्ति कीगोलीबनाओ। तीन चार गोली वा ६ तक भी गर्म ठंडेजलसे शीतसेपहले देवें। सब ज्वर द्र होते हैं॥ [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

औरंगजेबी फोड़ा —

(1) साबुनदेसी + राई + अलसी + खट्टा दही + नीलाथोथा गाजनी ५/ शीघ्र तक एक २ तोला / रगड़कर कागज़ीलगावे / शोधक है /
(हेमराजजी वैद्य)

(2) तुत्थ + गंधक + वैज़लीन हितुप्रयोग है / (डा.कृष्णलोहन)

(3) अरंडीपालककी जड़

(४) सांपकेचुली + आंबाहल्दी — दही

(५) कच्ची चोक घिसकर लगावें / फिर गुड़का हलवा बांधें /

काली मलहम — सिन्दूर ८ तोला, अलसीकातेल १ पाव दोनों को कड़ाहीमें डाल धीमी २ अग्नि दें / और नीमके सोटे से घोटते जावे / जब यह काला हो जाये तो उतारकर पात्रमें रखें, इसका फाहा जख्म पर चिपक जाता है और एक झिल्ली सी बना देता है जिससे घाव सुरक्षित रहकर आराम हो जाता है / यह प्राय. छोटे २ सारे व्रणों को शोधित रोपित करता तथा उत्तेलाभप्रद सिद्ध हुआ है / वैद्यराज रामजी मल बरेली. (आयु. सन्देश) २४अप्रैलजून

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(११२)

दद्रु —

शिगरफ + सिंदूर + कुष्ठ + आमलासार गंधक सम-भाग, धतूरे के जल में घोट सुखावें। पानी से तर करके कागजी पर लगा दद्रु पर लगावें। 2,4 दिन में दद्रु नष्ट करती है (श्री हंसराजजी वैद्य).

पटियाला

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

/ मल्हम (श्री दुनीचंद जी
कृपा से ज्ञात)

सरसों तेल १ छटांक + २ तोले राल लेकर डालो [illegible]
~~पानी से डालते जायें और हिलाते जावें। फिर पानी काट दिया जावे। इस प्रकार सौ बार पानी से धोवें। फिर ची को यो~~
~~ले~~ सुहागे की खील (Boric acid बहुत अच्छा होगा), [illegible]
२ तोला
कोल्ड स्पूटकटी + वीरोजा सफेद खील करके। इनको मिलाओ
१ तोला   दूर्त

इस प्रकार को अब १०० बार पानी से धोवे। जब तक नीला
पन न निकले तब तक धोता जावे। पानी सब काट दे।
बस मल्हम बन गई। जख्म को नीम के पानी या Mercury
lotion से धोके इस मल्हम को लगावे फिर न पानी
लगने देवे। इससे जलन खारिश, दाद, खाज आदि सब दूर
होते हैं। सिद्ध है।। पीप भी काटती है। बलम बनवदी

2. मल्हम (श्री दुनीचंद जी) जख्म जल्दी भर
बालूप   जाती है।
देशी तेल सरसों का तेल, मोम [illegible] अंगेजी सफेद
१ छटांक
नीम के पत्तों का पानी आधा तेल में डाल पानी जलादे फिर
मोम डाल दें। उतार कर सुहागे की खील १ तोला, नीला थोथा
खील करके मिला दो। मल्हम को मिला दे फिर १ पानी
ले मल्हम को मेंज़ सब को उलट दो और एक नल (लो) के ऊपर
डौले डाल बना लोगे। (इसको बहुत सी मल्हम पाओ) पहिले मल्हम से
आदि सभी दे मल्हम अधिक (१९५)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आदि लेकर मरहम आजम (५३३)

(३३५)

इसीको ~~सादकीचीजें~~ सुबह लगाने शाम तक होजा जलन ज्यौन, ज़ख्म को छुड़ा देगी। ज़ख्म ज़र्द में अच्छी। जले हुए पर लगाना हो तो आंवले के पानी से मिला कर लगाओ इसके बाद दादकी चीजें मिलाकर दाद पर लगाओ तो दादमें आराम होता है। (दुनीचंदजी)

नकसीर, हैज़ा, वमन

(1) केहू छाया में शुष्क + मिश्री समभाग बोतलमें भरलो खाते २ नकसीर बंद होगी

(2) किशमिश लाल छोटा + बूरा समभाग खाते २ नकसीर चुपचाप बंद होगी

(3) [illegible] बिंग को गोंद में मिलाकर छोटी २ गोलियां बना लो। वमन के हो तो बिना पानी के गोली निगलवा दो निगलते २ हैज़ा बंद हो जावेगी।

मुग़ली फोड़े की मल्हम

साबुन देसी
राल
गंडी चोक
} पकाकर यथो गुनमें घिसकर लगावें। पहले फैलता जायेगा, फिर फ़लता जायगा। २०,३० दिनमें आराम होगा

विद्यावती [illegible]
लक्ष्मीनारायण की [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रातशक (३३६)

कड़वा तूंबड़ा, नीम छिलका, कचनार छाल, बबूल फली पुनर्नवा. [illegible] कनुमारी। सम भाग प्रत्येक दूद तोला तीन लिटर पानी में भिगो दो माने उबालो। मल कर बोतल भर लो। इसे ७ दिन में दिन में दो बार पीलो १½ छटांक तक प्रात: सायं। पथ्य [illegible]। २ बोतल में आतशक गर्मी, रक्त विकार इत्यादि प्रबन्ध नाश हो जाता है। (महमूद खां [illegible])

×

(२) कोमल कड़वी तूंबी की जड़ का काढ़ा बनाकर बोतल में भरके २१ दिन पिलाया। ७, ७ दिन का दौरा करके बनाकर दी। लेकिन पारा बिलकुल आतशक जाता है (वैद्य चुन्नीलाल [illegible])

×

रक्तशोधक ——

पाठा + त्रिफला वटी + चिरायता + मुण्डी + उन्नाब + जूफा + सबके कच्चे २ तोले। कुल कूटकर दो दो तोले की पुड़िया बना। पाव पानी में भिगोकर निथारकर पीलें प्रात: काल। उसी में डालकर पानी मिलाकर शाम को पीलें। ७ दिन पीने से सारे शरीर के रोग प्रबन्ध दूर होंगे। आतशक का जनवाद भी दूर होगी।

(लाला रामशरणसिंह जी, [illegible] सोलन [illegible])

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(३६८)

प्रसूतारोगे — { वायु: प्रकुपित: सूतिं संरुध्य रुधिरं च्युतम्।
प्रसूता: हृच्छिरोबस्तिशूलं मक्कल संज्ञितम्॥

(1) यवक्षारचूर्ण गर्मजल या घी से पीवे तो मक्कल नाश होता है॥

(2) पिप्पल्यादिगण (सुश्रुत) — पिप्पली, पिप्पलीमूल, मरिच, गजपीपल, सोंठ, चीता, चव्य, रेणुका, एला, अजमोदा, सरसों, हींग, भार्गी, पाठा, इन्द्रजौ, जीरक, महानिंब, मूर्वा, अतिविषा, तिक्ता, विडङ्ग; ये गण कफमारुतनाशन:, गुल्मशूलज्वरहरो दीपनश्चामपाचन:। क्वाथो पिबेन्नारी लवणेन समन्वितं। मक्कलशूलगुल्मघ्नं कफवातिलहरं परम्

लक्षण

सूतिरोग — { मेदोऽङ्गमर्दो ज्वर: कम्प: पिपासा, गुरुगात्रता, शोफ: शूलातीसारौ
चतुर्थि वा सौम्यलक्षणम्" । ज्वरातीसार शोफाश्च शूलानाहबलक्षया:
तन्द्रारुचि प्रसेकाद्या: वातश्लेष्मसमुद्भवा: । मक्कुलाधयाहि रोगा:
क्षीणमांसबलाश्रिता: । ते सर्वे सूतिका नाम्ना रोगास्ते चाप्युपद्रवा: ×

सौभाग्यशुण्ठी —

पिप्पल्यादिगण

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(११८)

बच्चों के स्तनरोग पर प्रयोग

(१) अनबींधा मोती + नारियल की खोपड़ी + जहरमोहरा + तबाशीर + गुलाब का जीरा (किंजल्क) + कमलगट्टे की गिरी + वर्क चांदी + कीकर गोंद + सफेद जीरा + [illegible] पचीदाना (छोटीका) । सब चीजें एक २ माशा, मोती २ रत्ती । खूब घोटकर पानी या अर्क गुलाब से घोट मूंग समान गोली बनाओ । माता के दूध के साथ [illegible] तीन तीन के १ गोली दे बच्चे हि लेकर आराम करो (अनुभूत है) / (गं०)

(२) रीठा मरके पत्ते पानी डाल घोट दे । स्वल्प निचोड़ कर शर्बत बनाओ । इसे पिलाने से भी फूल इलेगा । (गं०)

(३) पुत्रजीवा की जड़ बारीक पानी से पीस कर ... तलुओं पर लेप करादे । ... दिन तक लगी रहने दे । फिर ... दिन न लगावे । फिर ... लगावे । २१ दिन में ... शुद्ध हो जाता है ।

(४) शुष्क मकोय का चूर्ण लगे पान में डाल चबा कर पी सलें । उसके थूक को पीकर मलें तो काले २ कृमि निकलेंगे । ... बच्चा सबला बंद हो जायेगा । (हरि ... गोपाल ...)

(५) कुकुरंडा का दूध एक कपड़े पर डाल गुदा में रखो । सब कृमि ... जायेंगी । ... तीन दिन ... कोई ... । सिद्ध है ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(४) कुक्कुटाण्डका [illegible] [illegible] जायेगी। [illegible] दिन तक [illegible] । सिद्ध है। [illegible]बाद

{ ५, ४ बार करनेसे बच्चा मोटा (११८) होजायेगा। (कुलानन्द वैद्य)

पुंसवन —

(1) गर्भाधान होनेके पश्चात् से विजयाबीज चूर्ण १ माशेसे ४ माशेतक प्रातः काल शीतलजलसे ४० दिनतक खिलाओ। पुत्र उत्पन्न होगा। कै आदि आवे तो मात्रा कमकरदो। सिद्ध है।।

(गंगाराम जी [illegible])

(2) मौलसरीकी छाल + खांड दूधसे प्रदर तथा गर्भस्थिर। पुत्र होता।
3 माशा
प्रतिवार्य है

(3) मौं

बच्चोंके सूखा रोगपर

→ (1) हरमाली (शायद हरमल) जो रेगिस्तानमें बहुत होती है उसे पीसकर थोड़ा २ बच्चे ओर स्त्री को पिलावो उसकी धूनी भी दो। सूखी हो तो रगड़कर पिलाओ या धूनी दो। ४० दिनतकले से बच्चा अच्छा होजायेगा। (भूदेवशर्मा वैद्य खेतड़ी जैपुर)

पि पपल्या दि गया — दोवो [illegible]

खूनी बवासीर - चन्द्रोदय (१२०)

(१) नागकेसर कालप्रयोग (२) काले तिल छिलके उतारे हुए १ तोला + मिश्री ६ माशा फांक उपर से १ छंटांक बकरी का दूध पीलो। अनुभव है॥

(३) धूनी दो, मोलसंढ [illegible] चमगादड़ [illegible] इनमें से किसी ७ दिन या १४ दिन तक धूनी दो, मस्से निश्चय ही नाश होंगे॥

(४) [illegible] (५) जातिफलादि वटी (और जामुन आदि के [illegible] नींबू रस में घोट लो) (६) प्राणदा गुटिका - अनुपान कमल में ४ तोला जिसमें १२ तोला दूध, शीतल जल [illegible] । बातमें मदिरा कांजी आदि। कफ में [illegible] ! (७) भल्लातक गुड़ - (नौ. [illegible] सुजाक (क) देवदारु [illegible] + नागकेसर [illegible] मक्खन में मिला लगाओ (ख) मक्खन तिल दूध मिश्री लेप (ग) घी + मिश्री [illegible] (घ) आंवलों के [illegible] और [illegible] जो पिये ये [illegible] अनुभव [illegible] करते हैं ।)॥ [illegible] (रक्त नाशक है):-

अर्श: कुठार - (शुद्ध पारा १ तोला + शुद्ध गंधक २ तोला) [illegible] २ तोला + फौलाद भस्म १ तोला) + (बिलगिरी १ तो. + बड़ी हरड़ १ तो. + चित्रक मूल त्वक् १ तो. + सोंठ १ तो. + काली मिर्च १ तो. + पीपली १ तो. + शुद्ध जमालगोटा १ तो. (ये सब पीस छानके एक २ तोला हों) + सुहागा खील ५ तोले + ५ तोले सैंधा नमक + जवाखार १ तोला ।

एक कड़ाही लोहे की में गोमूत्र ३२ तोले + थोहर का दूध ३२ तोले [illegible] को सब औषधियां बीच में डाल दो और मन्दी २ आंच से चूल्हे पर पकाओ। गाढ़ा हो जाये तो खरल में डाल घोटे और एक २ माशे की गोली बनाओ। रोज प्रातः काल १ या (२) गोली [illegible] सेवन करो। इससे बवासीर [illegible] [illegible] नाश होता है। [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(५५५)

(९) लौंग + कलमीशोरा समभाग मूली के रस में घोटे चने के
समान गोली सुबह शाम बवासीर वालों को खिलावें खूनी बादी बवासीर
आराम होती है। अनेकबार की अनुभूत है (मात्रा ४ गोली तक)

(१०) चिरचिटे की जड़ का चूर्ण + तिल + गुड़ मिलाना तीनों के चूर्ण को
जल या चावलों के धोवन के साथ सेवन करने से अग्नि खूब बढ़ती है
कोढ़ को नष्ट करता तथा बवासीर को तो जड़ से ही उखाड़ देता है ॥

(११) गाय का दूध आधसेर कटोरे में लेकर मुंह के पास रखें और एक
घूंट पीवें। उसी समय कोई दूसरा आदमी, फौरन ही, एक या आधे कागजी
जो नीबू काट उस दूध में निचोड़ दे और आप भट पी जावें। एक ही
दो तीन दिन करें। इससे बवासीर आराम हो जाती है और तीन दिन
में ही गुण दिखता है। परीक्षित है (बड़ा ही) चमत्कारिक उपाय है॥

(१२) चीता मूल ४ तोले जल में पीस कोरी हांडी के अन्दर लेप करा
मटका लो इसमें दही जमा सवेरे दही को बिलोकर मट्ठा
तय्यार करके इस मट्ठे को 21 दिन तक सेवन करो। [illegible]

(१३) गिलोय रस को मक्खन में मिलाओ। मात्रा ४ रत्ती से २ माशे

+ मस्सेनाशक —

(1) पाव भर फिटकरी बारीक + घी मल्हम बना लो।
ऊपर २ तोला तोरई के बीज जल में पका पीस लो, पहिले इस
लुगदी को गुदा पर बांधो। इसके बाद यह फिटकरी की मल्हम
रुई के फाहे पर लगा, उस के ऊपर रख दो। फाहे पर पान रख कर
लंगोट कस दो। ७ दिन तक इसी तरह करके लंगोट लगाओ। सुबह
का लंगोट शाम को शाम का सुबह खोलो। दवा दोनों समय ताजा
लगानी है। [illegible] मस्सों से पुरानी बवासीर निश्चय आराम हो
जाती है। परीक्षित है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(१) नहरुआ? शीसमतैल लगाओ, अधिकहो तो पिचकारी लगाओ वलिंगों मेंभी कोई हानि नहोगी ।

(2) प्रतिसारणीयक्षार १तोला + गोघृत ४तोला । इससे पोट १मास मलो । मस्सोंपर थोड़ाथोड़ा लगाओ । ८, १०दिन में मस्से और मांसमें विशेषकष्ट भी नहोगा । (विनरक्षारकेही ५मिनटमें गिरजाते हैं ।

इसके सिवाय रालकोलेतेलिय ६माशे कपूर + आधपाव आमले लेकर एक कुल्हड़ में आग रखकरउसपर डालतेजाओ धुआँगुदा कोदो चारोंओर चादरतानदो ॥

+ प्रतिसारणीयक्षारनिर्माणविधि +

पावभर लोटासज्जी + आधसेर अनबुझा चूना दोनोंकोमिट्टी की नांदमें डालो, ऊपरसे १० सेर पानीभरदो । उण्डेसे खूब हिलादो । फिरखुले मैदानमें धूपचांदनीमेंरखो । दिनमें ३, ४बार उण्डेसे खूब हिलायाकरो । ५दिनतक रखो ।

छटेदिनऊपरके जलको लोहेकी कड़ाहीमें डालआगपर पकाओ । जब जलते २ आधासेर पानीरहजाये तब लहसनका 'चारतोला' रसउसमें डालदो । मन्दी २ आगसेपकाओ । जब लगभग १६ तोले पानीरहजाये उतारकर ठण्डा होनेदो । "यही प्रतिसारणीयक्षार है" इसका रंगलाल, चिकना, जहांलगाओगे वहीं जख्म करदेगा । थोड़ा लगानेसे आबलाया फफोला करदेगा । इसे शीशीमें भरदो । हाथकी प्लेगकीगांठ या फोड़े कीगांठपर जहां नश्तरबिना कामनचले इसेलगादो । यह उन्हें फोड़ बहादेगा, रंगबदलाकर देगा । महीनेबाद चमड़ा अपने रूपमें ठीक होजायेगा । लगाने से दर्द अधिक हो तो सौबारधोयाघी लगाओ । शरीरमें कहीं मस्सेहों, नवाबीरकैमस्से, सफेद कोढ़के दाग, गजचर्मदाद कीजगह साफकरनाहो तो इसे चुपड़दो । [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

गलनीरा का रमचिदत के [illegible] हो लेना चाहिये॥ सोमिल

प्रातः काल खोलने को दना लो, रात को [illegible] । सोमवार ॥ १९२२

(3) संखिया ६ माशे + आमलासार गंधक १ तो. + हड़ताल
१ तो. + हरड़ १ तो., इन चारों को कूटपीस १ मिट्टी कोल्हड़
में रख सम्पुट कर कपड़ मिट्टी करके सुखा लो। फिर १५ मिनट
तक चूल्हे पर रखो। इसके बाद उतार दवा को ले लो।

फिर तवे पर दो तोला घी डालो उसमें सलाई की दवा
डालकर ६ घंटे तक घोटे। और बाजरे के समान गोलियां
बना लो। एक गोली नीबू के रस में घोट कर मस्से पर लगा
दो। इस लेप के लगाते ही मस्से जड़ से उड़ जाते हैं। इहाँ
प्रकार की बवासीर और भगन्दर इस दवा से जड़ से नाश हो
जाते हैं। महदनाड़ [illegible] की लिये अक्सीर जैसी है॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सूजाक

चिकित्साक्रम—

(१) पहिले विरेचन दो। एरंड का तेल वा सनाय+गुलाबजवान करदो। फिर पेशाब का विरेचन दो।

(२) ककड़ी के बीज ३ माशे+कलमीशोरा १½ माशे, इन दोनों को पीस कूट फांक जाना चाहिये, ऊपर से तुरंत १ पाव गाय के कच्चे दूध में १ पाव जल डालकर तोड़ कर पीजाना चा.। पेशाब लाने में यह नुसखा परमोत्तम है। पहले खड़े २ पीना चा. पीकर बैठना न चाहिये किन्तु टहलते रहना चाहिये। इससे सूजाक की गर्मी एक दम निकलकर सोजाक में बड़ा लाभ होता है॥

(३) २ तोले शीतल चीनी जौकुट करके १६ तोले जल में उबालो। दो तोले बचनेपर छानकर ठण्डा होनेपर सफेद चन्दन का तेल ८, १० बूंद डालकर पीजाना चाहिये। प्रात:, दोपहर, शाम तीन बार पांच दिन तक पीने से पेशाब की जलन मिटजाती है, पेशाब साफ होता तथा सोजाक के जख्म मिट जाते हैं। (गेहूं की पतली रोटी+घी+चीनी [illegible] पथ्य है)

(४) यह नुसखा तो सूजाक को आराम ही करदेता है॥

नो. नारायणतेल जल के स्नान करना और अधिक पानी पालक लौकी [illegible] पीना पथ्य है। यदि ज्वर हो तो स्नान न करावे॥

(इस रोग में पोटाश, तेज खार [illegible] है। ८, १० दिन के बाद पिचकारी लगावे पहिले नहीं। रोग मिटने ही खून साफ करने की दवा दो। और [illegible] के बाद इस विशेष नुसखे को दे ४०/५० दिन तक। तो इस रोग की जड़ ही कट जाये॥)

(५) नुसखा निम्न — गिलोय सत्त्व १ तोला, दिल्ली की सफेद मुसली २ तोला+दरियाई नारियल २ तोला+मखाने की ठुर्री ४ तोले और देशी मिश्री ५ तोले — सबको पीस छान छ: छ: माशे [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible] नष्ट होते हैं। धातु विकार, मूत्र दोष, वीर्य का जल्दी छूटना, स्वप्न दोष

नाशकहोतेहै। धातुविकार, मूत्रदोष, पेशाबकाजल्दी छूटना, स्वप्नदोष

आदि आराम होतेहैं। सोजाक आरामहोनेकेबाद इसे ४० दिन खानेसे फिर सोजाक नहीं होता और शरीर खूब बलवान होजाताहै।

(७) केलेके तनेका रस ताजा दिन में ३ बार चार २ तोले पिलाओ। इससे सुजाक, पेटकेकीड़े, सर्पविष, बिच्छूविष, सूजन, खांसी, श्वास, उन्माद, पीलिया, कामलापित्तविकार, दाह, मूत्रदोष, तिल्ली, रक्तपित्त, अतिसार, जलकीगर्मी, रक्तजमाव, जलोदर, शीतपित्त, पीलपांव, उदररोग, योनिरोग, प्रमेह, उपदंश, । संखिया, हड़ताल, पारेकेविष, बिच्छू, चूहेके विष तथा हजारों भयंकर रोगों के बीज नाशकरताहै।।

(८) मेहंदी ६ तो. + शीतलचीनी ६ माशे + कपूर ६ रत्ती कूटछानकर ३ माशे मात्रा दो २ घण्टे बाद खिलाकर ऊपरसे जल पिलादे, जलन, तकलीफ, पीपादि बहना तथा सोजाक आरामहोजाताहै। (उदितवर्णन हरिद्वार)

(९) कलमीशोरा १॥ तोला, इलायची ½ छटांक, शीतलचीनी आधपाव, फिटकरी ६ माशे, मेहंदी ६ माशे, कपूर ३ माशे। इनको महीनपीसकर शीशीमें रखो।

इसे तीन माशामात्रा। दिनमें ६ बार दो २ घण्टा अन्तरसे शीतल जलसे दो। निश्चयही ११ दिनमें आरामहोजाताहै। (आराम न मालूम दे तो फिर कुछदिन भी करे)।।

(१०) असली चन्दनकातेल + बिरोजेकातेल दोनोंकी १०,१० बूंद बतासेमें डाल खिलाओ ऊपरसे थोड़ा गोदुग्ध पिलादे। प्रातः सायं दो बार दो। रोगघटतेही मात्राभी कमकरदे। पहिलेदिनसेही लाभ होगा। ८/१० दिनमें तो लाभहोताही।।

नो. पेशाबकमहोताहो तो शीतलचीनीकातेलभी १० बूंद मिलादे। ५०० रोगी आराम किये। कितने २ की मियादका भी देखीपढ़ी।।

(११) उत्तेजना अधिक होनेसे घाव तड़क जाताहै। अतः रातको अफीम १ रत्तीभर और भीमसेनकपूर ४ रत्तीभर खाओ। आवश्यक होतो प्रातः भी दो।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(१२) सिरस के नये पत्ते १ तोला पीस के, आध पाव जल में घोल कर दो तोले मिश्री मिलाकर पी जाओ। सोजाक चला जायगा। परीक्षित

(१३) ६ माशे राल और ६ माशे मिश्री खानेसे पेशाब के साथ का खून आना बंद होजाता है॥

(१४) कलमी शोरा ६ माशे + बड़ी इलायची के बीज ६ माशे। मिला लाल सांठी चावल के धोवन के साथ तीन दिन सेवन सोजाक जरूर आराम होजाता है। परीक्षित।

(१५) कतीरा गोंद १ तो. + चीनी कच्ची १ तो. गाय के पाव भर कच्चे दूध में मिला निहार मुँह प्रातः पीनेसे पुराना सोजाक भी चला जाता है ११, या २१ दिन में आराम होगा॥

— पिचकारी

त्रिफले के काढ़े में लिंग को भिगोडले या काढ़ा गरम कि हुआ और डालनेसे घोड़िया छूजन ६, ७ दिनमें हट जाती, मुंह खुल जाता है।

1. हरड़ १ माशे + लौंग १ माशे, पपड़िया कत्था १ माशे॥ सबको आध छटांक पानी में रातको भिगो दो। सवेरे छानकर पिचकारी करो। इससे सभी उपद्रव शान्त होते हैं। साथ २ दवा खाने से शीघ्र लाभ होता है। (परी.

(2) सफेद कत्था २ तो. + अफीम १ रत्ति + मेहंदी के पत्ते २॥ तोले + लौंग १ तोला। इन सबको रातको ५ पाव भिगोदो। प्रातः छान पिचकारी करे। यह एक दिन बीच या तीन दिन तक काम देती हैं॥

(3) नीम की ताजा पत्ती १२ तो. त्रिफला २० तो. धनिया १ तो. अफीम ६ माशे। सबको अधकचरा करके रातको ३॥ सेर जल में भिगोदो। प्रातः हो आगपर जोशदो। आध सेर कम जल रहनेपर उतार कर छान लो बोतल में भरलो। पिचकारी की यह दवा निहायत अच्छी है। परीक्षित

(4) Sulphate of copper १ चावल भर १ छटांक जल में घोल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पेशाब खोलने और सूजन नाश करने के उपाय (१२६)

(1) चूहे की विष्ठा 2 तो० कलमी शोरा 1 तो० पानी से पीस, गुनगुना कर, नाभि के नीचे लेप करने से पेशाब खुल जाता है।

(2) कपूर या शोरा या जूं या खटमल पीसकर लिंग में रखो।

(3) रेवन्द चीनी 1 तो० सौंफ के अर्क में घोट नाभि के चारों ओर गाढ़ा लेप करने से पेशाब खुलता है।

(4) मुट्ठी भर टेसू के फूल उबालकर सुहाते 2 गर्म नाभि के नीचे पेडू पर बांधे। पेशाब होगा।

(5) कलमी शोरा + टेसू फूल दोनों जल से पीस पेडू पर लेप करे। पेशाब हो।

(6) मूली पत्ते रस ½ सेर + शोरा 3 माशे मिलाकर पिलादे। पेशाब हो।

(7) नाभि तक गर्म जल में बिठादे। या इन्द्रिय और मूत्राशय पर गर्म जल की धार देवे।

(8) कभी 2 Soda water पीने से भी पेशाब होता है।

(9) राई 4 रत्ति + शोरा 4 रत्ति + मिश्री 1 माशे। पीस छान खाने से ही फांके पहुंच जाता है।

(10) मेंहदी की पत्तियां पीस छान पानी में छान कर मिश्री मिलाकर पीओ।

(11) मकोय के गुनगुने दूध में इन्द्रिय रखो।

(12) सोंफ पीस नाभि के नीचे लगाओ।

(13) शहतूत के रस में शोरा पीस नाभि के नीचे पीसकर लगाओ।

(14) लाहौरी नमक गुदा में रखो।

(15) पेठे के बीज पीस नाभि के नीचे लगाओ।

(16) रत्ति 2 रत्ति कपूर खाओ।

(1) नीम के पत्ते या मोहरुके जोड़े उबाल उसकी भाप का इन्द्रिय को लगवादे। प्रातः 2 ऊपर गर्म कपड़ा ढांपो। इस उपाय से सूजन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुष्ठ गांठ (१२०)

(1) शीतलचीनी २ तो. + देवदारचीनी १ तो., कलमीशोरा १ तो. कच्ची फिटकरी १ तो. + छोटी इलायची के दाने १ तोला। कूट पीस छान। ४ माशे साथ दूध कच्ची लस्सी के दिनमें दो बार दो २ घण्टे बाद दो कुष्ठ गांठ दशानुसार, जिससे पेशाब रुक २ आता हो पीप व मवाद आता हो आराम हो जाता है। [illegible]

(2) ३ माशे या ६ माशे शीतलचीनी चूर्ण (आमले के पेय जाती) ४० या ६० बूंद मिलाकर इसके दो भाग करो। सवेरे शाम एक २ भाग दवा ३ माशे घी, ६ माशे शहद और ८ माशे मिश्री के मिलाकर चाटे। इससे, पुराना पीप बन्द हो जायेगी

श्रीयुत साधु कृष्णदास जी (महात्मा का प्रकृत्य गोप्यतम)

(1) महामरिचस्य बीजान्येव जले [illegible] रक्षयेत। [illegible] दिनत्रयानन्तरं तानि हस्ताभ्यां मर्दयेत। पश्चात् जले निमज्ज्य [illegible] ऊपर तु वृक्षाणि आगमिष्यन्ति। निमज्ज्य बीजानि संगृह्य संशोध्य च संरक्षयेत। एक छटांक प्रात: काल औषध को १ पाव जलमें डाल घोटकर पीवे। ८ दिनमें जड़मूल से उखाड़ देता है। १ तोले (या ४ तोले जहांको देवें) इससे बढ़िया नुसखा असंभव है। इसको वातव्याधि, वीर्य दोष भी दूर होते हैं।

मलहम ज्यात का

(1) पीली कौड़ी की भस्म + सुपारी की भस्म + कत्था तीनों को कपड़छान कर शतधौत गोनवनीत में मिलाकर लगावे ३, ४ दिनतक में॥ (साधु श्री पं. कृष्णदास जी)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उपदंश, गर्मी

पारा शुद्ध लो। उपदंश में पहिले जुलाब अवश्य दो। शीतल दवा कभी मत दो। पारा की दवा को दांत मत लगाओ। मुंह या छाले पड़ें पर (1) कचनार त्वक (2) चमेली पत्र + कचनार त्वक (3) चमेली पत्र त्रिफला + बबूल + दारुहल्दी + गिलोय + मुनक्का इनका काढ़ा बनावे शीतल कर शहद मिला कुल्ले करे यह कुल्ला मुख के घावों पर चमत्कारिक है और फैल नहीं होता। यदि इस क्वाथ से आतशक दिनों की भी हलन करते जाय तो सोने के समान हो जावे।

घाव हो जाते हैं शरीर फूटने पर — शुद्ध गंधक 3, 4 रत्ती घी से या १०, १५ बूंद राल का तेल दूध से दो। कत्था + कपूर + सिंदूर की मरहम घाव नासूर के हो में लगा दे। नीम जल से घाव धुलाओ। अर्क खून सफा पिलाओ। चर्मरोग नाशक तेल की बदन पर मालिश करे। इस तेल की दो २ मालिश ही शरीर, अर्क खून सफा पिलाकर हमने ऐसे रोगी आरोग्य किये जिन्हें डाक्टरों ने असाध्य कहा। लाल फूंदे चकत्ते इससे सब नाश हो जाते हैं। (बादी गुम्म, भगन्दर सूजन शोथ के रोगों का सफाया है। ॥

" उपदंश की बद पक जाती हैं और बद प्राय: नहीं पकती। कुण्डकूप बद में विशेष अन्तर नहीं (कुण्ड में पीप नहीं होती, इसमें होती है और

(परम सिद्ध योग आतशक)

(3) न मुंह न पस्त — साधु श्री पं. तक प्रसाद जी

लाल मिरच के बीज २ तोले + रस कपूर १ तोला दोनों को महीन पीस बकरी दूध में खरल करो तीन दिन तक जितना खपे खपावे। फिर दो २ रत्ती की गोली बनावे। गाय का या भैंस का दही लेवे। दही की मलाई में दो गोली लपेट निगल जावे ऊपर से पाव भर दही या आध सेर पी जावे निराहार मुंह। दूध चावल पथ्य। लाल मिरचा चार बंद १० से १४ दिन में आरोग्य॥ X. कनफटा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(खानेकी दवा)   उपदंश आतशक (१२८)

(1) मुण्डी + गिलोय चूर्ण प्रात: सायं चार 2 माशे नियमपूर्वक खाने से (या इनका काढ़ा) उपदंश, वातरक्त, कोढ़, पारे के विकार नष्ट होते हैं

(2) गिलोय के काढ़े में एरण्डी का तेल मिलाकर पीने से उपदंश का (1 पाव 2 तोला) शोधन आराम हो जाता है (त्वचा के बिगाड़ में तेल दो) पर यदि व्रण हों तो गिलोय के काढ़े में गुग्गल मिलाकर लो। [illegible]

(3) पोटाश आयोडाईड — आधा ड्राम
लाइकर हाइड्रार्ज परक्लोर — एक औंस
एमन क्लोराईड — एक ड्राम
स्पिरिट [illegible] — एक औंस
} इन सबको मिला शीशी में भरलो। दिन में तीन बार एक 2 ड्राम दवा सेवन करो उपदंश दूर हो जाता है

(4) मदार की जड़ 20 माशे, काली मिर्च 10 माशे। ज्वार समान गोली बनाई बारीक पहले। आतशक उपदंश नाशक है (40)

(5) घावों में कीड़े पड़ जाने पर रविवार को बेल पत्र लाकर जल में घोट छान पीलो। 15 मिनिट में सब कीड़े गिर जाते हैं। पशुओं को भी मात्रा अधिक दो।

(6) इन्द्रायण की जड़. आध पाव कूट कर जल में भिगोओ। चौथा बचने पर मल छानकर आधा सेर एरण्डी के तेल में डाल मन्दाग्नि से पकाओ। तेल शेष रहने पर। 15, 20 माशे यह तेल गोदुग्ध में मिला कर प्रात: सेवन करो। दो तीन दिन में आतशक आराम होगी। पथ्य — मूंग की खिचड़ी ॥

(7) शुद्ध शिंगरफ, माजूफल, आक की जड़ और भांगरा सब सम भाग चूर्ण कर 2 माशे चूर्ण चिलम में तम्बाकू की जगह रख ऊपर से [illegible] [illegible] हो जाता है। कोई फर्क नहीं होता ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लेप, मल्हम (१३०)

1. त्रिफलाभस्म + शहद (२) अनारछाल पीसकर लगानेसे मुंहके छाले

(२) मुर्दारसंग २० तो. गोघृत १० तो. + सिंदूर १ तो. + गंधक १ तो. + राल १ तो. + कत्था १ तो. + नीमपुष्प १ तो + चूल्हाधुंआसा १ तो. । इनको मंदाग्निसे पकाओ। घृत शेष रहनेपर छानकर शीशीमें रखो। इसके लेपसे कोढ़, नासूर, उपदंश। सब तरहके घाव दुष्ट आराम होते हैं म.प.

(3) सिरसकी छाल पानीमें पीसकर रसौंत मिलाकर घावोंपर लेप करनेसे उपदंशके घाव मिट जाते हैं। (चि).

(४) मजीठकी जड़ पानीमें पत्थरपर घिसकर लगानेसे उपदंशकी मुलायम पीड़ा भी निःसंदेह ही मिट जाती है। [illegible] है। चि

(५) रसौंत + हरड़ पीस शहद मिला लेप करो।

(६) सिरसकी छाल चूर्ण शहदमें मिला लगानेसे

(७) घाव धोकर पूंछकर "कलितचूर्ण" बुरकनेसे फौरन आराम होते हैं

(८) नीमपत्र घीमें भून उसीमें मोम मिला मल्हम बनालो। कीड़े पड़े घावोंको नीमजलसे धो इसे लगानेसे आराम होते हैं। चैन पड़ जाता कीड़े मर जाते, पीप आना बंद होजाता है। [illegible]

(९) लालकपूर १ भाग + २००० भाग पानी इस Lotion से धोनेसे घाव भरते हैं

(१०) तिलतैल ५ तो. गरम करके उसमें १ तो. मोम मिलादो। फिर उसमें कमीला ६ माशे, नीलाथोथा ६ माशे, बड़ीहरड़ चूर्ण ६ माशे इनको महीनपीस चूर्ण करके इस तेल में मिलादो। खूब मिल जानेपर आग से उतार शीशीमें रखो। इससे उपदंशके पुराने घाव भी मिट जाते हैं। चि.

(११) जो फोड़ा फूटकर बहता हो। उसपर कड़वे नीमका पत्ता पीसकर उसमें थोड़ासा शहद मिलाकर लगानेसे वह आराम हो जाता है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(१) पीपल के पत्ते, या निसोठ के पत्ते या संभालु के पत्ते, गर्म करके (सीसोलीके) गर्म गुनगुना करके बांधने से प्रायः बद बैठ जाती है।

(२) केले की जड़ कमल मूल में पीस गरम कर कपड़े पर लगा बांधो। अवश्य लाभ होगा।

(३) पीपल का पत्ता दो टुकड़े उसपर तेल हल्दी पीस करके दो घड़ी आग पर गर्म करके बांधो। बद बैठ जायगी।

(४) आंवला - चूना + शहद मिला कपड़े पर मल्हमवत् रखके बद पर बांधो, बद बैठ जायेगी। परि.

(५) कुचले जल में घिस काली मिर्च मिला गुनगुना लेप करो बैठ जावेगी।

(६) प्याज काटकर छोटे बच्चे के पेशाब में पकाकर खूब गलाओ जब गल जावे टिकिया बना बद पर बांधदो। निश्चय बद बैठ जावे।

(नो. तुलसीपत्र + एरण्डपल्लव + नमक पीस गरम करके कपड़े छोटे कर ऊपर लेप कर रखो आराम होगा।)

(७) कौंच बीज जल में पीस दिन में २, ३ बार लेप से बद बैठती है।

(८) कलिहारी गांठ का लेप करने से बद, घाव, कंठ माला और फोड़ा आराम होता है। परि.

(९) तुलसी का लंगा पानी में भिगो कपड़े पर बिछा बद पर लगा देवो यह चिपक जायेगा। बद बैठ जाती है। पीड़ा, सूजन, लाली, दाह शान्त होती है और फोड़ा बैठ जाता है। पका हुआ फूट जाता है।

(१०) नाल सारंग के गन्दे बिरोजे का शीरा कपड़े पर लगा चिपका दो।
(११) ... लगावे (१२) कलमी शोरा ३ तो. माती ३ तोले मिला कपड़ा तर करके बद पर रखो। २, ३ बार ... (१४) ... (१३) ...

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(13) हल्दी, मोहे, पीपल पानी में महीन पीस लुगदी बनाओ इसे एरंडी के तेल में भून सेंधा नोन मिलाकर लेप करो। नित्य मही बंद का रोग आराम होगा। (तथा ही) गोमूत्र में देवदारु पीसगर्म कर बंद पर लेप करो। इससे बंद आदि पीड़ा शान्त होगी। इसका उपयोग करने में आराम है।

(१४) उठती बंद पर गिलट पर चीते की जड़ पानी में घिसकर लगाने से आराम होता है। (क्ती.

(१५) कुचले के पत्ते + सोंठ + सांभर नमक + सीगं। इनको एक जगह पीस लेप करते हैं। प्राप्त बात — गठिया, पक्षाघात, दाहित्र और चूहे का विष नष्ट होता है।

(१६) अलसी के चूर्ण में दूध या पानी में ल जरा सी हल्दी मिला पका गर्म पुलटिस बंद पर रख कर ऊपर से पान पत्ता बांधदो। इससे बंद फोड़े आदि गांठे सब फट जाती हैं।

(१७) आटे की पुलटिस सात आठ दस दिन में बांधो। फूटने पर शतावरि का मरहम लगाओ।

(१८) जोंक लगाने के बाद नीम पत्ते पीस कर बांधते। अलग पोस्त का काढ़ा बना २ कर उसमें कपड़ा भिगो २ कर सेंक करते रहो। तीन चार दिन ऐसा करने से दर्द बंद मिट जायेगा।

(१) नारायण तेल, महामाष गठिया नाशक उपाय।

(1) तम्बाकू पत्ता $\frac{1}{2}$ सेर, $2\frac{1}{2}$ सेर जल में रात को भिगोदे। सवेरे मल कर छान लो। इस पानी को आधे १ सेर तिली के तेल में डाल कड़ाही में पकाओ। तेल शेष रह जाने पर उतार। मालिश होगी, जोड़ों का दर्द आराम होते हैं। (गठिया ...)

(2) धतूर पंचांग १$\frac{1}{2}$ पाव लुगदी बनाओ। सरसों तेल + तिल तेल + एरंड ...

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भीमसेनी कपूर — कपूर ८ तो. + छो. इलायचीदाने २ तो. + समुद्रफेन १ तो. + रसौत १ तो. + केसर ६ माशे, कस्तूरी ३ माशे, नागकेसर १ तो. + निर्मली (कतक) १ तो. + मुरदार १ तोला। इन सब चीजोंको गुलाबजलमें बारीक पीस १ पूरी की तरह चौड़ी टिक्की बनाले कांसीकी थालीमें रखके ऊपरसे कांसीका कटोरा ढांकदे और उसे चूनेको पानी (गरमपानी) में सानकर सन्धमें मुद्रा करदे। नीचे घृतका दीपक जलादे १ पहर आग दे। अग्नि कलिका तर्जनी उंगली समान मोटी हो। ऊपर जलमें भीगा हुआ कपड़ा (?) रखते करके ढांकदे। [illegible] करता है। एक पहर बाद उतार लेवे भीमसेनी कपूर को निकाल ले। नेत्राञ्जन या चन्द्रोदयादि रसोंमें डाले। यह नेत्रोंका परम हितकारी तथा शरीर का पोषक है॥

(२) मुंहके छालेमें पकने आदि में — भुनी तूतिया + गेरू, १ छटांक जल गुनगुने में मिलाकर दो मिनट लेकर कुल्ला करने से मुंह के छाले जाने रहते चमत्कार होता है॥

(३) सफेद लाल कोढ़ — प्रतिसारणीय क्षार रगड़ कर (घुमड़ते ही चमड़ा उतर जावेगा) हरिताल + चित्रक + कासीस + त्रिफला + गन्धक सब समान भाग जल में पीस लेप करे। सात दिन लेप करने से सफेद लाल कोढ़ आराम होता है। चमड़ा उतरने के बाद लेप करना अच्छा है। रोज [illegible] क्षार लगाने की आवश्यकता नहीं॥

(४) दाद — सिरकेके तेल में गन्धक घोट दाद पर लगादे धूप में बैठे तो दाद तीन दिन में जल भुन जावे। (२) अपना जल में चौकिया सोहागा पीसकर लगाया करे॥

(५) [illegible] — [illegible] हरड़ चूर्ण + कायफल चूर्ण [illegible]
[illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(२३४)

नुसखा कालामरहम. (लखनऊ पंडित रामरोशन लाल)

मीठा तेल ऽ१ सेर
सेन्दूर ऽ॥ आधसेर
कौड़िया लोबान ६॥ तोले
मुरदारसंग ६॥ तोले
सफेदा ऽ॥ आधसेर
नीमकीपत्ती ऽ॥ आधसेर

आधसेर नीमकी पत्ति लेकर उसे पीसे और उसीकी टिकिया बनाकर मीठे तेलको कड़ाहीमें चढ़ाकर उसमें डालदेवे। जब टिकिया जलकर काली होजावे तो उसे बारीक पीसकर कपड़छान कर उसी तेलमें डालदेवे उसके बाद लोबान व मुरदारसंग पीसकर डाल देवे। फिर सिन्दूर और सफेदा डालदेवे और उसको नीमके सोटे से चलावे जब काला होजावे तब उतार लेवे ॥

नुसखा नासूर (mrs बख्शी)

रामरोशनलाल जी मैथिल

सफेदा काशगरी ४ १ तोला २ रु., मोमखालिस १ तोला, सिंदूर ३ एक तोला, मुरदासंग २ १ तोला, तूतिया २ मा., नीमके हरेपत्ते १ छटांक, शलगमहरे आधसेर, तेल सरसों खालिस १ पाव | नं. १, २, ३ को बारीक पीस कर कपड़े में डाल छान लेवे ॥ (नोट - इसमें मोम मिलादो ताकि जमेगी

सात टुकड़े शलगमके काटके तेलको कड़ाहीमें गर्म तेज होनेपर डालदे जब टुकड़े शलजमके जलकर कोयला हो जावें तब निकालकर फेंकदेवे। फिर सात टिकियां बारीक नीम को पीसकर बनालें उन्हें भी तेलमें छोड़दें जब वह भी तलनेपर काली पड़ जावें तो किसी लोहे की कड़छी या मुसलीसे हल करें। जब पत्ते कुछ हल हो जावें तो नं १, २, ३, ४ तक दवाइयां तेलमें छोड़दो फिर बराबर हलकी आंचमें हल करते जावें याने आग तेज न हो। कड़ाही कड़छी दोनों लोहेकी होनी चाहियें। और दोनों चीजें साफ हों। कई घण्टे हल करनेके बाद जब तेलमें खूब चमक आजावे तो समझो दवाइयां पक गईं। यह ख्याल रहे कि कच्चा मलहम न उतारा जावे वरना नुकसानदेह होगा। तेलमें चमक आनी ही पहचान पकनेकी है। नीचे उतारकर मोम हलके गर्म रहनेपर उसी मरहममें हल करें तो तय्यार होगया। (मैंतीला [illegible] हलकी बढ़िया [illegible]

(इसमें सिंदूर १ माशा, मोम २ तोला, तेल २ छटांक लिखा [illegible] मिलाकर तैयार करते [illegible] इसके

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नुसखे क्षयरोग — (१२५)

१०तोला
(1) खपराजस्त — संखिया १तोली + बेरीकी लकड़ीकी राख
१०तोला दोनोंको खूबही कपड़छान करके घीकुआर के रसमें
खूबघोटो फिर दो २तोलेकी टिकिया बनाकर धूपमें खूब
सुखालो। फिर फुपकड़ेकी राखकरके छलनीवा कपड़ेमें
छानकर एकलेलो। आधीसेकम नीचे रख दबाकर
ऊपर दो टिकियां (oo) फासले से रखकर ऊपर फिर
राख डालकर दबादो। फिर चार पांच पहरकी आंचदो
प्रातः सूर्योदयसे पूर्व उसके बदलकदो। मन्द मध्यम
तीव्र आंचदो। फिर निकाल लो पीसकर २ चावलभर
शहदमें मिला प्रातः सायंदो। तपेदिक हजारोंवाली
खादो॥ तीन चार जवगल जगी अच्छे हो चुके हैं॥
ऊपरवाले योगमें नीम के १०० का [illegible]
काली) चवनबेच

→ निष्ठीवनादि पर —

(1) चन्दनादि चूर्ण और उशीरासव अव्यर्थ हैं। (नाकुदत्त जी)
(2) बबूलारिष्ट भी अव्यर्थ है। (शिवदयालजी)
(3) दन्तीचूर्ण शीतलजलसे अव्यर्थ है। (ब्रह्मचारी [illegible])

बिनाराख मिलाये तोली संखिये को प्रपापाणी
सम्पुट में रखकर फुकाने से, भस्म बनता है
2 दफा फुकाना चाहिये॥ राख वाले
का वजन बहुत कम हो जाता है॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

१३।१२।१९ पता माहिगवा नरसिंहदास जी बत्तीहट्टा अमृतसर (२३६) स्वा० कृष्णा दास जी

ज्योति वर्धक अवलेह।

दो तोले भरकी वैशाखकी छूटी भारी हरड़ें लेकर १२ हरड़ें लेवे। उनको गौघृतमें भूने। नकचीर हे न जलें। मन्द २ आंचसे भूने। फूलने पर चिमटीसे बाहर निकाल ऊन के वस्त्रसे पोंछ खूब साफ़ करदें। फिर छिलका उतार कूटपीस बराबर की सनाय मक्कीकूटी छनी हो (सनायकी मध्यकी रेखा निकाल फेंके)। हरड़ चूर्णके सम भाग ही हाथ से निकाला हुआ मीठे बादामों का बादाम रोगन। तीनोंको मिला खूब कूटकर एकजानकरदो। तीनोंसे दुगना गर्मकरके कपड़ेमेंसे छाना हुआ छोटी मक्खी का मधु। सब को मिला कर मिट्टीके मर्तबानमें बन्दकरके गेहूं में ४० दिन दबा रखो। तदनन्तर रोगीको रात को १½ तोला अवलेह को गरमदूध के अनुपान से सुलादो। खूब दस्त होंगे। खिचड़ी घृतप्लुत खिलाओ। पथ्य रखो। दूसरे (दस्तोंसे २रे) दिन स्नान न कराओ। फिर तीसरे दिनसे प्रातः काल ६ मासे प्रतिदिन दूधके साथ खाया करें। तीन खुराक खाने के बाद ही दृष्टि तेज होती है। दूर २ के छूटते हुए जानवर पास दिखाई देंगे। ४० दिन के बाद [illegible] ऐनक छूट जाती है॥ तीन दिन [illegible]

रहेगा फिर ताकत आवेगी। स्त्री गाढ़ी हो जावेगी॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बिच्छूपर —

गेरू + इमलीकासत (Tatric Acid), खांड ये
तीनों कीएक शीशी भरलो।

दूसरीशीशीमें पोटाशियमपरमैंगनेट। पहलेनंबर
की शीशीकीदवा चावलभर दष्टस्थान पररखके
नं २ की आधेचावलभर डाल १ बूंद पानी ऊपर
सेछोड़दो। जैसे उठतेही आरामहोगा। झागउठने
बंदहोनेपर घी चुपड़दो॥ (सोनकदेके)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रसायन — (आयुर्वेदसंग्रह) मिलावा

१ भाग ½ भाग ½ भाग
श्लक्ष्णीकृतं भृंगरजस्यचूर्णं, तिलादिकञ्चामलकादिकञ्च।
सशर्करं भक्षयतो गुडैर्वा , न तस्य रोगा न जरा न मृत्यु ॥१
अन्धः पश्येत् गमनरहितो मन्दमाचङ्गगामी।
मूको वाग्मी श्रवणरहितो दूरशब्दानुसारी।
नीरुङ् मर्त्यो भवति पलितो नीलजीमूतकेशो।
जीर्णा दन्ताः पुनरपि नवाः क्षीरगौराः भवन्ति॥

त्रिकण्टकाद्योमोदकः।

गोक्षुरो क्षुरबीजानि वाजिगन्धा शतावरी। मुषली वानरीबीजं यष्टी नागबला बला॥ एषां चूर्णं दुग्धसिद्धं गव्येनाज्येन भर्जितम्। सितया मोदकं कृत्वा भक्ष्यं वाजीकरं परम्। चूर्णं दशगुणं क्षीरं घृतं चूर्णसमं स्मृतम्। सर्वतो द्विगुणं खण्डं मोदकाग्नि बलं यथा॥ वाजीकराणि भूरीणि संस्तराणि तेष्वपि, तस्माद् बहुषु योगेषु योगोऽयं परमो मतः॥

शुक्रजीवनं मोदकम्

विदारीकन्दजं चूर्णं चतुर्दशपलान्वितम्। गोक्षुरबीजं चूर्णं द्विपलं लाजापलचतुष्टयम्॥ सितापलशतं देयं क्षीरं दत्त्वा विपाचयेत्। जातीफलं च जातं च लवंगं शुण्ठिपर्ण्यपि। समानिका तथा वोष्णं प्रत्येकञ्च पलं पलम्। सिद्धपाके क्षिपेत् सर्वं मोदकं शुक्रजीवनम्॥ संवर्द्धयति वीर्यं च तेजोवृद्धिकरं परम्। शुक्रस्तम्भो विशेषेण शुक्रपाते भवत्यपि॥ नाटीनांगे-
[illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(१३८) सुपारी पाक (लघु) यो. चिन्ता.

नागरमोथा	८ टंक	गौघृत	६४ टंक
चंदन	८ "	मिश्री	८०८ टंक
त्रिकटु	८ "	दक्षिणीसुपारी	१२८ टंक
जावित्री	८ "	दूध	८०८ टंक
चिरौंजी	८ "		
बेलगज्जा	८ "		
तज	८ "		
एला	८ "		
तालीसपत्र	८ "		
जीरा सफेद	८ "		
जीरा काला	८ "		
सिंघाड़ा	८ "		
बंशलोचन	८ "		
जायफल	८ "		
लौंग	८ "		
धनियां	८ "		

खादेत्प्रातरिदं ज्वरमपहं दाहंच पित्तं जयेत। नासास्यागदिशिगदं प्रवाहरोगिदं पर्प्रमेहकुप क्षतम्। यक्ष्मा क्षीणबलं क्षतातिलिलयं छर्दि-प्रमेहाश्मरीसाम्र। रेतोवर्द्धकरं रसायनपरं प्राणप्रदं योषितां मूर्च्छातिविनाशनं बलकरं वृद्धांग पुष्टिप्रदम्। पूगीपाकमिदं प्रशस्त विवेक कार्यंच ग्राह्यं बुधैः॥

द्राक्षारिष्ट

८ तोले = १ पल
६४ तोले = १ सेर

मुनक्का ५० पल
द्राक्षा ६ सेर ... इसका क्वाथ कर २५ सेर गुड़ घोलदो और धायफूल
जल ६४ सेर ... दालचीनी, इलायची, तेजपत्र, नागकेसर, फूलप्रियंगु,
शेष १६ सेर ३२ ... प्रियंगु, मरिच, पीपल, विडंग प्रत्येक १ पल (८ तोले)
डालघोल मुंहबंदकर ३० दिन बाद छाननिकाले। इससे उरःक्षत क्षयं हन्ति कासश्वासगलामयान्। द्राक्षारिष्टाह्वयः प्रोक्तो बलकृन्मलशोधनः॥

चतुर्थभागं द्राक्षायाः धातकीमत्र केचन। प्रयच्छन्ति ततोवीर्यमेतस्योच्चैः प्रजायते (इति द्राक्षासवो वीर...

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(१४०)

पल = ४ तोले
सेर = ६४ तोले
च्यवनप्राश (आयु. संग्रह)

बिल्व छाल १ पल, अग्निमंथ, श्योनाक, गांभारी, पाढल, बला, शालपर्णी, पृश्निपर्णी, माष, मुद्ग, पिप्पल, गोक्षुर, बृहती, कण्टकारी — प्रत्येक १ पल
काकड़ासींगी १ पल, भुई आंवला, द्राक्षा, जीवन्ती, कूठ, कृष्णागुरु, हरीतकी, गलोय, ऋद्धि, जीवक, ऋषभक, शठी, मोथा, पुनर्नवा — प्रत्येक १ पल
मेदा १ पल, छो. इला, नीलोत्पल, रक्तचन्दन, भूमिकूष्माण्ड, वासकमूल, काकोली, काकजंघा — प्रत्येक १ पल

जल १ द्रोण = २५६ पल
प्रत्येक एक भाग, आंवला ५०० ताजे १२ घण्टे का। (जल २५६ पल) शेष १६ ले। घी ६ पल, तैल ६ पल इनके द्वारा कक्क भूने फिर क्वाथ में और फिर मिश्री ५० पल, क्वाथ, भुना हुआ आंवला पाक करना चाहिये। अवलेह बन जाय तो वंशलोचन ४ पल + पीपल २ पल + दालचीनी २ तोला + तेजपात २ तो. + इलायची २ तो. + नागकेसर २ तो. इनका चूर्ण, डाल घोट उतार ले। शीतल होने पर मधु ६ पल डालनी चाहिये। घृतभांड में रखे। मात्रा २ तोला, अनुपान या गोदुग्ध। इसके सेवन से समस्त वातादि रोग नष्ट होते हैं।

---

९ गण्डमालापर सिन्दूरादितैलम्। (आयु. संग्रह)

कटु तैल ४ सेर
भांगरे का रस १६ सेर } कल्कार्थ — चक्रमर्दमूल ½ सेर
(कविराज) पाक शेष हो जाने पर सिन्दूर ½ सेर मिला दे।

"अपि च — चक्रमर्दके मूल का कल्कं कृत्वा विपाचयेत्।
करायल जाते तैलं कटु के भृङ्गराजेन ता। पाकशेषे मिलावे...

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तो. ८ तो.=१ पल
६४ तोले=१ सेर
(२४४)
अश्वगंधारिष्ट (भैषज्य. आयु. ...)

अश्वगंध ५० पल
मूसली २० पल
मजीठ १० पल
हरड़ १० "
हल्दी १० "
दारुहल्दी १० "
मुलठी १० "
रास्ना १० "
विदारीकंद १० "
अर्जुनछाल १० "
मोथा १० "
निसोत १० "

अनन्तमूल ८ पल
श्यामालता ८ पल
श्वेतचन्दन ८ "
रक्तचन्दन ८ "
वच ८ "
चीतामूल ८ "

ये सभी द्रव्य एकत्र लेकर ५१२ सेर जल में पकाकर ६४ सेर शेष बचने पर उतार शीतलकर छानकर उसके अन्दर :

धायफूल १६ पल
मधु ३२½ सेर
त्रिकुट २ पल प्रत्येक
दालचीनी ४ पल
तेजपात ४ पल
इलायची ४ पल
प्रियंगु ४ पल
नागकेशर २ पल

ये सभी वस्तुएँ कूट कर डाले मुहबंद कर मास पीछे छानले मात्रा - १ तोला से ४ तोला तक पीवे।

गुण :—

मूर्च्छापस्मृतिशोषमुन्मादमपि दारुणम्। कार्श्यमर्शांसि मन्दत्वमग्नेर्वातभवान्गदान्। अश्वगंधारिष्टोयं ... हन्यादेतंशयम्॥

[माषपाक] (अपनानुभूत)

घी - १ पाव
माषपीठी - १ पाव
दूध - १½ सेर
खांड - १ सेर

छालबारीकी, शतावर, असगन्ध, गोखरू प्रत्येक दो २ तोला, सोंठ मिर्च पीपल, लोंग, इला, पत्र केसर प्रत्येक ६ माश तोला ले विधिपूर्वक पाक बनाले।

कालीखांसीपर

नकछिकनी और सेंधानमक समभाग लेकर एक कूजे में रख अन्तर्धूम भस्म करे। इसकी एक रत्ति मात्रा दही की मलाई में रखकर दिन में दोबार देने से whooping cough या कालीखांसी को आराम हो जाता है। (आयुर्वेद...)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुमार्यासव

{१ द्रोण = २५६ पल}

कुमारीरस १ द्रोण (२५६ पल)
गुड १०० पल
सहद ५० पल
लोहा ५० पल (२ पल ठीक)

त्रिकटु, लौंग, चतुर्जात, चीता, पिपलामूल, विडंग, गजपीपल, चव्य, हाऊबेर, धातियां, सुपारी, कुटकी, मोथा, त्रिफला, रास्ना, देवदारु, दोनों हल्दी, मूर्वा, पखारणी, दन्ती, पुष्करमूल, बला, अतिबला, कौंच, गोखरू, जौंक, हिंगुपत्री, अकरकरा, उटंगण, दोनों पुनर्नवा, लोध, सोनामाखी। ये ३२ दवा प्रत्येक आधा पल लो॥ धायफूल ८ पल डालो। मास पीछे निकालो।

गुण

"बलवर्णाग्निवर्धनम्। बृंहणं रोचनं वृष्यं पक्तिशूलनिवारणम्। अष्टावुदरजातरोगान् क्षयमुग्रं च नाशयेत्। विंशतिं मेहजान्रोगान् उदावर्तमपस्मृतिम्। मूत्रकृच्छ्रमपस्मारं शुक्रदोषं तथाश्मरीम्। कृमिजं रक्तपित्तं च नाशयेन्नात्र संशयः॥"

अथ लोहासवः

लोहचूर्ण, त्रिकटु, त्रिफला, अजवायन, विडंग, मोथा, चित्रक, प्रत्येक ~~चार~~ २ पल॥ धायफूल २० पल, शहद ६४ पल, गुड १०० पल, जल दो द्रोण॥ घोलदो १ मास बाद। (५१२ पल) ~~मा [illegible] २।५ सेर~~ २५ सेर ~~[illegible] तोला~~

— गुण —

"लोहासवममुं मर्त्यः पिबेदग्निकरं परम्। पाण्डुश्वयथुगुल्मानि जठराण्यर्शसां रुजम्॥ कुष्ठं प्लीहामयं कण्डूं कासं श्वासं भगन्दरम्। अरोचकं च ग्रहणीं हृद्रोगं च विनाशयेत्॥"

अंगूरों का सिरका बनाना

६ सेर किशमिश ३० सेर जल में भिगो ८ दिन रोज हाथों से मलते रहो। फिर नमक १ पाव, तेजबल छाल ५ तोला, पिप्पली १ पाव खाण्ड २½ सेर डाले [illegible] रखो। सिरका बन जायगा।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सोमरस — [illegible] (१४३)
कड़वा करेला, निर्गन्धबावरी + चिरायता + गिलोय, मधु
बृहन्मञ्जिष्ठादि क्वाथ की औषधियां लेकर उसमें मधु डाल
कर आसव बना ले। कुष्ठ, मधुमेहादि को नाश करता है॥
(वैद्यक कुलदीपक सार्थ)

फलघृत (१५) स्त्री. बन्ध्यत्वनिवारणार्थ
मंजीठ, मुलहठी, कूठ, हरड़, बहेड़ा, आंवला, शर्करा, बला, मेदा, विदारीकंद, काकोली, असगंधमूल, अजमोदा, हल्दी, दारुहल्दी, हींग, कुटकी, नीलोफर, कुमुद, द्राक्षा, क्षीरकाकोली, चंदन, लालचंदन प्रत्येक एक २ कर्ष लें।
घी = १ प्रस्थ। शतावरीरस — ४ प्रस्थ। दुग्धं – ४ प्रस्थ॥
सर्पिरेतं नरः पीत्वा नित्यं स्त्रीषु वृषायते। पुत्रान् जनयते नारी मेधाढ्यान् प्रियदर्शनान्॥ या चैवास्थिरगर्भा स्यात् या वा जनयते मृतम्। अल्पायुषं वा जनयेत् या च कन्यां प्रसूयते। योनिदोषे रजोदोषे परिस्रावे च शस्यते। प्रजावर्धनमायुष्यं सर्वग्रहनिवारणम्। नाम्ना फलघृतं ह्येतदश्विभ्यां परिकीर्तितम्। अनुक्तं लक्ष्मणामूलं क्षिपन्त्यत्र चिकित्सकाः॥

फलघृतं (२५)
सितसहचर, पीतसहचर (बांसा पियावांसा), हरड़, बहेड़ा, आंवला, गिलोय, पुनर्नवा, शुकनासा (श्वेत स्योनाक), हल्दी, दारुहल्दी, रास्ना, मेदा, शतावरी प्रत्येक समभाग . . . ॥ घी = १ प्रस्थ + क्षीर = ४ प्रस्थ॥
"वन्ध्यं प्रपिबेन्नारी योनिशूलनिपीड़िता। पिच्छिता चलिता या च निःसृता विवृता च या। पित्तयोनिश्च विस्रस्ता षण्ढयोनिश्च याः स्मृताः। प्रपद्यन्ते तु ताः स्थानं गर्भं गृह्णन्ति चासकृत्। एतत्फलघृतं नाम योनिदोषहरं परम्॥

शतावरीघृत॥
घृतं शतावरीगर्भं क्षीरे दशगुणे पचेत्। शर्करापिप्पलीक्षौद्रयुक्तं तद्वृष्यमुत्तमम्॥

अश्वगंधाद्यघृतम्।
पादकल्के ऽश्वगंधायाः क्षीरे [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मृतसंजीवनीसुरा

नयागुड १२॥ सेर
बबूलछाल २ सेर
बेरछाल २ सेर
चिकनीसुपारी २ सेर
लोध आधसेर
अदरक १ पाव
जल - सबसे आठगुणा अर्थात् १२८ सेर

जल में गुड़ घोले फिर छालों को कूटकर घोल दे फिर लोध सुपारी आदिको कूटकर घोलदे और मुंह बंद करके २० दिन तक रखना रखे।

फिर मन्द २ अग्नि पर गरमकर के उसमें निम्नवस्तुएं मिलादेवे

सुपारी, एलना, देवदारु, लौंग, पद्माख, बेतकी जड़, लाल चन्दन, सोयाके बीज, अजवायन, मरिच, जीरा, जीरकृष्ण, शठी, जयमांसी, दारचीनी, इलायची, जायफल, मोथा, ग्रन्थिपर्णी, सोंठ, मेथी, मौरी, लालचन्दन प्रत्येक चार २ तोला प्रक्षेप कूटकर डालो और खेंच लेवे।

एतन्मद्यं पिबेन्नित्यं यथाधातुवयःक्रमम्। आरोग्यजननं देहदार्ढ्यकृत् बलवर्धनम्॥ मेधाग्निस्मृतिकृद् वीर्यशुक्रकृद् वातनाशनम्। बलपुष्टिकरञ्चैव कामवृद्धिपतम् परम्॥ दृशास्त्रियो रमन्ति नित्यमानन्द उपजायते। एषे तेजोमयं सद्यो यथा भीमपराक्रमः॥ नातः परतरं किंचिद्रणोत्साहप्रदं महत्। देवासुरे युद्धकाले शुक्रेण परिनिर्मितम्॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्री पं. गणेशदत्त शास्त्री विद्यानिधि (१८५) (नरकट)
आयुर्वैदिक व यूनानी फार्मेसी, ग्वालियर ।।

(१)
जिगर के फोड़े के लिये — "विडंगारिष्ट" से तीन दिन में सेरों पीप बननी बंद होगई। एक आपरेशन हो चुका था। इसलिये जहां भी सूजन होकर पीप बने उस घाव के लिये विडंगारिष्ट ब्रह्मार्थ है मात्रा दिनभर में ४ तोला तक है। पर प्रात: १ तो. भोजनोपरान्त एक २ तोला दिया था। इसपर तीन तोला डोज़ देने से प्रत्यक्ष लाभ हुआ है।।

(२) तपेदिक — सूखा कंकालमात्र तपेदिक वाला भी इससे हट्टा कट्टा हुआ — प्रात: अमृतारिष्ट १ तो. । भोजन के साथ पीछे पिप्पल्यासव १तो., ४ बजे पिप्पल्यासव ६ माशे से १ तोला तक। रात भोजन बाद पिप्पल्यासव १ तोला। लगातार पीने से सरदार किशनसिंह ग्वालियर भी पोलो खेलने योग्य होगया है। { "पिप्पल्यः समवधन द्रोणे राजानं प्रति यं राजन... तं राजन् पाल्योमाहि. ।। }

(३) श्वित्रतथा पुण्डरीक कुष्ट — हरी गिलोय + हरा चिरायता + नाह बूटी (ग्वालियर में) + निर्गुंध बावरी + सोंठ + मिरच + पीपल प्रत्येक एक २ तोला लेकर (गिलोय २ तोले का काढ़ा बना चतुर्थांश शेष रहने पर छान लो) इस काढ़े में घोट सब को झड़बेरी समान की गोलियां बनालो। प्रात: सायं एक २ गोली, ठंडे पानी से देने से सब (यावदिरोगिष्टबदा) प्रकार के मलेरिया तथा श्वित्र पुण्डरीक कुष्ट जड़ से नाश होजाये। यदि लेप करना हो तो — "मिलावा + चीता + मोठासींगिया .... ।। श्लोक से लेप भी करो।

(४) बसन्तमालती में — "कुष्ठमस्तक" वर्क की जगह डालने से ज्वरों में शीघ्र प्रभाव दिखाता है। यह भी मैं मूलचन्द्र राय की यही हिकमति है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(५) गण्डमालां — १(वज्रकन्द लगाने से) || १. अंग्रेजी धोहर + अकाशबेल का भर्ता बांधे।

(६) ज्वर तुरंत उतारने के लिये — २. छोण धोडा चोली रख खाने को दो। अकाशबेल के अनुपात है

जिगर के रोग तथा प्लीहा पर

२५६ पल = १ द्रोण

शाङ्गध १. विडंगारिष्ट

विडंगारिष्ट — विडंग, पिप्पलामूल, रास्ना, कुटजत्वक्, इन्द्रजौ, पाठा, एलवा, धात्री इन सबको पांच २ पल लेवें। जल आठ द्रोण (२०४८ पल जल) डालकर पकावे। शेष एक द्रोण (२५६ पल) बचने पर छानलेवें। ठण्डा होनेपर शहद तीनसौ पल (३०० पल) डाले। धायके फूल २० पल, त्वग्, एला, पत्र तीनों मिलित दोपल लेवें, प्रियंगु, कचनार, लोध्र इनका प्रत्येक का एक २ पल लेवें। सोंठ, मिरच, पीपल मिलित ८ पल। इनका चूर्ण करके घृतभाण्ड में रखे॥ ततः पिवेदर्धपलं तु जयेद्विद्रधिमूर्च्छितम्। ऊरुस्तम्भाश्मरी मेहान् प्रत्यष्ठीला भगन्दरान्। गंडमालां हनुस्तम्भं विडंगारिष्टसंज्ञितः॥

२. पिप्पल्यासव

पीपल, मिरच, चव्य, हल्दी, चीता, नागरमोथा, विडंग, सुपारी, लोध्र, पाठा, धात्री, एलवा, उशीर, चंदन, कुठ, लौंग, तगर, मांसी, त्वग्, एला, पत्र, प्रियंगु, नागकेशर येसब आधा २ पल (दो २ तोले) लेकर सूक्ष्मचूर्णकरके दोद्रोण (२०४८ तोले) जलमें घोल गुड १२०० तोले (तीन तुला) उसमें घोले, तथा धायके फूल दशपल (४० तो) द्राक्षा ६० पल (२४० तो) इनको मिला बंद करदे॥ ज्वालागते रसं खं पाययेदग्न्यपेक्षया। क्षयं गुल्मोदरं कार्श्यं ग्रहणीं पांडुतां तथा। अर्शांसि नाशयेन्नित्यं ध्रुवं पिप्पल्याद्यासवस्त्वयम्॥

३ कुटजारिष्ट सर्वज्वर पर

कुटजछाल (कुटजमूल) ४०० तोले, मुनक्का २०० तोले, महुआ के फूल तथा गंभारी प्रत्येक ४० तोले इनसबको ४०९६ तोले (स्वाभग) जलमें पकावे। शेष चौथाई रहजाने पर छानकर [illegible] तोले गुड १ तुला (४०० तोले) घोलरखे। (यह) कुटजारिष्टसंज्ञित:। ज्वरान् प्रशमयेत् सर्वान् [illegible]

[illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वैद्य......

(1) रक्तपित्त पर — शार्ङ्गधर का धान्यपंचक प्रात: दोपहर रात तीनवार पिलावो अवश्य रक्त बंद होगा चाहे किसी गात्र से आता हो।
विधि — "धनिया, आंवला, बांसे के पत्ते, किशमिश, पित्तपापड़ा" इन पांचों को प्रत्येक एक २ तोला लेकर १० तोला जल में भिगो प्रात: इसमें ६ से ८ माशे तक शहद मिलाकर [redacted] पिलाओ। प्रात: फिर साहिब भिगोदो दोपहर पिलाओ। दोपहर भिगोदो रात को नया पिलाओ। तीन चार दिन में ही रक्तपित्त अवश्य दूर होगा चाहे नस भी फट गई हो॥

(२) रक्तपित्त, खांसी क्षयपर — पीपल वृक्ष का पंचांग प्रत्येक एक २ छटांक लेकर कुल ५ छटांक, पानी ५ सेर उबालो। शेष एक सेर छानकर फिर उबालो शहद की तरह गाढ़ा होवे तो बृहणायक भस्म ८ माशे मिलाकर दो २ रत्ति की गोली बनाओ।
प्रात: सायं एक २ गोली पानी से दो। खाने को फल नारंगी केला आदि अधिक दो। पीपल की ही छाया में सुलाओ तो रक्तपित्त, क्षय, खांसी, अतिमावस्था में दस्त भी कफ सहित अवश्य अच्छे हो जाते हैं॥

(३) गण्डमाला — पर अपामार्ग मूल बांधो। चाहे थैली में डालकर गण्डमाला पर बांधदो। २५ दिन में अच्छी हो जायेगी। हर पंद्रह दिन बाद नई थैली बदलो। (खाने के लिये भी पं. ति. चतन्य पाण्ड्माला कुछ नाग दें। यादवजी लिखित पाग वा।

(४) याद...

(१४८) वैद्य (फ़र्रुखाबादवाले)

(१) पारद भस्म — हिंगुलोत्थ पारद १ तोला + हुलहुल सफ़ेद का रस १ बोतल। पीकदान को कोयलों पर रख ऊपर पारा रख उसपर बोतल का रस डालते जावें। कुल रस जल जाने पर तेज़ आँच दें तो पारा खील होगा।

परीक्षा — कोयले पर डालने से धुआँ न दे तो ठीक समझो। धुआँ दे तो उसी के रस में घोट टिकिया बनाकर फिर आँच देदो। खील होगा।

लाभ — बलगम खाँसी दूर करता, ताकत देता। प्यास लगे तो दूध ही पीवे। पानी पीने से कमजोर होगा॥

(२) हिंगुल भस्म — १ तोला या दो तोला की डली लेकर निधारा थोहर की जड़ में तीन सात दिन रखो फिर ७ दिन आक के दूध में, फिर गुलाबांस के बहुत मोटे कंद में भर के उसी गूदे से टांप सात कपड़मिट्टी करके सुखालो तथा गजपुट में दो। सफ़ेद रंग की उतनेही वज़न की खील होगी। कंद छोटा बड़ा होने से कभी २ उड़भी जाता है।

लाभ — वाजीकरण असमान है यदि खटाई साथ खाई तो अंग उड़ जायेगा नहीं तो दूध भी पीने से महा उपकार भी होगा॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हकीम दलीलसुहलनवरी वाला (१४८)

(1) Appendicitis – अफ्तीमुन काशूदा ३ तोला + ३ माशा + रोगन बदाम ३ माशा । पिलानेसे १०,१५ दिनमें आराम होगा । दस्त लानेके लिये सफूफ बदाम रोगन मिलाकर देवें ॥ ×

(२) अंबर १ तोला + कस्तूरी १ तोला + ब्रांडी १ बोतल मैं डालकर ४० दिन धूपमें काग लगाकर रखदो । फिर छानकर या बिना छाने थोड़ामात्रा रातको पिलाओ । प्यास लगे तो घी और दूध दो । अतीव वाजीकरण है । ('रमलपंडीका हकीम')

चर्मरोगनाशक तैल.

इन्द्रिय फूले तो पहले नीमके पत्तों के क्वाथ से फिर त्रिफलाके क्वाथ फिर सफेदकत्थेके क्वाथसे धो कर । पोंछकर शतावरी मल्हम लगाकर २ लेप करदो । ऊपरसे चर्मरोगनाशक तैलकी पट्टी पोली २ लपेट कच्चे सूत से बांध दो । प्रातः सायं धोओ तथा दवा लगाओ । पहले दिनही लाभ प्रतीत होगा । २० दिन बाद सर्वथा पूर्ववत शोथहीन हो जायेगी । योगतैलका — नीमकी छाल, चिरायता, हल्दी, दारुहल्दी, लालचंदन हरड़, बहेड़ा, आंवला, बांसके पत्ते । कुलके एक २ छ. टांक कूटपीस नुगदी बना चौगुने काले तिलके तैलमें डाल चौगुना पानी डाल पकाओ । चीनी या पीतलकी कलईदार कड़ाही हो (लोहेकी सर्वथा न हो) । इसे जलजाने पर उतार रखो । खाजखुजली, आतशक, फुंसीफोड़े, लिङ्गेन्द्रियकी सूजन, हाथ पैरोंके चमड़े, सफेद दाग, नखगिरना ये होते तो भी । पिचकारी या चकतेमें इसकी १ छटांक मालिश कर बेसन या सबुनसे नहालो । ८,१० दिनमेंही १ मासमें आराम होगा । [illegible] में ६ बारके पत्रा रखो । सिरको पुंसी पर भी ॥ स्वास्थ्य ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

में दुबारा के पढ़ा ... हिस्से ... पुस्तक में ॥ खान्देश ॥

श्रीयुत यादवजी त्रिकमजी (२५०)

(खान) स्रोतोऽञ्जन — Antimony (कनाग) Sulfide
2. नीलाञ्जन — Lead Sulphide
3. सौवीराञ्जन — श्वेत सुरमा
४. पुष्पाञ्जन — Zinc oxide
५. रसाञ्जन — रसौंत तथा Yellow oxide of Mercury
६. चपल — बिसमिथ Bismuth
७. खपरिया — Calamin Pepreta, (Zinc oxide) (Cobalt), (पीला या लाल रंग)
८. वैक्रान्त — Tormalina, चकमक.
९. विमल, तारमाक्षिक — मारकसीसा Markaside

क्षयरोग — सुश्रुत के १०८ - "एलाजमोदामलकपथ्या"
नं.१. इसमें "दशमूल, अनन्तमूल" भी समझना चाहिये

नं.२ — कालीजीरी (वन्हिजीरक) १½ माशा से 2 माशा तक बकरी का मूत्र २ तोला में प्रातः भिगोकर दोपहर को पीसकर पीना चाहिये ॥

गण्डमालापर —
नं.१. लशुन फांक १ फांक + विडंग २०० दाने दूध में क्षीरपाक दो। लशुन २० फांक तक विडंग ५०० दाने तक बढ़ाते जाओ। खाने को दो
नं.२ लेप — गूगल का जल वा गोमूत्र से लेप करो
नं.३. अमरबेल (बांदे) का गोमूत्र से लेप भी करते हैं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(१५९)

नं.४ – कुमरकंद छील सुखाकर पीसकर क्षीरपाक, चूर्ण वा यवागू बनाके खाना। अग्निमें भूनकर छीलकर शिलापर पीस कर दूधपाक करना। गण्डमाला दूर होगा।

नं.५ – रससिंदूर ८, मन:शिला ८, स्वर्ण १ भाग, पान पत्र के रस में गोली १ रत्ती की बनाके Sifilis और कण्ठमाला को दूर करता है।

दन्तमंजन – १½ माषा तुत्थ भुना हुआ + गेरु २० तोला + सैंधव १ तोला + कपूर १ तोला से पीयरिया-दि दोष दूर होते हैं॥

7.

पश्चाग्नि पूर्वगुदिष्ट; . . . . "/ "

इत्यादि से सिद्ध है कि ग्रहणी-चरक के अग्नि के विकारों से उत्पन्न भी दोषों को कह सकते हैं अत: Abdominal T.B. को "ग्रहणीक्षय" कह सकते हैं।

८. Apendicitis —

९. मुण्डवृद्धि – दशाङ्ग लेप + निर्गुण्डी पत्र पीसकर लेप करे। खाने को सोंठ एरण्डतैल के साथ दे॥

1. A short account of the Aryan System of Medicine. ———— By Dr. Mathur

2. Palmunery T.B. ———— " " "

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1. Hysteria पर — खुरासानी अजवायन १ तोला
गांजा ३ माशा
हींग ३ माशा
कपूर ३ माशा
} जल से मटर समान गोली बना प्रात. सायं देना। ऊपर से निम्न क्वाथ देना चा.

क्वाथ — जटामांसी १ तोला
पुष्कर गंध ३ माशा
रास्ना ३ माशा
खुरासानी अजवायन १ ½ माशा
} क्वाथ बनाके दो। दो बार या तीन बार भी दे सकते हैं॥

नोट — इस क्वाथ को बच्चों के आक्षेपक रोग में भी देसकते हैं। मृगी के फिट में भी देसकते हैं॥

2. कासश्वास पर —— लौंग, जावित्री, जायफल, दारचीनी काली मिरच चार २ तोला + (शुद्ध गोदुग्ध से) सींगिया श्वेत तीन तोला + गूगल ½ तोला + (शुद्ध) गंधक ½ तोला। एक चीनी के प्याले पर कपड़ा लवे उसपर आधा चूर्ण बिछा दें उसपर संखिया बिछा कर फिर ऊपर चूर्ण बिछा दें। फिर अभ्रक का पत्र लवें। चारों ओर मुलतानी मिट्टी + लई घृत कर खड़ी कर थांवला बना दें ऊपर आग भर दें (प्याले के नीचे ठंडा पानी लवे। कुछ देर बाद २ घंटे तक तेल + जल प्याले में आजाता है। इस को बोतल में भर दो एक तिनका भर पान में लगा कर देने से उग्र श्वास दूर होता है॥

(श्वास शर्करा — तुरञ्जबीज)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ज्वरको तुरन्त दूर करनेके लिये — (१५२३) चंद्रप्रभामें शिलाजीत ८ तोला
Diafratic Mixture केस्थानमें ८ तोला कलमीशोरा
डालके गोली बनारखो। चंद्रप्रभा १ गोली (शोरा)

सुदर्शनचूर्ण ३ माशा
ताजी गिलोय १ तोला (३ माशा)
पित्तपापड़ा ३ माशा

उपरोक्त वस्तुका फाण्ट बनाके एक मात्रा या २, ३ मात्रा देदेना
१ गोलीके स्थानमें २, ३ गोली भी देसकते हैं। इनसे दो दो
घण्टे देनेसे ज्वर कम हो जायेगा।

2. — गोदन्ती भस्म दो तीन रत्ति, गुलाबमें घुटाहुआ शुद्ध
जहरमोहरा १ रत्ति + रसादिवटी १ गोली (भोगच्चा. ग्रहाधि.)
इन तीनोंको पीसकर १ मात्रा जलसे फांकलो। इसे दिनमें तीन
चार बार, जबतक ज्वर कम न हो दे सकते हैं। इससे ज्वरादि
कम होते हैं।

3. मुनक्का + गिलोय + पित्तपापड़ा + मुलठी + सौंफ + सोंठ
अमलतास + कुटकी + बांसा + धनिया। इसका क्वाथ बनाके
कलमीशोरा + नौशादर २, ३ रत्ति डालके देनेसे ~~ज्वर~~
ज्वरकी तेजी दूर होती है, पसीना आता है।

पातालगरुड़ी — छिरेन्दिडा जलजमनी।
रसकपूरसे नीचे लिखी लौंग आदिकी दवा आवश्यकतामें सिरदर्द पर
प्रभावी हैं।
कुब्ज — चन्द्रोदय + कुचला से १ बार तो कुब्ज ठीक होता है
चिकित्साप्रक्रम — पाचनदीपन औषधें, वीर्यवर्द्धक बिदारी
आदि दो आगे चिकित्सा है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(१५४)

चमत्कार विरेचक

पीतसंखिया ५ तोला + सिंगमिंग ५ तो० + दन्तीबीज ५ तोला + पीले रंग की बड़ी हरड़ १ सेर। सब का दरदरा करके पहले हरड़ को (मींगी सहित) दबाकर कूट कर पातालयंत्र से तेल निकाल लें। फिर इस हरीतकी तेल में पूर्वोक्त सभी औषधों को खरल करके दो दिन तक, इस मशाले की बत्ती बनाके कृष्णसर्प के मुख द्वारा पेट तक भरके मुख मुद्रा करें। फिर इसका चतुष्कोण खाबनाकर पातालयंत्र से तेल चुआ ले। बकरी की विष्ठा की आंच दो। वह तेल पीले रंग का होगा। इस तेल को पाणि तल पर 卐 स्वस्तिक चिन्ह करें। मुट्ठि बन्द कर दौड़ लगाये। प्रस्वेद आने बाद जहां मुट्ठि खोले वहां ही विरेचन होंगे॥ स्वा. कृष्णानन्द जी

(२) जमालगोटे का तेल बत्ती डाल दीपक जलाना है और अन्दर नंगा शरीर करके बैठ कर बाहर से कुंडा लगा दे। ५, ४ मिनिट के बाद विरेचन आरंभ हो जायेंगे। "अनुभूत स्वा. कृष्णानन्द जी

ज्वर तुरन्त उतारने के लिये (पित्ताशय तथा रक्तरोगादि)

"बड़ी हरड़ का वल्क ३ तोले + नीम छाल ३ तोले + चिरायता ३ तोला + धनिया ३ तोले"। तीन छटांक पानी। क्वाथ करके ३ पाव पानी बचाओ। छान लो गाढ़ा हो के ले। १ छटांक प्रातः + १ छटांक दोपहर + १ छटांक शाम रोज पिलाये। तीन दिन में ही महासन्निपात ज्वर दूर होते हैं। चढ़े ज्वर पर देते हैं। (परमानन्द [illegible])

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(1) दन्तीबीज + आंवलासारगंधक दोनों को खूब खरलकर के
८ तोला ४ तोला

गोलीयें बना पातालयंत्र से तेल निकाले। उस तेल की दो बूंदें १ तोला पारे में डालकर आग पर रखे तो पारद उड़ता नहीं ~~वही~~ लाल होने पर भी नहीं उड़ता। यह पारद बंधन हुआ।
(प्राप्त स्वा. कृष्णानंदजी)

(2) अंजन से ज्वरहर — समुद्रफल २ तोला + मोचिरस स्वर्णगैरु १ तो. + कालीमिर्च १ तोला तुलसीपत्र जल में खरलकर गोली बांधे। एक तो आंखों में लगाने से बहुत तरह के आंख के धुंधजाला फोला को दूर करता है। साथ ही एक आंख में लगावे तो अर्धशीशी को, दोनों को लगाओ तो सर्दी शीत का ज्वर जावे। तृतीयक ज्वर पर विशेष उपयोगी है। (स्वा. कृष्णानंदजी)

(3) चूने के पानी से सरसों के तेल द्वारा बना साबुन लो। यह साबुन २८ माशे ~~[illegible]~~ इस को चाकू से छीलकर साफ कड़ाही में डाल दो। उस पर पीसकर राल १½ माशा डाल दो, उस पर तुत्थ नीला १ माशा पीसकर डाल दो। सब गल जावे तो लोहे की मूंगली से हिलाकर कोरी चेपता लो। डिबिया में डाल लो। सलाई के सिरे पर तिलमात्र लगा आंख में डालने से सफेद मोतियाबिंद दूर होता है। (स्वामी कृष्णानंदजी)

(4) वीर्यवृद्धि — लौह शिलाजत गुडूचीसत्व आमला जल खरल कर लें।।
२ तो. १छ. १छ. १छ.

(5) कुचला, नमाहूचेन फिज्ज। [illegible] हैं।
[illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आंख के ऊपर — (२५६)

(जरदालूफल)

रसौंत १ छटांक + अफ़ीम तोला १ + किष्ठे ४० तोले + फिटकरी खील १ तोला + पीली हरड़ का छिलका १ छटांक + हल्दी १ तोला + कलमीशोरा १ तोला + नीलाथोथा की खील ३ माशे + पठानी लोध २ छटांक॥ लोधको ½ सेर पानी + किष्ठे को २ सेर पक्के पानी में भिगोदे + रसौंत को पाव डेढ़ पाव पानी में भिगोदे / हल्दी को भी छटांक भर पानी में भिगोदो। हरड़ को कूट १ पाव भर पानी में भिगोदो। अफीम को भी पानी में घोल दो। सवेरे सब पानीयों को हरड़ादि समेत जोशदो / जब आधा पानी बचे तो मलछान करके दोबारा आगपर चढ़ावें। पर तेल मय अफीम और रसौंत का पानी भी डालदो फिर पकाओ / उतारने से २, ४ मिनट पूर्व फिटकरी, नीलाथोथा खील, शोरा को डालदे / ~~उतार~~ गाढ़ा होनेपर उतार लें / उतारने पर कापूर ६ माशे पीसकर मिलादो। यह आंख के सब रोगों को दूर करती है। लाली, कुकरे को झड़ादेती है। उससे गई ज्योति फिर लौट आगई / धुंध, गुबार सब कुछ दूर करती है / आजमाई है /

(स्वामी श्री कुमारानन्द जी)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(१६८)

+ (asperene, fine, पेट-शूल Diafretic mixture
Intestinal Tuberculosis — (N.N. Mitra)
(१५२०)

गण्ड — "विवर्जयेत् कुक्ष्युदराश्रितं च" से चरक गण्डमाला से असाध्य।

गण्ड — लशुनादि मलहर — लशुन के स्वरस में दुगनी घृत

श्वेत Vaseline या सिक्थ तैल मिलाकर गले, हृदय, पेट के गण्डों पर लगाओ। खाने को पेट पर आनश्योभानक रस १ रत्ति + मधु यो लशुन रस दूध लेवे। लशुन का प्रयोग सर्वोत्तम है।

यदि गण्डमाला में कब्ज हो तो पंचतिक्त घृत गुग्गुलु दो और लशुन का लेप। कब्ज न हो तो गण्डमाला कण्डन रस दो। योगरत्नाकर का "राजिका लशुनं पेष्यं लेपोऽयं गण्डिहा:"। अनुभूत है। भिवानी।

(नवज्वरगजांकुश) वैद्यकल्पतरु हस्तलिखित

(1) [illegible] पारद + गंधक + सुहागा खील + काली मिर्च, रोहितमत्स्य पित्त में तीन भावना (७ भावना उत्तम है) देके दो रत्ती की गोली बना के। चढ़े ज्वर में देने से पसीना लेकर ज्वर कम होता है। [illegible] कमजोर नहीं होता। यह अनुभूत है। (बालमुकुन्द प्रसाद जी, भिवानी।)

(2) (नाराच) चरक का — "पिप्पल्यादि का चूर्ण + मधु दें। या इसी में (हरीतकी ½ तो. मिलाकर) २ तो. [illegible] करदें तो थातज्वर नाश [illegible])

(3) कफनि:सारक रस — मधुयष्टि सार १ भाग + यवक्षार १ भाग + नवसादर १ भाग। चने समान गोली चूसने से कफ पतला होकर निकल आता है [illegible] निकल जाता है। (मि. [illegible])

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ता ३१ मार्च [illegible] को अचूक दन्तमंजन — (१५२८)

कामत्र स्वामी कृपाराम को स्वामी दयानंद जी ने सवाई जयपुर में लिखाया जो श्रीमद् आ. केदारनाथ देहलादून के पास है। देखो नीचे उसका मंजन

फिटकरी सोखता + तूतिया सोखता + पिप्पलदवनी + मलाला
१ तो. १ तो. १ तो.

सोखता + तम्बाकु खुरदनी + नमक सेंधा + मिरच काली
२ तो. २ तो. २ तो. २ तो.

छिलका बादाम सोखता + सुपारी सोखता + चूल्हे की जली
२ तो. २ तो.

मिट्टी
२ तो.

} इस मंजन से दर्द आदि सभी रोग नाश होते (किशोरी लाल जी सोलन)

X दन्तमंजन — चीनी १ भाग, सुपारी भस्म १ भाग, बांस का कोयला १ भाग, नीला थोथा भुना हुआ आधा भाग। इन सब को बारीक पीसे। फिर दो से ४ माशे तक ~~[illegible]~~ इसे लेकर शहद में मिलाकर प्रातः सायं दांतों पर रगड़े। बिना शहद के भी रगड़ा जा सकता है। इस मंजन लाभकर है। दांतों से खून आना बंद हो जाता है और दांत बेष्टों पर से काले २ मांस के टुकड़े छूटने भी बंद हो जाते हैं। (कवि. श्यामादास जी कलकत्ता) } स्वामी दयानन्द जी का—

४ माजूफल, मुरेठी, पपरिया कत्था, रूमी मस्तगी, नीला थोथा ये ५ चीज बराबर अर्थात आध आध पाव से कम न हों। नीला थोथा को अग्नि पर फुलाकर थोड़ा सा जल कड़ाही में रख के बुझा ले और बुझा कर शीघ्र निकाल के पांचों चीजें अलग पीस ले। उन पांचों के बराबर आक के जड़ की छाल अर्थात पृथ्वी में से खोद के धो डाले जिस से मिट्टी कंकर न रहें। छाल को छोटी २ काट के जिस में नीला थोथा बुझाया है उस में छः ही चीजें डाल के लोहे की कड़ाही में लोहे की मुसली से कूटे। जब म-हीन हो तब निर्वात स्थान में [illegible] जब तक अंजन के समान न हो [illegible]
[illegible] इससे दांत पर रगड़े, नाहें रोग न होंगे।
[illegible] स्वामी दयानंद [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

M.N. Mitra जी। (९२८)

(1) कासहरचूर्ण — मुलठी १तो + काकड़ासिंघी १तो. + वंशलोचन १तो. + सूक्ष्मैला १तो + पिप्पली १तो. + सितोपला १तो. + रससिन्दूर ½ तोला। चूर्णबना ३,४रत्ति, शहद में मिलाकर देवार तो कास और बेचनी, छाती की दर्द की बेचैनी दूर होती है दर्दिश्याराम होता है।

(2) कासहरक्वाथ — "वासक + कण्टकारी + मुलठी + तेजपात + भार्गी + किशमिश" / क्वाथ दो।

(3) बृहत् गर्भपालरस — रससिन्दूर ४ तोला + बंगभस्म ८ तोला + स्वर्णभस्म २तो. + मुक्ताभस्म १तो + शतावरी २तोले + क्षीरकाकोली ४तोले। पीसकर मात्रा २रत्ति देवार शहद से। गर्भस्राव पात निवारक, गर्भपोषक है चाहे दस मास तक देते रहें। ज्वरादि भी नहीं होते। गर्भस्राव के बाद भी देसकते हैं।

(4) Morfia की जगह "वेदनान्तकरस" दें। निद्रा के लिये "निद्रोदयरस" देवें। रसतरंगिनी।

(5) प्लीहारिरस — "एलवा + कासीस + अभ्रक + लहसुन" को अर्जुनदुग्धी के रस से गोली बना चने समान रात दे तो प्लीहा भी जाता है॥ सिद्धयोग

(6) नवसारादिचूर्ण — "नवसादर + सौंफ + मिर्च + नमक"। प्लीहा पाचक

(7) वृ. क्षयकेसरी रस ½ रत्ति प्रातः सायं देने से आमाशय भी अच्छा हुआ है। अनुभूत।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(८) स्वर्ण, रजत, लौह, [redacted] नाग, बंग, ताम्र, कांस्य, पित्तल प्रत्येक [redacted] २ तोला, अफीम शुद्ध १ तोला पानके रसमें ७ भावना देकर कस्तूरी १ तोला डालकर १ रत्ति की गोली बनाले। शक्ति को १ गोली बलवान को दो गोली पान के साथ / दूध आदि से दे। प्रातः सायं। शनैः गुप्ताब्रह्मचर्य रोग / वाजीकरण, पुष्ट (अनुभूत) मंजरीकलश वाले।

(९) लालकादि वटी — शु. हरताल १ तो. + कज्जली १ तो. + निम्बु मिलित ६ तोला। दो दिन तक घोट अदरक रस से घोट १ रत्ति की गोली बनावें। ज्वर से पूर्व ०, ३ घंटे पर मधु अदरक स्वरस से १ गोली दें॥ एकाहिक॥

(१०) क्षयव्रणरोपक — कोमल नारियल के ऊपर के चतुर्थांश को पृथक् करलें। ध्यान रहे कि वह सीधा ही कटे। पश्चात इसमें मक्खन १० तोला, भृंगराजपत्ररस २॥ तोला, प्याज का कल्क २॥ तोला, गांजा चूर्ण ३ माशे डालकर ऊपर के पृथक् किये हुए भाग को ऊपर रख कर बीच से मन्दाग्नि दें। जब जलीयांश जल जाये तब उसमें से किंचित् लेकर अग्नि पर परीक्षा करें कि कहीं चिड़ २ तो नहीं होता। यदि चिड़ चिड़ होते जानें कि अभी जलीयांश बाकी है। इसमें संधिबंध नहीं करना चाहिये। अन्त में मुद्रा से निकाल कर प्रयोग करें। नारियल को काटने के बाद पानी को गिरा देना आवश्यक होता है। औषध तैयार होने के बाद इसे छानकर शीशी में रखें। म. न. मित्र।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(१६८१) कर्णरोग (दर्द दूर कर देना)

"काकजंघ जड़ रसगहि, देहु कान के बीज।
सुनत शब्द को तत्क्षणे, जो बोलत मुख बीच ॥ स्वामीजी

Antifebrine — देसी (पथ्यादि क्वाथ) — हरड़, बहेड़ा, आंवला, चिरायता, हल्दी नीमछाल, गिलोय छः २ माशा लेकर गुड़ मिला पीवें तो शिरःशूल, भ्रकुटीशूल, शंखशूल, अर्द्धावभेदक, कर्णशूल, सूर्यावर्त, दन्तशूल, नेत्रशूल, पट्ठोंका दर्द इत्यादि दूर होते हैं। अंग्रेजी एन्टीफेब्रीन आदि निर्बलता करके इन रोगों को दूर करती हैं, परन्तु इससे बिना निर्बलता हुए आराम आता है ॥ (हर्ड पुस्तक ५ मतधारा।)

(२) धतूरे का रस ४ छटांक, तेल तिल ४ छटांक, अफीम १ तोला जल शेष होने ही पर तेल रखे। दो बूंद डालते ही दर्द शान्त होगी।

(3) Tinct opii ʒ IV } Ear drops: one or two
Tinct Belladona ʒ IV } Drops should put in Painful ear

इससे तड़पता रोगी भी सो जायेगा।

Tincture Iodine देसी (१६२)

शुद्ध एलवा २० तोला + नीबूसे आधासेर दोनों कोखरल करके छाने। एक बोतल अर्धकृ स्पिरिट मेंथलेटकर (या Rectified में तोखा मीस करते हैं) रखें। जख्म, चोटकादर्द, पुरानेसेपुरानाजख्म नासूर, दाद, चम्बल दूर होते हैं। छाती, पसली केदर्द में भी लाभदायक है। खानेको बताया जावे तो ३, ४ बूंदे गर्मपानी में मिलाकर तीन २ घण्टे पीछे दिन में तीनबार दें तो सर्दी का मलेरिया तक आता है और फिर नहीं चढता। गर्मी के बुखार में ठंडे पानी में दो कतरे दें या मूत्रके साथ वीर्य आता हो, पेटदर्द, अफारा, कौलेज, पेट की गुड़गुड़ाहट, दर्दगुर्दा, दूर होता तथा भूख और अग्निदीप्त होती है॥

(प्रमत १०-२५)

ॐ तत्सत् परमात्मनेनमः (प्रभु)

× सूजाक पर

आधपाव श्वेत फूटकरी की खील करो / ३ माशा खील को आधपाव दही में मिलाएक जान करके प्रातः खावे ही मिलावे। सायंकाल मूंग की दाल गेहूं की रोटी से दें। ८ दिन तक और कुछ न खावे / साबुत नमक मिर्च, गुड़ शक्कर खटाई भूलकर भी न दे। यदि देगा तो निम्न दोष होंगे। गुड़ शक्कर खाने से इंद्रिय पर सूजन होगा। खटाई खाने से इन्द्रिय में दर्द होगा। ऐसी अवस्था में फिर यही दवा देते रहे शान्ति होगी / इससे सूजाक निश्चित दूर होगा॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

क्षय, खांसी श्वास लंग्ज़ टी (२६३)

बाऊ गुलाँ — 2 तो.

श्वेत चन्दन का चूरा — 2 तो.

उदुल सलीब — 2 तो.

(इलायची) रसौत श्याम — 2 तो.

(मुलहठी) असल सूस — 1 तो.

(सौंफ) बादियाँ — 1 तो.

(गुलबनफ्शे के बीज) तुख्म खतमी — 1 तो.

(गुलाब) सेवती के फूल — 1 तो.

दाना खशखाश — 2 तो.

(ओडे) पोस्त खशखाश — 5 तो.

सबीज़ मुनक्का — 25 दाने

मिसरी देसी — 1 सेर

12 घण्टे या 24 घण्टे तक भिगो कर कूट कर उबाल कर छान फिर मिसरी डाल कर सेर उतार लेवे।

मात्रा — 2 तोले सुबह और शाम॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हकीम मोहन (लांडरा)

वैद्य गोविन्दप्रसाद जी के नुसखे। (१६४)

अण्डवृद्धि पर अचूक — स्वदेशी मोम १ पाव गरम करके सांभर नमक १ तोला पीसकर मिलादें। ठण्डा होने पर अण्डकोष के बराबर खोल चढ़ाकर लंगोट कसकर रातको बांधदे। लंगोट भीग जायेगा। प्रातःकाल खोलदे। फिर गर्म जलसे धोकर रातको फिर वही मोमका सांचा लगादे। ऐसा रातको गरम पानीसे रोज धो सांचा चढ़ादे। अन्तको १०, १५ दिनमें बिलकुल अण्डकोश छोटे होजायेंगे। अनेकों का अनुभूत

{वैद्य गोविन्दप्रसादजी
पो. औधापुर (उन्नाव)}

1. जीरकादि अरिष्ट — सूतिका गृहणी में अव्यर्थ।

2. दर्दपर — भांग १ तो० + सोंठ १ तो० + जायफल ६ मासा, आध पाव कड़वे तेलमें पकालें जहां शरीरमें वातादिका या स्थानिक दर्दहो वहां इस की मालिश करे। कफवातज्वर के दर्दमें दें। यदि पित्तज्वर हो फिर दर्द हो तो इसे घीमें पकालेंवे। कल्क छाने नहीं, उबलते घी को ही गर्म करके लेप करते रहें। रातको अनुभूत। निद्रा न आती हो तो मालिश करते २ सो जायेगा। (उत्तम)

3. — बच्चों के दस्तों पर लेप — कच्चे बिलका गूदा १ तोला आमकी गुठली १ तोला + जायफल ६ मासे, अफीम चार रत्ति। सबको पानीसे पीस पकालें और सहता २ लगादें लेप गाढ़ा होना चाहिये। ऊपरसे कागज पतलासा बांधदें। एकबार ही दस्तबन्द होजाते हैं। सन्निपातरोगी बड़ा हो तो भी दस्तरोकने को पेटपर लेप गाढ़ा करदें।

4 — बच्चों की पसली चलनेपर — उसारेबन्द ½ रत्ती
६ मासतकके बच्चों को, १ रत्ती, १ साल से दो साल तक को दूना

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यह दूध में घिसकर दें। तो बच्चे को कै भी दस्त भी आवेगा। इस कफ शान्त होकर पस ली आराम होगा। उसी दिन फिर दूसरी मात्रा कभी न दें। यदि कफ बच गया हो तो अगले दिन दें।

निद्रार्थ — जायफल भांग को पीस घी मिला कपड़े की बत्ती लगा जलाकर फूल के कटोरे में काजल लें। उसे लगाने से नींद आती है।१॥

अफीम १ तोला पतली (गफ्फि दे) बत्ती बना पांच छः मकड़ी के जाले लपेट दे फिर पतला कपड़ा ऊपर से लपेट दे और घी में डुबोकर जलाये ऊपर से फूल का कटोरा रखें। इस अंजन को घिस आंख में लगावे तो नींद लाता है॥

३. नासूर और भयंकर व्रणपर भरने के लिये — व्रणराक्षस तैल। पहले तेल में नीम, गोजिह्वा, मत्स्याक्षीका कल्क पहले पाक करे फिर व्रणराक्षस बनावे फिर अन्त में आम का गूंद मिलावें। आध सेर तेल हो तो १ तोला गोंद डालदें। इसे गरम में घोलने से घुल जायगा। असंभव अपरेशन से बिगड़े फोड़े भी अच्छे होंगे॥

४. प्लीहापर — कुमारीरस २ सेर + शहद १ सेर + पपीता कच्चा $\frac{1}{2}$ सेर कतर करके मिला मुखबंद करके पन्द्रह दिन धूप में रखें। फिर मलकर छान लें। १ तो. प्रात. १ तो. शाम खाली पेट दें। तिल्ली नाश होगी।

५. कर्णसे पूय बहनेपर — पञ्चवल्कल क्वाथ, तिल तेल में पकावें, फिर पञ्चवल्कल क्वाथ में थोड़ी फिटकरी डाल इससे कान को पिचकारी करके तेल डालें। वैद्य ... आ.प्र.औ.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(१६६)

६. मेदनाश — त्रिकुटा + त्रिफला का क्वाथ पिलाने से मेदनाश हो। पतला हो। या शहद का शर्बत पिलायें।

७. मोटे ~~[illegible]~~ होने के लिये — चने भिगो कर खावे। गो. प्र. जी
लाल मिरच न खावे। वि. स्वामीजी.

८. वातशाक से गठिया हो —— इन्द्रायण मूल १ माशा + पीपली चूर्ण ४ रत्ति शहद मिला कर दें तो गठिया दूर हो। विरेचन हो।

९. प्रदर पर — अशोक क्वाथ + दूध दें। या मौलसरी त्वक् चूर्ण + मिश्री मिला दें ऊपर से मिश्री का शर्बत दें। शंखपुष्पी पत्र चूर्ण ३ माशा प्रातः, दोपहर, शाम, ~~जल~~ मिश्री के शर्बत से दें। प्रदर।

१०. पुराने ज्वर और पुराने सूजाक में — बसन्त मालती + मधु + चमेली के देने से पुराना सूजाक गया। नये में अपामार्ग की जड़ गीली अन्तर्धूमदग्ध ½ पाव + शुद्ध कलमी शोरा ½ पाव मिलाने। ८ रत्ति प्रातः ~~गो~~ दूध की समभाग कच्ची लस्सी से प्रातः शामले।

११. रक्तपित्त में — खण्डकूष्माण्ड

१२. रक्तरोक में — पक्का गूलर ½ छटांक + पानी आधपाव घोल कर छान ले १ तोला मिश्री डाल पीले। तुरन्त पीले नहीं तो जम जायेगा। इसे पीते ही रक्त वमन होती हो तो तुरन्त रुक जायेगी। ×

१३. बिच्छू पर — कोकेन के लोशन की खूब में पिचकारी लगाते ही वज्रदंश [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बिच्छूपर — लालपुनर्नवा की ताजी जड़ हाथमें छिपाले। न डंक रोगीको दिखाओ फिर छुपालो फिर दिखाओ फिर छिपालो। एक २ वारमें एक २ बालिश्त जहर उतर जायेगा। ५, ६ वारमें ज़हर उतर जायगा। सिद्ध अनुभूत है जड़ परन्तु ताजी होनी चाहिये। (अच्छेलाल? प्र. वैद्य

बिच्छूपर — चीलके बक्कल पानीमें घिसकर लगादें।

पथ्यादि क्वाथ

हरीतकी छाल, बहेड़ा छाल, आमला, चिरायता, हल्दी, नीम छाल, गिलोय, के, क्वाथ। लेकर गुड़ मिला कर पीवें तो शिरः शूल, भ्रुकुटी शूल, शंखशूल, अर्द्धावभेदक, कर्णशूल, सूर्यावर्त, दन्त-शूल, नेत्रशूल, पहों का दर्द इत्यादि दूर होते हैं। अंग्रेज़ी ऐन्टीफ़ैब्रीन आदि निर्बलता करके इन रोगों को दूर करती है। परन्तु यह बिना निर्बलता आराम करता है

"हई" प्रस्तकार? हकीम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(१६७)

मरहम (१६८)

आधासेर गौके घीको ५० पानीसेधोलें। फिउसमें डेढआने का कत्था और डेढ दोआनेका जायफल बारीकमपडछान कर मिलादें। बस जहां हड्डीतक घाव हो। चीराद्दी है, उसे दीनों मेंभरतारहे। (राजमल सलमान सेतन)

दृष्टिध्रास रोगपर अनुभूत —

१साधुकोदेवकर आक के ५,७पत्ते मैंनीवागया। कै हुई बलगम निकला, दूध्ची पथ्यदिया। इसप्रकार ३ दिनखाये, कै हुई बलगम निकला। तीनदिनके बाद दृष्टि एकदम बिना ऐनक पढ़सकता हूं। तबसे रोज १,२ पत्ते खाता हूं। और २ बीसियों को लाभहुआहै आंखों से उसकी तेज निकलताथा। अबवाकई दुर्घट है आकके पत्तोंका आकतिका लेहांकछे जो.पी.जौहरी खिलावें तोवमनद्धुपंजय बिनकरें। भगवद्दत्त प्रसाद जौहरी

म.रामानन्दजी (लेखनीअद्भिपत)
वैद्य, बरेली बरेली

सर्पदंशपर मूत्रके बकरीदवा

(१) दूधी(लालबड़ी) कारस पिलादो तो शर्तिया सर्पविष दूर होता है॥ (गूजरहेन्द्राल भीवाला स)

(२) हुक्के की नेली के अन्दर का मैल जमारहे/ एकमासाले कर पानी से मिलादें। फिर दो तीन चूर्ण लादो चाहे तिहाई का सांपका जहर दूर होजाता है॥ (विजय…

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अग्निसूतो रसः — भागो दग्धकपर्दिकस्य च तथा शङ्खस्य भागद्वयं भागो गन्धकसूतयोर्मिलितयोः पिष्ट्वा मरीचादपि । भागस्त्रितयं नियोज्य सकलं निम्बूरसे चूर्णितं नाम्ना वह्निसुतो रसोऽयमचिरात्मात्त्यं जयेद्दारुणम् ॥१॥ एतेन खेग्रस्तह भक्षितेन क्षीणान्तरान्हीत्विसमान्करोति । समागधीचूर्णघृतेन लीढ्वान्नटः प्रभुञ्ज्ये ग्रहणीविकारम् ॥२॥ शोफज्वरारोचकशूलगुल्मान पाण्डूदरार्शो ग्रहणीविकारान । तक्रानुपानो जयति प्रमेहान युक्त्या प्रयुक्तोऽग्निसुतो रसेन्द्रः ॥३॥ भैषज्य. ग्रहणी. १२६

ॐ तत्सत्प्रभु: (आवश्यकपर अध्याय)

सन्धिवात :—

(1) दशवृक्ष मुञ्चेमं रक्षसो ग्राह्या अधि यैनं जग्राह पर्वसु। अथो एनं वनस्पते जीवानां लोकमुन्नय। ५ वैदिकधर्म काण्ड २, सू. ९ अथर्व.

मुहंजने वृक्ष की अन्तस्त्वचा जकड़े हुए सन्धिपर बांधी जाये तो दो चार घण्टे तक सन्धि खुल जाते हैं। जो रोग औषधियों से महीनों में दूर नहीं होता वह इस अन्तस्त्वचा से दो चार घण्टों में हटता है। हां, बांधने से उस स्थान पर बड़ी गलनी या जलन पैदा होती है। दो चार घण्टे रहने पर इसके सब दोष दूर हो जाते हैं ॥२॥ वैदिकधर्म.

(2) पित्तक्षयपर प्रयोग — भुनी छोटी हरड़ का चूर्ण १ पाव, सौंफ का चूर्ण १ पाव, कच्ची खांड १ पाव, चार तुख्म (ईसबगोल, बालंगा, तुख्मरिहां, कौंचा) साबुत एक पाव। मिलाकर रखे। छ माशे खोराक दिन में दो बार ठण्डे पानी से दे। खाने को खिचड़ी दे।

(आयु. सन्देश ३२ फ़र. १९२२

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गर्भस्राव को रोकने में —

कसेरु, शृंगाटक, पद्मकोत्पलं, समुद्रपर्णी, मधुकं क्रमाद,
सशूलगर्भस्रुति पीडितांगना पयोविमिश्रं पयसा ऽन्नभुक् पिबेत्

गर्भवती की कै —

दरियाई नारियल ४ रत्ती, जहर मोहरा (नीली) ४ रत्ती
वंशलोचन १ माशा, छो. इलायची १ माशा, नींबू के बीज
३ या ५ नं. ले। गुलाब के अर्क में खूब रगड़ लें। फिर
शर्बत नींबू या किसी उत्तम शर्बत में मिला कर थोड़ा २
चटाया करें॥ (वैद्य काली चरण जी दिल्ली)

कान के बहने पर
(अनुभूत)

कौड़ी पीली की भस्म, इसे कान में डाल नीम के रस की
५, ४ बूँद कान में डालें। छः रोज तक लगातार प्रतिदिन
एक बार। फिर पिचकारी से कान को धो कर ग्लैसरीन
या तेल डालें और नीम के पत्तों की भाप दें॥ (वैद्य काली चरण)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दर्द — रायरोशनलाल जी वैद्य के नुसखे। (१६२)

सारे शरीर में कहीं दर्द हो आने हेतु होगा —

बालछड़ + कपूरकचरी + लौंग + बड़ी इलायची के दाने + हाऊबेर
१ तोला, १ तोला, १ तोला, १ तोला, १ तोला

सनाय मक्की सबको कूट छान कर दो तोला गोघृत में गरम करके
...

दस तोला खांड, २० तोला शहद मिलाकर दवा बनायें। १ तोला सुबह
१ तोला शाम खायें। ... का इस्तेमाल न करें॥

Brain tonic — نسخہ ضعف ...

हरड़ पीली, बहेड़ा, आंवला, बहनी + बादाम मगीज + पिस्ता
१ तोला, १ तोला, १ तोला, ३ तोला, ५ तोला, ३ तोला

चारमगज + तबाशीर + छोटी इलायची बीज + कुठ मीठी + मिश्री +
५ तोला, २ तोला, १ तोला, ६ माशा, २२ तोला

मूंगाभस्म — सबको मिलाकर १ तोला प्रातः, १ तोला शाम दूध से देवें॥
६ माशा

पुराना ज्वर (कुर्नबे) —

सनाय मक्की, कुटकी, पित्तपापड़ा, हरी गिलोय, चिरायता,
४ माशा, ४ माशा, ४ माशा, ८ माशा, ४ माशा

गावजबां + हरड़ + नागरमोथा + गुलबनफशा + खूबकलां + इन
४ माशा, ४ माशा, ४ माशा, ४ माशा, ४ माशा

सबको ३ पाव पानी में औटावें। जब आधपाव रहे तब छानकर ठण्डा करके बोत-
लों में रखे। खौराक आधी छटांक एक समय प्रातः शाम पीवें। जब तक आराम न होवे॥

نسخہ ...

इलायची दाना, जिरिश्क + कंवलगट्टा + अनारदाना इनको पीसकर
६ माशा, ६ माशा, ६ माशा, ६ माशा

मुनक्का दो तोला में मिलावें। गर्मी को दूर करता है। शर्बत बनाकर पिये
यदि तबीयत खराब हो या दस्त आते हों॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

جگر کے لئے –

فولاد – سرکہ جامن دونوں کو ملا کر چینی کے برتن میں چھ روز رکھیں –
۳ تولہ – ۶ تولہ

پھر تر پھلہ اور دودھ گئو کا ~~[illegible]~~ دہی بناکر لیکر یہ سب سب چیزیں ملا کر چھ
۳ پاؤ ۳ سیر
سات روز کھول کر لیں – خشک ہو کر برابر گولی – اس کی صبح ایک شام عرق سونف
ایک پاؤ عرق مکو یہ دو تولہ عرق گاؤزبان دو تولہ شربت بزوری دو تولہ
سب کو ملا کر دیں – اس کی پہلی گولی سے جگر والا بیمار تندرست اچھا ہو جاتا ہے
(سردار شمشیر سنگھ جی)

(रविद) अम्लजशूल — श्री [illegible] जी

Soda Bicarb 10 ग्रेन
light megnashia carb 10 ग्रेन
white Bismuth carbonate 10 ग्रेन
(इससे पाखाना काला आता है)

खाने के उपरान्त बाद दोनों [illegible] खाने के बाद दें।

दस्तों की गोली

कालादाना + सोंठ + सनाय प्रत्येक एक २ तोला
गुलकन्द ३ तोला (सब को गुलाब जल में घोट कर मटर के
समान गोली बनावें। १ या २ गोली से दस्त आते हैं गर्भवती
को न देवें। N. N. Mittra

(सुख प्रसव) गर्भवती को गुलाब (N. N. [illegible])
शीरखिस्त (manna [illegible] कम्पौंड काग़ज़ी में भी
उपर पौंड मिलता है) एक या दो तोला गुलाब जल के
[illegible]
होगी। या एरण्ड को तेल दें। विचार [illegible] N. N. [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अनुमोदित —
magner Hydrol Arkam
पं. राधेलालजी के

स्वामी ॐ तत्सत प्रभु (ब्रह्मचैतन्यानन्द) के नुसखे
बम्बई वाले)

इन्द्रियशैथिल्य नपुंसकता पर

जराबंद फल दो तोला इसके जौ के सदृश टुकड़े करके ८ पुड़िया बनाले। एक पुड़िया को मैल-रहित नयी मलमल की पोटली में बाँध दे उसे १ पाव गो दूध + १ पाव पानी मिला कर मन्दाग्नि पर पकावे। जब जल जलजावे तो पोटली निचोड़ कर कोसा २ पिलावे ऐसे ८ दिन तक प्रातः पिलावे। परहेज - अचार, गुड़, शक्कर, तेल, करेला, बैंगन, मसूर की दाल, मैथुन तीन माह परहेज रखे। दूध घी खूब खावे। ॐ तत्सत शान्तिः। इससे नपुंसकता नाश हो गयी (ब्रह्मचैतन्यानंद जी)

ॐ तत्सत परब्रह्मणे नमः (रक्तविकार, आतशक, अन्तर्दाह पर, रक्त की वृद्धि पर तथा अनुलोमक्षय पर अव्यर्थ योग - परीक्षित यौगिक चिकित्सक)

रूमीमस्तगी असली + उशवा मगरबी + छोटी इलायची बड़िया + मुलतानी मिश्री सम भाग लेकर पीसकर दो मासा दिन में तीन बार गाय के दूध में पिलावे तो अन्तर्दाह नाश करके रक्त शुद्ध करके रक्त वृद्धि करता है। अनुलोमक्षय को नाश करके सब धातुओं को बढ़ाता है। पुष्टता के बाद भी नित्य को चढ़ती ग्रमिया के ... [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(१६५)

1. जम्बग मल्हम का असली नुसखा।

युकेलिप्टिस का तेल	१४ हिस्से	पहले रालको साधारण नरम आंच पर पिघलायें फिर दूसरी चीजें मिला कर इकट्ठा करें। यह जम्बग है। ३/५ औंसकी कीमत १=) है। यद्यपि असली लागत =) भी नहीं।
पीली राल	२० हिस्से	
नरम पैराफीन	५५ हिस्से	
सख्त पैराफीन	११ हिस्से	

हरा रंग मामूली झलक के लिये।

श्री सुरेन्द्रमोहनजी आचार्य B.A. के अनुभूत

1. पुद्मसत्तीन ३ माशे का क्वाथ करके मलेरिया ज्वर चढ़नेसे ४,५ घण्टे पूर्व पिला दें। शीघ्र छूट जाता है। विरेचन आवश्यक हो तो पहले कुटकी का विरेचन देदें। अथवा करंजबीज के चूर्ण को पुद्मसत्तीन के क्वाथ की भावना दे २ कर गोलियां बनादें तो भी ज्वर रुक जाता है।

2. कर्णधावन— रसौंत से धोवें।

2. तृतीयक ज्वर पर अव्यर्थ।— पहले दिन विरेचन दे कर मकड़ी का जाला गुड़ में लपेट कर चने बराबर दो गोलियां ज्वर से पूर्व निगलवादें।

3. गण्डमालामें कांचनार गूगल दें गोरखमुंडी पित्तपापड़ा गिलोय कोलु घसे। यदि मुंह कड़वा है तो कुटकी भी क्वाथ में दें। लाभ होता है।

8. १ तोला संखिया की डली एक पाव नर फिटकरी नीचे १ पाव ऊपर रखकर हांडीमें मंद २ पाक करें। ऊपर टंकनमें संखिया को जौहर लगेगा। उसे वाजीकरणादि में दें। फिटकरी मलेरिया में १ रत्ती दें। या साधारण फिटकरी भस्म २ रत्ती संखिया १/२ रत्ती पूर्व ज्वर से दें। ज्वर नहीं चढ़ेगा॥

५. हिमसागर तैल में हिमसागर पाषाणभेद के स्थान को कहते हैं।

६. [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

७. मधुमेह में— बसन्त कुसुमाकर को बिल्वपत्र स्वरस से दें। मण्णाःप्रसीत॥

७. मधुमेह — बसन्तकुसुमाकर को बिल्वपत्रस्वरस से दें। कृष्णानन्दसेन॥

आरोग्यवर्धिनी।

रसगंधकलौहाभ्रं शुल्वभस्म समांशिकम्।
त्रिफला द्विगुणा प्रोक्ता त्रिगुणं तु शिलाजतु॥१॥
चतुर्गुणं पुरं शुद्धं चित्रमूलं च तत्समम्।
तिक्ता सर्वसमा ज्ञेया सर्वं सञ्चूर्ण्य यत्नतः॥२॥
निम्बवृक्षदलाम्भोभिर्मर्द्दये द्विदिनावधि।
ततश्च वटिका कार्या राजकोलफलोपमा॥३॥
४२ दि. मंडलं सेविता सैषा हन्ति कुष्ठान्यशेषतः।
वातपित्तकफोद्भूतान् ज्वरान्नानाप्रकारजान्॥४॥
देया पंचदिने जाते ज्वरे रोगे वटी शुभा।
पाचनी दीपनी पथ्या हृद्या मेदोविनाशिनी॥५॥
मलशुद्धिकरी नित्यं दुर्धर्षक्षुत्प्रवर्तिनी।
बहुनात्र किमुक्तेन सर्वरोगप्रशस्यते॥६॥
आरोग्यवर्धिनी नाम्ना गुटिकेयं प्रकीर्तिता।
सर्वरोगप्रशमिनी श्रीनागार्जुनयोगिना॥७॥

---

(१) स्वर्णभस्म — ६ माशा शुद्धस्वर्णपत्रों को कचनारफूलरस, नीमके पत्तों का रस, तुलसी का रस, गुलाबांस की जड़ का रस प्रत्येक आधा पाव स्वरस में क्रमशः खरल करके पुट दे, १० सेर उपलों में तो रक्ताभ भस्म १ पुट में हुआ। पांच सेर और उपलों की दूसरी बार आंच दी तो रक्ताभ दोनों ओर से होगया है। अर्थात स्वर्णभस्म १ बार में होता है॥ अनुभूत विधाता॥

(२) स्वर्णभस्म — शुद्ध स्वर्ण १ तोला, शुद्ध पारा ३ माशा॥ मिला, काली तुलसी स्वरस में खरल करके पुट दे दे। फिर केवल तुलसी स्वरस में पुट दे। तीन पुट देते तो भस्म होगा। (नरेन्द्रनाथ, मित्र) रविकान्त कालिज एम कोटा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

white प्रदर (बंगचतुष्कि) (966)

बंग + शुक्ति + लोह + श्वेतराल समभागले। दोरत्तिमात्रा प्रात: सायंकाल खांडमिलाकर जलसे दें। पुरानाहोतो फिर असली नागकेसरचूर्ण 4 रत्ति + छोटीइलायचीचूर्ण 2, दोरत्ति मिलाकर ठण्डेपानी यादूधसे दें। इससे प्रदरनाशहोकर गर्भस्थिरहजाताहै॥ (म॰ म॰ मिश्र

सूजाक

(1) रससिंदूर + बंगभस्म — दोरत्तिमात्रा प्रात: शीतलचीनी
  1 1 चूर्ण 4 रत्ति + शहद से दें

(2) स्वर्णबंग दोरत्ति, गिलोयस्वरस वा हल्दी के स्वरस से शहद मिलाकर दें।

पीप जलन आदि शान्त होगी। (जलन में चन्दनतेल मैसूर का भवर्व)

पिचकारी — फिटकरी 1 रत्ति + जल एक औंस मिलाकर दें अधिक कष्ट में cupstlizeo कसीस ½ रत्ति मिलादें। और जल्दी हो तनिक नीलाथोथा मिलादें। और बबूल त्वक् क्वाथ में घोलदें। दिन में दो बार पिचकारी दें। (सा. बुतबोतलमें पानी में 3 माशे फिटकरी काफी है॥ राम

म. म. मिश्र

Sammitto सुजाकपर America
मांहीरखुर्द की फंकी सूजाक के वास्ते॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अपूर्व स्तम्भनकारक चूर्ण

1. अकरकरा — ३ माशे
2. रिहां के बीज — २४ माशे
3. सफेद कन्द — २० माशे

} इनको पीस कर रख लो। मैथुन से पहले दो घण्टे फांक लो। पीछे मैथुन करो। यदि उन्माद का वीर्य स्खलित न होवे तब तक नीबू का रस न पियोगे कदापि स्खलित न होंगे। बिना सन्देह निश्चय यह अपूर्व वालों के अच्छा आजमाया हुआ है॥ ४ ...

कड़ाही की दवाई (अतप्रकरण)

नौसादर देशी ६½ तोले, नींबू का रस ढाई पाव लोहे की कड़ाही में डाल कर नीम के सोटे से पैसा जब तक इन दोनों को घोटो। जब घोटने २ सूख जाये तो टेंट या डले के समान गोली बनावे। एक वटी प्रात: उष्ण वा शीत जल से उपदेश उपदेश जनित रोगों का दोलत्व, पुरातन उपदेश विशेषत: जीर्ण नामके वा मासा, देह न किंचित् पाहिद नपक विशे ...॥ (काली चरण)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्री शिवदत्त जी आयुर्वेदालंकार (१०८)

जलोदर — रज: प्रवर्तिनी को किसी गर्म से पानी के साथ
(१) क (प्रभ्यात) शालाशेवर बवां इ क्वाथ से देता रहे।
रोज दो गोली सुबह शाम देता जावे।
थोडा क ऊंट के दूध के बोच (?) में दिन भर में आधा
सेर आधा १ माशा तक कश्मीरी केसर देता रहे।
प्रति दिन ऐसा करते रहें तो ४० दिन में सब
जलोदर नष्ट हो जाते हैं। (एक सेर दही पीना और
थोड़ा कर्म गुलकन्द जितना चाहो दते रहो।
इस से शान्ति प्राप्त होता है

(२) मूलत का शक्र दूं मैदक — जौखार, नौशादर
कलमी शोरा, सफेद जीरा प्रत्येक एक २ तोला
और रेवन्द उसारे ½ तोला जल कर इसकी मात्रा
बना लें। (इसकी मात्रा २ माशे तक एक कलम पर
(परन्तु एक मासे का ही है) दिन भर में एक तोला
मात्रा तक दें। (उष्ण पानी से दें। इसे खिलाते
हुए कोई भी दुग्ध पिला सकते हैं। इससे उदर
विरेचन हो कर जलोदर २० दिन में शान्ति नष्ट
होगा। कमजोर होने पर दूध अधिक पिलावें।
इसमें पर हेज़ी न करावे ...... सब डाक देंगे
...... दूध ...... देता
१० दिन में ...... जाते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA.

१० दिन में दूर हो जाती॥

(१२०)

डा० श्याम सुन्दर कपूर,
कर्णस्राव (फीकीमोलो) — सुपारी, नीमकी छाल, सौंठ, रीठे का छिलका (कम न होतो छितकी भी पारी मिलावें) प्रत्येक एक भाग लेकर जल से बेर समान गोली बनावें। दिन में तीन गोली गरम पानी से या दूध के साथ खावे। यह कर्णस्राव बंद है। रहा न जावे तो थोड़ा नमक खावे। चावल फुल का छिलका (घी, मूंगी का हलवा, चटनी खावे) सूखा, आतशक में शान्ति मिलेगी मदद करती है। पहले पेट चन्द ले॥

Picture Zodiac (शोधक)
एण्ड कं० द्वारा
चोट लगी ठीक हो जाती है। १५८,

नारियल का छिलका अर्थात लकड़ लाल मांसले तीन या ३ माशे से ६ माशे तक। फूंक के पातालयंत्र से तेल निकाले। इसे १ बार या ज्यादा से ज्यादा दो बार हमेशा के लिये एक बार लगावे तो चोट की सूजन दूर नाश होती है। (आमी, दाद, एक्जिमा, खाँसी पेट का दर्द नाश होते हैं॥

इसे ही घी मिला कर लगावें तो लिंग में लगावे तो तिल का का मर्दन करें॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मर्दों ... [illegible]

आककी ताजी जड़का चूर्ण (हंडी में पकाके) दो तोले तक ले दूध आधसेर (जिसमें सोंठ पैसे की डली १ तोला डाल उबालाके डली बाहर निकाल दो) इस दूध में आक का चूर्ण मिलाकर खोया बना लो। इस खोये के दो २ तोले के लड्डू बनाले। इसे एक लड्डू रोज़ खालें। ये अत्यन्त अकसीर है। यदि धातु में ... हो कावट न हो तो इसमें फी मात्रा लड्डू में १ माशा ... मस्तगी का चूर्ण मिलाते हैं। इससे पुष्टि बढ़ती है। निर्मल निधा के कमज़ोर बीमारों को भी दें।

श्वेत कुष्ठ पर — ... + ... तथा बावची मिलाकर ३ ... शहद से दें तो ... को नाश। ... में खिलावें। ... मात्रा देवें॥ (एक छोर)

बूढ़ों का पानिक — खाने के बाद ... छोटी खिलावें दोनों समय खिलाते हैं तो बूढ़ों का जवानी आती रहती है और बाल काले होते जाते हैं। चेचक के दिनों में खिलाते हैं तो चेचक नहीं होती॥ ...

सर्वसिद्धि ... (एक्छेड़ ...)

रसौत, जलका कुशल, ... , ... , ... , ...
... , ... , ... , ... , ... सामान

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कोई दन्तचूर्ण ,) नीला थोथा, भीमसेनी कपूर (तुल्य मात्रा पृथक) सबको सम भाग लेकर भांग के [illegible]
खरल करके आंखों में लगावें (यदि त्रिफला, भांगरा, रसौंत, कै घृत लभें आंख की औषधियों को खरल करें तो सब नेत्र रोग नष्ट होते हैं ।। इसे आंखों में लगावें तो कुकरे फूली तिमिर, ढलकना। जाला फूला दूर करती है। (कुकरे में इसे फिटकरी गुलाब की दवा से धुला दे) ।। अन्य सब रोगों को भी दूर करता है । [illegible] गोलियों को काली मिर्च का चूर्ण ही [illegible] शहद आदि लेही दें तो सब रोग नष्ट होते हैं ।।

गंडमालादर (एकाद[illegible])

(1) गिलहरी की भस्म चूर्ण मल शहद में देते जाओ, तब यदि कोई भी गांठ पिंड हो तो अवश्य नाश शीघ्र होगी ४० दिनों
(2) गंडमाला पर तेल — छिपकली, छछूंदर चूहे का तेल पाक कर तेल में तेल बनाकर लगावे । इससे तब लाभ नहीं होता कद बालों वाले के योग से आराम होता है ।।
(3) हिचकी पर (अथवा) — कपूर + केसर + लहसुन [illegible] को खरल कर गोली हो जिसकी गोली मुंह में जल लेवें तो हाथ पेट के [illegible] होने [illegible] हिचकी [illegible] को तुरन्त लाभ देते हैं । [illegible] के [illegible] इस लेकर मलो (एक वा दो ही काफी है [illegible] (तीन बार १० दिनों तक) तो लाभ हो ही जाता है । [illegible] खाने को ।।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(१८३)

हिस्टीरिया — [illegible]

नामर्द पुरुषों के साथ स्त्री सहवास करने के पुरुष से जो हिस्टीरिया होते उसमें सम्पर्ण गोपनक — स्त्री को नग्न करके योनि में इन्द्रायण की धूनी दें। एक बार देने से ही सदा को आराम हो जाता है। [illegible] नहीं॥

टॉन्सिल पर कांटे (स्वरयंत्र)

गला, पलके रूप, बांह की जुड़ती नलों को खींचकर के। अंगूठे की उंगली के मध्य को पकड़ लगाकर खींचकर [illegible] कोण नेको [illegible] लगादो। पीठ के कंधों की हड्डियों के नीचे गले तो कांटे निकलेंगे। उन कांटों को नोच कर फेंक दो तो आराम रहेगा टॉन्सिल दूर होते हैं॥

नकसीर ((एक बार)

उंगली कटते ही शिलाजीत नमक कर पट्टी बांध देने से दो घंटों में आराम होगा। हर काम [illegible] काम करती है॥ (अनुभव)

— मलेरिया —

लाल मिर्च [illegible] चूना मिलावे फिर आक धतूरा तुलसी के पत्तों के रस निकालकर [illegible] गरम करके [illegible] गोली बनाकर [illegible] पट्टी दो। ४० [illegible] ले [illegible] सिर को गुड़ का लहसुन + [illegible] बीज दोनों की गोली [illegible] मिलाले [illegible] गरम करके घंटे २ बाद बदल कर लगाते रहो। २४ घंटे [illegible] फिर [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रायतो पानी में डालकर अच्छा शरीरे [illegible]
सोना लाल तपाकर सौ बार बुझाकर उसकी भस्म को दूध से
१ तोला तक पिलावे। दिन में तीन चार बार पिलावे।
फिर गौ का एक बार का दूध गरम करके पिलावे।
और Life Time मात्रा चन्द्रोदय देवे। (२ ग्रेन की गोली होती है) फ्रिस्प्रेज ½ औंस
खाते जावे और हर एक मन तृप्ति दिलाया जावे तो
४० दिन के बाद रोग दूर हो जावेगा मगर नामर्द होगा अर्थात
वीर्य सूख जावेगा व चेहरे की आभा [illegible] होगा।
फिर दूध जावलन्द। नामर्दी का इलाज न करे। वह
मरते दम तक जवानी पावे। रुई में लपेटे तो [illegible] नाक
लगावे। सिर पर कपड़ा रखे हुई आंधी रखे। नामर्दी
२ साल के बाद स्वयं अच्छी होजावेगी। शरीर की खाल
नई निकलेगी पुरानी खाल झड़ जायेगी॥ इस प्रकार
मुर्दा जिन्दा हो सकता है - एक [illegible] आनन्द दीवान शाह
औरंगाबाद में [illegible] यह काम कर चुके हैं पर
४० मन रुई का दान करवा देवें। तथा इच्छा हो तो
१००० ब्राह्मणों का वा [illegible] भोजन करावे।
इस पर वैद्यजी मशहूर हो के दवा भी करें॥

[illegible]

स्वादिष्ट चूर्ण — (१८५)

पोदीना, नमक काला, सेंधा, मिर्च, जीरा, अनार दाना, काली मिर्च, नीबू का सत, लौंग, बड़ी इलायची खांड

— नस्य — (बूटियों के)

गुलबनफशा, ~~अस्त~~ जटामांसी प्रत्येक एक २ तोला लो, उस्तखद्दुस तथा कश्मीरी पत्ता दो २ तोला लेकर/ सबको कूट छान कर ही तोल करे। इससे गले का रुका हुआ कफ निकलता है। सिरदर्द ठीक होता है। टांसिल भी ठीक होता है। (साधु — बुखारा व बूटी वाले)

तुलसी के पौधे या नीले फूल का जंगली तमाखू की तरह का पेड़ जो यहां तथा कश्मीर में होता है उसकी जड़ या पत्ते पीसकर जल से धोकर लेप करें तो गांठों फोड़ों को फोड़ता दबाता या पकाता है। भरता है लेप तथा साफ करता है। बहते खून को रोकता है। दर्द चोट को दूर करता है।

कुछ लोग बिच्छू बूटी को ज्वालामुखी / जंगल की तरह के पेड़ को अपनी तथा कंद को मीठा तेलिया कहते हैं जहरी कंद पहाड़ का

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्री स्वामी ब्रह्मानन्दजी आर्य (१८६)

1. चातुर्थिकज्वर — एक माशा की एक ही डली हो उसे देशी मोम से पिघला कर लपेट दे (पतला cover हो) आध सेर गौ के ताजा दूध से निगलवा दें और उस दिन उपवास करा उसी बारी से चौथिया ज्वर चला जायेगा / पुराण ज्वर हो तो दो बारी में चला जायेगा / बारी वाले दिन में ही देवें।

2. निमोनिया — एक रत्ती जवाखार अथवा एक रत्ती + भृंगराज भस्म आधी रत्ति ऐसी तीन मात्रा दिन में शहद से चटावें / अण्डों की ज़र्दी का तेल नौसादर वाले की मालिश करें /

अण्डों का तेल — ज़र्दी अलग करके (चाहे कच्ची हो चाहे उबाल कर ज़र्दी निकाल लें) ज़र्दी एक तसले में लें १ दर्जन अण्डों की ज़र्दी तसले में डाल मन्दी आंच कोयलों पर पकावें (अन्दर आंच लग जाती है इसी दशा में कुछ देर आंच को बुझा देवें / जब पक कर खुश्क हो जावे तो भी हिलाते रहें / आखीर सूखने के बाद पिघलेगा फिर तभी एक तोला नौसादर पिसा हुआ मिला कर हिला दें / अन्त को तेल अलग हो जायेगा और कोयला बन जावेगा / इस तेल की छाती पर मालिश करें / दर्द निमोनिया दूर होगा / चोट आदि लगने पर या निमोनिया वाले को जोड़ को दिनों में इसे १ मा. से ६ मा. श्वेत ताक दूध में मिला कर [illegible] / [illegible] जल्द आराम हो जाता है /

वीर्य दुर्बल के लिये — १ बोतल गुल बकाइन के गुलकन्द में १ तोला बादाम रोगन डालकर खिला दें तो कमजोरी को [illegible] /
२. आँवले [illegible] बलवीर्य बढ़ाते हैं /

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(३८६)

चेचक — Cream of tartar एक औंस एक बोतल पानी में घोलकर / एक २ चमचा पिलाते जावें / और कुछ न करें कुछ कष्ट आदि न होगा ।

बिच्छू — लोहे की छड़ को मंत्र पढ़कर ६ हिलाकर लगाते जावें । क्रमशः दर्द स्थान पर ही आ जावेगी / और बिल्कुल ठीक हो जायेगा ।

कब्ज़ कुशा — सनाय ३ भाग, कालादाना ३ भाग, (डंडी निकाल दी) (बीज आधा भूनलो), काला नमक १ भाग
इसे ६ माशे तक द गर्म पानी से सोते वक्त दें तो प्रात:काल एक दो टट्टी आ जाती है / बलगम जो ऊपर हो तो भी निकल जाता है / बलगमी दमे के लिये अपूर्व है / तीन दिन से अधिक नहीं देना चाहिये ॥

स्तंभन — सिंह का हिनौदा ....

अजन्द बनाली (नाबुको (१८८)
अ व्यथ्रि तिलकैं कोह नदी

गोदन्तभस्म दो तोला
राल २ तोला
शुद्ध नौसादर ४ तोला
मुर्दासंग २ तोला
कपूर २ तोला

सबको कूट छानकर काडू तिलाकर रखें। उचित मात्रामें (१ रत्ती, १।। रत्ती मक्खनमें) मिलाकर खावें। परीक्षित

६ कीम अजमलखांका नुसखा

1. रक्तशोधक —
चिरायता, पित्तपापड़ा, लाल चंदन, कालीहरड़ मुण्डी, सरफोंका, उन्नाब। इनका क्वाथ जलावके शर्बतसे पीवें तो निश्चयहै रक्तशुद्ध होता है ॥

(2) जुकाम ज्वर — बिहीदाना ५ मासे, उन्नाव ७ दाने लसूड़ियां ११ पानी में पकाकर मिश्री मिलाकर पिलावें ॥ २ तीन दिन में आराम होगा।

कानपीप का अकसीर (परीक्षित)
६ मासे बिहीदाना पोटली बांधकर दूध में औटाकर १०, १२ दिन पीवें तो पीप शान्त हो जाती है ॥

श्री यादवजी त्रिकमजी का घाव का मलहम (मरहम)
Zinc oxide १ तोला
red oxide of mercury ३ माशा
कपूर १ तोला
... } शतधौत मक्खन १० तोला
... लगाकर ... करें।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्रीमाद वजीके नुसखे (२८७)

रामलालकी स्त्री लीलावतीके ज्वरतथा
{चिरसे मासिक धर्म न होनेपर नि:सन्तानपर
विषतिन्दुक १ रत्ति + कासीसभस्म (वा मण्डूर) १ रत्ति + कुनीन १ रत्ति। दिनमें दोमात्रा दूध या पानीसे भोजनके आध-घण्टा बाद १, मासतक खावे

कासीस १ तोला + बोल (मलकी) १ तोला + टंकण १ तोला + हिंगु १ तोला + मुसब्बर १ तोला + शुद्ध मल्ल ५ रत्ति। जटामांसीके क्वाथमें चना बराबर गोली बनावें। भोजनके बाद एक २ गोली पानीसे दोनों समय खा लेवें॥

मासिकके लिये नारायणतेल की तथा सेंकना

{पिता सांई} च्यवनप्राश ६ माशे रामलाल (प्रथम के लिये तथा खांसी)
नीममज्जा २ भाग + पोकमज्जा १ भाग + सौंठ २ भाग + द्रुमुलबेन १ भाग + कहरवा गुलाबपिष्टि १ भाग। पानीसे चने बराबर गोली बनावें। रात को सोते समय पानी या जलसे दो गोली खावें॥ यादवजी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(२५०)

कालीमल्हम (या नौरत्नी मल्हम)
लक्ष्मीचंद सेठी (रामस्टोर)

तिलतैल — ३ पाव
मीठासिन्दूर — ३ छटांक
सफेदा — ३ छटांक
} नोट — तेल में नीम के पत्ते जलाकर डालें तो और भी अच्छा होगा

मोम, राल, रतनजोत, नीला थोथा, मुरदासंग, कमीला प्रत्येक तीन २ तोला, नीला थोथा ३ माशे।

— विधि —

पहले तेल गरम करके सिन्दूर डालो। और जलकर काला रंग का हो जावे। तो सफेदा डालो। जब वह भी आधा जलकर हो जाये तब मोम डालो, घुलने पर शेष सब भी डालो और उतार लो। हल्के कपड़े को भारी करके ही उतारते हैं। चिपकजावेगी।

(१) बवासीर का नुस्खा (सामान्य बीमारी) (गोलियें)

बकायन की जगिरी २½ तोला + नीमबीज मज्जा २½ तो. शुद्ध रसौंत ५ तोला + सुहागा खील १ तोला + गेरु १½ माशा। मकोय का स्वरस १ पाव ले उसमें घोट जंगली बेर नाप की गोली बना। खाली पानी से प्रातः १ गोली २१ दिन खावें।।

(२) मरहम बवासीर

(१) गोदन्ती हड़ताल २ तोला (दो तोला गोदन्ती को ५ अकौ में लालौर करें)। (२) राल २ तोला + (३) रसौंत ४ तोला (४) मुर्दासंग २ तोला + (५) काफूर २ तोला। सबको कूट छान कर पीला गौ के मक्खन में मिला बनावें और लगावें फायदा।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वामा विलास (अनुभूत) (१-५१)

योनिसंकोचन ।

(1) समालं कमलं पिष्ट्वा पयसा कारयेद्वटीम्
तन्निधाय क्षणं योनौ वृद्धापि स्यात्कुमारिका ।
(2) निःदला धातकी पुष्पं जम्बूत्वक् लावरैः समं
सक्षौद्रैः लिप्तगुह्या च कन्येव जायते भवेत् ॥
(3) नागिगन्धं वलाभ्यो पानि शेदीव कुष्टकैः ।
तोयपिष्टैः स्मरागारं लिप्तं गाढतरं भवेत् ॥

योनि सुवास

(1) लवङ्गतौ सा पद्मं तैलं जातीपुष्पैः प्रसाधयेत् ।
नारीगुह्यं तदभ्यङ्गेन सुगन्धि सततं भवेत् ॥

लोमशातन

(1) कटुतैले नागचूर्णं क्षिप्त्वा सप्ताहमातपे ।
निधेयं मर्दनात्तत्तु योनिलोमापहारकम् ॥१॥
(2) सप्ताहं भावितं शंखभस्म रम्भाम्भसा ततः ।
तालेनयुक्तं हरति योनिलोमानि योषिताम् ॥१॥
(3) हरितालं पलाशभस्म रम्भाजलान्वितम् ।
एतस्य लेपात्लोमानि न रोहन्ति कदाचन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्री स्वामी सोमतीर्थजीकी बातें (१८२)

1. अफसन्तीन १ भाग, मस्तगी १ भाग, नौसादर ⅙ या ⅛ भाग चूर्ण करके ३ से ४½ माशे तक जलसे दें। तो ज्वर, यकृतको दस्त लाके ठीक करेगा, अम्लपित्तको भी ठीक करते हैं। सेवा [illegible]॥

2. नमक + काली मिरच, सरसोंका तेल इनको मंजन या गले में भरकर दोतीन कुल्ले करें तो गला, नाक, कान और दांतके रोग नष्ट होते हैं। हिचकी भी बंद होती है।

3. योगी रोगी, मच्छ बावरो, साली भूत निबद्धु।
कर्म का पापी एह डोलें, ज्यों भाडेके टट्टू॥

4. हृद्रोगके लिये — मकरध्वज, मोती मक्खन या गुलकंद से दें। या जवाहरमोहरा, दवालमुश्क दें।

5. हिस्टीरियाके लिये — जलबाष्प, भोजनके बाद रेत १ माशासे ६ माशा तक फांकें। जप हवनादि करे॥

6. अन्त: नाकके या त्रिकुटीमें ध्यानकर नेसे सब प्रकाश इधरका और उधरका जगत दीखने लगता है। अर्थात सब सिद्धियें यहांसे प्राप्त होती हैं। ब्रह्मरन्ध्र तथा हृदयके ध्यान से तो निर्विकल्प समाधि प्राप्त होती है। शेष भिन्न २ स्थानों के संयमसे भिन्न २ रूप रसादि प्रकाशित होते हैं। जैसे

7. कानमें संयम करे तो दिव्यशब्द, आंखमें दिव्यरूप॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दद्रु गुदी — छुहारी के ऊपर के बाल १ छटांक को उसे २१ छटे पानी में पकाकर १२ छटांक बचने पर छान शीशी में डाल लो। फिर शुद्ध कुंद १ छटांक रोज मिलाओ। ५, ७ दिन में दद्रु गुदा नाश करेगा। फिर कभी नहीं आती। परहेज की जाती है। (शिवकुमार फ़ीरोज़पुर)

ज्वर नाशक वटी — सुदर्शन चूर्ण १ तोला + मालती २ तोला + अभ्रक १ माशा जल से मटर बराबर गोली बनाओ ज्वर न आवेगा, आवे तोड़ता देगी। (स्वर्गीय विधान)

दद्रु पर — लाल कौवी जो पीस कर आग पर बांध १½ माशा
लेने से दद्रु पर आराम होता तथा पेशाब आता है। सिद्ध प्रयोग है। (देवानन्द ज्योतिषी)

× × | दद्रु गुदा पर अनुभूत (१०० रु
(गुदे के रोग) इलाज गुलगुल — ओर कालीमिर्च
जंगली कबूतर की बीट को अलसी के तेल में पीस ले गोली। जल से पीस कर बड़ी मटर जितनी गोली बना कर खालो। सायं प्रातः एक-२ गोली गरम पानी से दें। आराम होता है असाध्य है॥ अनुभूत

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible] साध्य है॥ अभ्यस्त:

~~[illegible]~~ (१५४)

कविराज श्री सागर प्रभुदेवालंकार गु.को.फार्मे.कम्पा
लाहौर

— संग्रहणी का नुसखा —

शतावर का रस	१ बोतल
अर्क सौंफ	१ बोतल
मिश्री	१ सेर
गिलोय सत	१ तोला
सफेद मिर्च	६ माशा
अजवायन सत	६ माशा
पीपरमिण्ट	६ माशा
अफीम	१½ तोला
निम्बू सत	½ पाव

दो तार की चाशनी का शर्बत बना लें।
१ वर्ष के बच्चों को — ५ बूंद
२ से १४ वर्ष तक १० बूंद
१४ से २० वर्ष तक ३० बूंद
ठण्डे पानी से दें॥

---

(२) दस्तों के लिये

एलवा,	१
उसारेरेवन्द	१
सकमोनिया	१

२ रत्ती की गोली जल से बना लो तो दस्त लाती है।

---

(३) खांसी पर

लहसन	१ छटांक
बनफशा	"
उन्नाव	"
मुलैठी	"

जल ४ सेर — , क्वाथ १ सेर शेष, + दानेदार चीनी १ सेर दो तार की चाशनी
कटेली + वासा भी बनावें फिर तबाशीर २ तोला,
छोटी इलायची २ तोला, गोंद कतीरा २ तोला +
सब मिला कर रखें / ६ माशे तक [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वैद्य विश्वेश्वरनाथ (स्याल) जी अर्शचिकित्सक (८५)
बांसमंडी, अजमेर

(1) डायबटीज़ — हरमल का अन्तर्धूम कोयला करके ४ रत्ति मात्रा मक्खन से दो बार दें। ३ दिन में sugar न रहेगी।

(2) सूखारोग बच्चों का — छिपकली को चार पंखुटों में काटकर उसमें कस्तूरी ४ रत्ति डालकर तीन दिन इसी प्रकार खिलावें अवश्य सूखा रोग अच्छा हो जाता है ॥

असली सुधासिन्धु (रामलाल वा मं. लाल के आर्योपदेशक ...)

कापूर २½ तोला
पेपरमेंट २ तोला
सत अजवायन १ तोला
सत इलायची ६ माशा
सत लौंग ३ माशा
गेरू ३ रत्ति
carbolic acid ६ बूंद

extract nux vomica ʒi
Ex Belladona gr X
Ergotine X
Ex gention ʒiii
Ferri Phosphas ʒi

No 48

[illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वैद्य मोतीलाल, फीरोज़ाबाद (आगरा फोन १८६) के नुस्खे

---

(1) गण्डमाला — वरुणत्वक् + कांचनारछाल को तक्र में पीसकर गिलटी पर लगाने से बैठती या फूटती है।

(2) खाने को — कांचनारगूगल ४ रत्ती से १ माशा तक मुण्डी के अर्क से, अर्क में Potassium Bromide २ रत्ती डालकर दें। अकाम हो तो बंद कर दें। अच्छा होने पर फिर दे दें।

(3) गिलटी फूटी पर — Syrup ferri Iodide खाने को दें।

बच्चों के सूखा रोग पर — (१) खूबकलां को तीन बार बकरी के दूध में तर कर सुखा लें। उसे १ माशा बच्चे को दें। या (2) malt extract दें॥

सूज़ाक पर (काली चरण वैद्य)

सत बिरोज़ा + मेंहदी १ माशा। सत बिरोजे को कड़ाही में डालकर गरम करें फिर मेंहदी का चूर्ण बुरकता जाये। वह सख्त होने लगेगा। सख्त होने से पहले २ रत्ती के बीज जितनी गोली बना। प्रातः सायं पानी से ११ दिन दें। सूज़ाक जाये।

(२) सूज़ाक पर (काली चरण वैद्य)

कौड़िया लोबान २ माशा + सन्दल का तेल २ माशा + छोटी इलायची के बीज २ माशा॥ इनका ६ माशा पुड़िया शक्कर के शर्बत के साथ दें। २ गिलास शर्बत पीवे। दिन में २ बार लेवे। गोश्त व कोलन शोरबा, चावल और दही तीन दिन न खावें। ३ दिन में [illegible]

[illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भारतीय पेटण्ट दवायें। लागत और मुनाफे
डा. रामकृष्ण बी.ए. बीएस्सी एलएमएस.

(1) नेत्राञ्जन — कालासुरमा २ भाग, समुद्रझाग १ भाग, कलमी शोरा १ भाग, सुहागा १ भाग, मिरच १ भाग, सैंधव १ भाग, पीपल ४ भाग, पीस नीबू के रस में खरल करें। प्रात: सायं लगाने से धुंध जाला, फुला, गुबार, करकराहट हटाता है। लागत ३ पैसा। बाजार में १ तोला ४) रुपये अब्दुलमजीद खां देहली का पेटेंट है॥

(2) नमक सुलेमानी — सेंधानमक भुना हुआ १½ तोला, कलमी शोरा ६ माशे, नौशादर ६ माशे, खरल करके, आधा से १ माशे तक खाओ तो अफारा, पेटदर्द, शूल के लिये अच्छा है। दाम १ पैसा, पंतु बाजार दाम चार आना १ औंस की शीशी। बनारस से प्राप्त मिलता है॥

(3) कफपिल — अमरीकन, जी. आई. पी. का पेटेंट है। ४० गोलियों की डिबिया दाम १½ रुपया। असल लागत दो आने है। काफूर १ ग्रेन, Ext. Hyoscyami (हाईओसाईमस) एक ग्रेन मिलाकर एक गोली बनाओ, इसी प्रकार सब गोलियां बनाओ। समय पर १ गोली खाओ, खांसी के लिये लाभदायक है॥

(4) बुखार की दवा — नाग पुर के पेटेंट हैं ५० गोली दाम १) रुपया। वस्तुत: दाम २ पैसा है। मलेरिया के लिये यही अच्छी है जिन्हें हीं। पीपल, कलौंजी, चिरायता, गेरु सम भाग, सब के बराबर भुनी हुई फिटकरी लें। गोंद के जल से घोट चार रत्ती की गोली बना पानी या शर्बत से दें॥

(5) संग्रहणी की दवा — लाहौर वैद्य का पेटेंट है ६० गोली की डिबिया ३) रु। असली दाम ३ आना। संग्रहणी अतिसार को लाभदायक है॥
हिंगुल १ माशा, रसकपूर २ माशे, अफीम १ माशा, ... १ माशा, छोटी इलायची दाना १ माशा, पोदीना ½ तोला, सौंफ ½ तोला

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

१ मासा, छोटीइलायचीदाना १ मासा, पोदीना ½ तोला, सौंफ ½ तोला

सबको कूटछानकर अनारदानेके रसमें ६० गोली बनावें, (१५८)
दिनमें ६ मर्तबा १, गोली, पानीयादूधसे दें ॥

(६) सुजाककीदवा — शिलाजीत १ड्राम, सतगिलो १ड्राम,
सत बिरोजा १ड्राम, इलायचीदाने १ड्राम, सफेद कत्था
१ड्राम, बंशलोचन १ड्राम, शुद्धगंधक १ड्राम, गेरू १ड्राम,
सबको चूर्णकरें, १से २मा० लेतकर शर्बतीलेखावें ॥ बम्बई
गुवलेश्वरकेवैद्यकीपेटण्ट है। १ औंसकीशीशी ५) रुपये। डाकव्यय।) है
नयेसुजाकमें उत्तम है। पुरानेमें देरके बाद लाभ देगी ॥

(७) कुष्ठारि — (जितेन्द्रनाथबैनर्जी) दाम १ औंस ४) है। दाम ~) है।
कोढ़ केलिये असली है। ठीक है।
बावची १० भाग, हड़ताल ४ भाग, मैनसिल १ भाग, चीता २ भाग
हल्दी २ भाग, सबको गोमूत्रमें पीसलेपकरें। छालापड़जाता है।
घबड़ें नहीं। मिर्च, नमक, तेल, खटाई का परहेज जरूरी है
कोढ़ को आराम करती है ॥

(८) दमेकीदवा — करील कीलकड़ी नरमलेकर उसका सोलहवां
भाग खुरासानीअजवायन मिलाकर पातालयंत्र से तेलनिकाललो
इसी तेलको रोटीपर चारमाशा की मात्रामें छिड़ककर दिनमें तीन
बारखिलानेसे दमाजातारहता है। तन्जोर के धः मीलपर एक महात्मा हैं
१खुराक दवा खिलाकर दमाजड़से उखेड़तेथे। प्रसिद्ध है। ब्राह्मणभोजन
कराते थे ॥

(९) धातुपुष्टकीगोली — काठियावाड़कीपेटेन्ट दाम २)६०/३) बाजार
में। वीर्यदोषनाशक, भोगवर्द्धक, शीघ्रपतननिवारक जरूरी है।
जायफल, जावित्री, मायूफल, मस्तगी, नागकेसर, अकरकरा
मोचरस, बंशलोचन, खुरासानी अजवायन, छोटी इलायची
चूर्णकर, बबूलके गोंदके [illegible] गोली [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(१०) इमसाक की गोली — लाहौर के कारखाने की पेटेन्ट (१७८१) दाम ३० गोली दो रुपये पर अजली ≡) आना है। यह लाभ देती है।

केसर, शिलाजीत, अफीम, मस्तगी, समुद्रझाग, नागकेसर, अकरकरा, बीजबंद एक २ माशा ले। सब को घोट दो रत्ती की गोली बनायें। ३ घण्टा पूर्व दूध से खाले।

(११) सप्तदोषविध्वावटिका — उदय चंद्रदत्त वैद्य की आयुर्वैदिक फार्मेसी कलकत्ता की पेटेन्ट ४० गोली दाम २॥) रुपये। परन्तु — है।

"त्रिफला चूर्ण ८ भाग, कपूर ½ भाग, गुड ८ भाग। सबको घोट ½ मासे की गोली बनाले। सोते समय शीतल जल से खावे।।

— सिरदर्द —

(१) आम की छाल पानी से घिसकर लेप करे सिरदर्द दूर होगा।

(२) अंगराचावल + दूध गरम कर ठंडा करें नस्य लें तो अर्धावभेद नष्ट हो।

(३) सुहांजना के बीजों की नस्य लें तो सिरदर्द जाये।

(४) रीठे को जल में रगड़ नस्य लें तो उस ओर का सिरदर्द नष्ट हो।।

(५) सफेद कनेर के छाया शुष्क पत्रों की नस्य आधाविभेद को दूर करे।

(६) शतावर जल में कूट तिल तैल में भूने, यह तेल सिर पर लगाने से सिर दर्द दूर होता है।

(७) नीमपत्र स्वरस मीठे तेल में मिला कान में डालें तो अर्धावभेद छूटे।

(८) बादाम को सरसों के तेल में पीस लेप करें तो सिरदर्द दूर होता है।

(९) सफेद चन्दन और तज पीस लेप करें तो सिर दर्द दूर हो।

(१०) बकरी के दूध का मक्खन निकाल ले पकायें तो सिरदर्द जाता है।

कानों से हवा ग्वार १६३४

(११) हाथ की कोहनियों पर कपड़े की पट्टी या मुलायम रस्सी कस कर बांध दो। १० मिनट में दर्द दूर हो जायेगा। ज़रा कस कर बांधना चाहिये। [illegible] ... [illegible] जिधर आधा हो उधर की कोहनी में कोहनी पर कसकर पट्टी बांधो तथा उधर के नथने को रुई से बंद करदो।।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जिस ओर दाढ़ का दर्द हो [illegible] कान में [illegible] रखकर पट्टी बांध दो
तथा उधर के नथने को रुई से बंद करदे॥

दांतदर्द

(200)

दाढ़दर्द वाला भूचाल के समय ज़मीन पर लेटकर ज़मीन को दांतो से काटता है और जबतक भूचाल आवे तबतक काटता रहे तो आयुभर दांत में न कीड़ा लगे न दर्द होगा॥
[illegible] दांतदर्द बारहवें।

— पेशाब खोलना —

एक घड़े में १५ बीस छिद्र करो और रस्सी से किसी पेड़ पर उसे लटका दो। ज़मीन से दो गज़ ऊंचा वह बरतन लटका या जाये। बीमार को कहे कि घड़े को ध्यान से देखता रहे। दूसरा आदमी घड़े में किसी पात्र से पानी डालता है। कुछ क्षण के बाद ही पेशाब खुल जायेगा।

— लकनत तथा हकलापन का इलाज —

20 दिन रात लगातार बीमार चुप रहे। सर्वथा बोले ही नहीं तो इसका हकलापन दूर हो जायेगा।

— प्रसूता में विलम्ब —

यदि दर्द अधिक हो बच्चा पैदा न हो तो स्त्री दायें पांव का अंगूठा चूसे। चूसते ही चन्द मिनिट के अन्दर बच्चा बाहर आजायेगा॥

— प्रो. राममूर्ति का बदाम योग

बादाम, कालीमिर्च, धनियां, इलायची छोटी, सौंफ
१५ १५ ४ माशे 2 ४ माशे

इनको भिगोदें गुलकन्द, पानी, मिश्री या शहद मिला घोटे, पीवें। 2 घंटे तक कुछ न खावें। दो 2 बदाम हर रोज़ बढ़ावें। गरम तबीयत धनियां, शीतल जल। कफ़ के रोग सौंफ गुलकन्द शहद [illegible]॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(सहस्त्रौंका परीक्षित आंखोंका सुरमा) 201

१. सीसा ६ माशे, सुरमा ६ माशे, कालीमिर्च ६ माशे, पीपल ६ माशे, चीनी ६ माशे, कलमीशोरा १ माशा, सीपके मोती ५ संख्या; कालेजीरेके बीज १५ संख्या। पहले सीसेका पत्र बना कैंचीसे छोटे २ टुकडे करले फिर सब द्रव्यों को मिलाकर गुलाब के अर्क में खरल करें। आधी बोतल से ज्यादा अर्क खर्च करदें। जब खरल करते २ सूख जावे तब इसे कांचके पात्रमें रखले। और सलाई से लगाया करे॥

इससे सहस्त्रों ने अपनी खोई हुई दृष्टि फिर प्राप्त की है। धुंध, जाला आदि के कारण जो अंधे होरहे थे, इसके लगाने से वह बहुत अच्छी तरह देखने लगे हैं। दुखती हुई आंख इसके जरा सा लगादेने से फौरन ठीक होजाती है॥ श्रीप्रकाश, जैपुरकान्ता।

{ चेचककी सार्वदेशिक चिकित्सा परीक्षित औषध॥

२. करेलाकी बेल या पत्तोंका रस अभावे फूलोंका रस ३ माशेसे १ तोला तक, १ माशा हल्दी का चूर्ण तथा कुछ शहद मिला कर दिन में तीन-चार बार देने से चेचक में लाभ होता है। इससे शीतला भी साफ होता है। तन्दुरुस्त इसे चेचकके दिनों में सेवन करे तो चेचक नहीं निकलती या कम निकलती है। कलकत्ते के डाक्टर इसकी बेलका जेका इन्जेक्शन भी करते हैं। मेरा भतीजा कि जिसे पैरतक निकली चेचक में प्रातः १०२° और शाम को १०५° का ज्वर भी था, delirium में बेहोश बहके दिन हो रहे थे। इसके सेवन से लाभ हुआ यदि करेले न मिले तो खुरक करेले का काढा देसकते हैं॥ (वैद्य धनवंतर देहली-जाने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

— सांप के ज़हर का इलाज — 282

बीसियों को इस चोट के से फ़ायदा पहुंचाया है। नुस्ख़ा यह है-
(१) हुक्के के अन्दर जमे हुए तमाखू के धुंए का गुल अठन्नी भर लो, १ एक छटांक पानी में खूब घोल लो। जब घुल जाये तो चार २ बूंद मरीज़ के दोनों कान और दो २ बूंद दोनों आंख में छोड़ कर शेष उसे पिला दो। यदि हुक्के का ही पानी काम में लाया जावे तो और भी अच्छा है। थोड़ी देर पीछे कै होगी, कै जितनी ही बार हो उतना ही अच्छा है। रोगी को सोने न दो। बेहोशी या सिर को गरमी चढ़ गई हो तो नौसादर चूने की नस्य देते जाओ। इससे बहुतों की जान बच गई है, आशा है लोग लाभ उठायेंगे॥

— सूज़ाक की दवा —

जंगल का पड़ा गौ का गोबर (न मिले तो भैंस का गोबर) जला लें। राख को कपड़छान कर भिगो दें। (पांच सेर उपलों की राख में एक सेर पानी मिलाना चाहिये) पानी को खूब हिला कर रख दें, कुछ काल बाद निथरा हुआ जल अलग करके बोतल में डाल रखें। सूज़ाक वाले को दो तीन बार के के आधा २ पाव कर के दो तीन बार दिन में पिलायें इसका असर देखें। बड़ी २ दवायें इसके लाभ के आगे साधारण सिद्ध होंगी॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वात रोगान्तर

सोंठ सुहागा संचल गांधी (हींग) सहिजन केसर बांधी।
प्रसूती शूल छिहत्तर वायी, कहे धन्वन्तरि पल में जायी॥

[illegible]

"आयुर्वेद मञ्जूषा" पं. मणिशंकर शर्मा, श्री विश्वानन्द सरस्वती दातव्य औषधालय
१) दाम सेवाएँ — ३६, बड़तल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता

(1) वातव्याधिनाशक रस — दालचिकना, संखिया, समानभाग रसकपूर को उमरमं में पेलकर पुष्प को उसकी गुञ्जा प्रमाणमात्र वातरोगपीड़ित मनुष्य सेवन करे इसमें मणिशंकर ने अनुभव किया है।
नोट — इस रस से नासूर, भगंदर, उपदंश, लकवा, निश्चय नहीं आराम होता है॥

(2) वातव्याधिनाशक तैल — दशमूल, एरण्डजड़, लहसुन इनके कल्क से पकाया हुआ तैल वातव्याधि को निःसन्देह नाश करता है॥

(3) वातनाशक तैल — हल्दी, लाख, मंजीठ, पोहकरमूल इनके कल्क से पकाया हुआ सरसों का तैल वात नाश करता है॥

(4) वातनाशक लेप — एरण्डबीज तथा दूध में, इन दोनों को दशमूल के क्वाथ में पकाकर सारे शरीर में लेप करे तो वात नाश होता है॥४॥

(5) वातघ्न लेप — गुंजा + एरण्डबीज दोनों को दूध में पीस वातव्याधि में लेप करे।

(4) आमवातनाशक योग —

(1) गिलोय का स्वरस तथा अदरक का स्वरस मिलाकर आमवात को नष्ट करता है॥

(2) शिरःशूलनाशक योग —

(1) पिपरमेन्ट आधा तोला, एस्प्रिन ढाई तोला मिलाकर उचित मात्रा में सेवन करे तो सिरदर्द जाता है॥

नोट — एक आना भर मात्रा (6 टिकिया) खाने से सिरदर्द, पसली का दर्द [illegible] कमजोर हो, जहां ऐसी अवस्था में इस दवा को कभी न देवें॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कमजोर है, जब है ऐसी अवस्था में इस दवा को न दें॥

— कुक्षिशूलनाशक क्वाथ — 204

(1) पिप्पलीमूल का क्वाथ कर उसमें गुड़ तथा सेंधा नमक डाले पीवे तो असाध्य कुक्षिशूल भी अच्छा हो जाता है।

— शूलनाशक योग —

करञ्ज फल की मज्जा 1 माशा, लौंग समभाग मिला गरम पानी से सेवन करें तो शूलरोग नष्ट होता है॥

— हृदय का शूल —

(1) शुद्ध कुचला, मिर्च काली से गुलाब जल में घोटकर गोली बनाकर यदि सेवन करे तो असाध्य भी हृदय का शूल नष्ट हो जाता है॥

(2) सांभर का सींग अग्नि में भस्म करे उसे शहद से चाटे तो क्षत, हृद्रोग तथा पार्श्वशूल अवश्य नष्ट होते हैं।

— शूल नाशक योग —

सोंठ, सुहागा, सेंधा लवण को सुहांजने के रस से गोली बना दे तो शूल रोग नष्ट होता है॥

— सूजाक नाशक —

1) चन्दन का तेल मधु में मिला पीवे तो सूजाक शीघ्र नष्ट होता है मेरा अनुभूत है॥

(2) शीतल चीनी 10 तोला + सेलखड़ी $2\frac{1}{2}$ तोला + कलमी शोरा $1\frac{1}{2}$ तोला, कपूर 3 माशे, फिटकरी 6 माशे, गेरु 5 आने भर। सबको सेवन कर 22 दिन सेवन करे तो सूजाक नष्ट होता है॥

— प्रमेह नाशक —

(1) हल्दी + आंवला दोनों का चूर्ण पीने से प्रमेह नष्ट होता है।

(2) मूंगा, गोखरू, मूसली सफेद, छोटी इलायची, मिश्री सब समभाग ले मक्खन से चाटे तो प्रमेह नष्ट होता है।

(3) बला, कौंच के बीज, गोखरू सब समभाग, 4 भाग चीनी मिलाकर दूध के साथ सेवन करे तो वीर्य ... होता है॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

205

— मूत्रकृच्छ्र प्रमेह नाशक —

(१) चारतोला चीनी + दोतोला फिटकरी दोनों के ठण्डा जलसे खावें तो प्रमेह नाश होता है॥

(२) त्रिफला, लोध, गूगल सबको मिलाकर गोखरूके रसमें बनाई हुई गोली ~~[illegible]~~ जल प्रमेह प्रदरको नाश करती है

(३) शिलाजीत, वंगभस्म, स्वर्णमाक्षिक भस्म + कपूर सब बराबर केवड़ाके रसमें घोट गोली बनावे / इसे सेवन करे तो बूढ़ा भी युवा हो जाता है॥

— बहुमूत्र प्रमेह —

(१) तिलका तेल दोतोला + आमा हल्दी आठ आना भर सात दिन खावे तो शीघ्रही मूत्रकृच्छ्र तथा प्रमेह नष्ट होता है।

(२) तिल दो तोला + लौंग २ तोला शीघ्र बहुमूत्र को नाश करता है। इससे बढ़कर औषध भूलोक में नहीं है॥

— वीर्यस्तम्भन वटी —

(१) गांजा, सुवर्ण, मुद्दरकेशर, मोती सबको समभाग लेकर अफीमके जलसे बनाई वटी यदि रतिसे पूर्व पानसे खावे तो आनन्दको प्राप्त होता है॥

(२) यदि घीदूधसे विदारीकंद के चूर्णको खावे और ऊपर से गरमजल पीवे तो बूढ़ा भी जवानकी तरह हो जाता है॥

(३) रमणके बाद दूधके साथ मिश्री, राल, मूशलीचूर्ण इसे मिला पीवे तो बूढ़ा भी जवानकी तरह हो जाता है॥

(४) कश्मीरी केशर १ तोला + विदारी चूर्ण ६ तोला इन्हें मिला शहद घीसे सेवन करे तो नारीको प्रसन्न कर सकता है॥

— इन्द्रियवर्धक लेप —

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(१) अकरकरा + कस्तूरी + लौंग तीन २ माशे [illegible] दोतोला, गुड़ छ तोला, पीसकर चमेलीके तेल में मिला लेप करे

पटोला, गुड़ छटोला, पीलकार चमेलीके ने लकिके लेप करे

२०८

तो बढ़ि कमके वाले मनुष्य का लिंग बढ़ जाता है

उपदंश नाशक कुप्रव

(1) त्रिफला का क्वाथ और भांगरे के स्वरसहे लिंग को धोवें तो उपदंश नष्ट होता है।

(2) लौंग + जायफल + वायविडंग + सफेद दूर सब समभाग ले मक्खन से घोट लेप बनाकर लगावे तो उपदंश नष्ट हो॥

(3) पीपल, गुड़, रसकपूर सबको समभाग ले घोटकर चनेके समान गोली बनावें और उसी का सेवन करें। और घी, दूध, दाल, चावल सात दिन तक खावें तो उपदंश रोग नष्ट हो जाता है॥

(4) सुपारी, बिलछाल, शंखभस्म, जीरा, मोचरस दो२ तोला ले तिलके तेलके साथ घिस के लेप करे तो उपदंश घाव

(5) जंगाल, छोटी इलायची, समानभाग, कथा और सुपारी कौड़ी दो तरके भस्म सबको चूर्ण ले शिश्नेन्द्रिय पर लेप करे तो बीतादि ... उपदंश को नष्ट करता है।

उपदंश पथ्य

दूध, घी, गेहूं का, स्निग्ध पदार्थ, तरलपदार्थ चावल उपदंश में ये सब पथ्य है॥

अर्शनाशक योग।

(1) मिश्री तथा बेलके फलके चूर्णको प्रातःकाल जलसे खावे तो अर्श विनष्ट नष्ट होता है॥

अर्शोघ्न चूर्ण

(2) तिल, भिलावा, गुड़ समानभाग मिलाकर ठंडे जलके

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(1) श्वासनाशक अपूर्व योग

मनसिल 2½ तोला + शंखभस्म 5 तोला सिद्दी के पान के रस में दो दिन की बनाई हुई उड़द भर एक रत्ती सेवन करें तो श्वास रोग जावेगा निश्चय महा 2 किसु हीनष्ट होजाता है ॥

(2) श्वासनाशक वटी

(1) लहसौं + बच इसका चौथाई भाग सेंधानमक ग्रहण करे सबको मिला जल से गोली बनावे तो श्वासनाशक इस वटी को शहद तथा अदरक के रस से सेवन करे तोला भर है ॥

हिक्का दूर करे

(2) मोरसंख की भस्म दो रत्ती + छोटी इलायची ले मिलाकर शहद से चाटें तो इससे हिचकी अवश्य ही नाश होती है

— हिक्का —

घीकुमारी के रस में सोंठ का अवलेह बनाय चाटे तो हिक्का नष्ट अवश्य होती है ॥

— मुख के छाले नाशक योग —

(1) सुहागा + फिटकरी इन दोनों को अच्छी तरह पानी में पकाकर कुरला करे तो मुख के छाले अवश्य नाश होते हैं ॥

(2) अथवा पान का बीज मुंह के छाले को नाश करता है।

(3) पांच तोला कपूर + कार्बोलिक एसिड एक तोला मिलाकर फाहे से लगावे तो छाला, मसूड़ों का फूलना, दांतों के मसूड़ों का दर्द निकलना अवश्य आराम होता है। इसी को एक तोला लेकर आधपाव ग्लिसरीन में डालकर [illegible] तेल को ले कुल्ली करवावे तो आराम होता है ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आराम होगा है ॥

(1) रक्तपित्त क्रोधनाशक २०८

लाख + नागकेशर + वंशलोचन + मिश्री सबको समभाग ले चूर्णकर फवलन सेवन करे तो रक्तार्श, रक्तप्रदर, रक्तपित्त अवश्य नष्ट होते हैं॥

(2)
हरड + बांसामूल + दाख इनका क्वाथ चीनी व मधु से मिला सेवन करे तो श्वास, कास, रक्तपित्त नाश शीघ्र होते॥

— विषूचिकानाशक आसव —

१२½ सेर मदिरा, अफीम १६ तोला + मोथा, इन्द्रजौ, छोटी इलायची, जायफल एक २ तोला सबका चूर्ण मिला एकमास तक मुंह बंद रखे फिर एक तोला मात्रा सेवन करे तो विषूचिका वा अतीसार एकदम बन्द होगे।

— सन्निपात में कर्णमूल शोथ —

(1) जलौका उत्तम है
(2) पोहकरमूल, मुलहठी से लेप करें तो सत्वर दूर होती है

— शिरदर्द पर लेप —

(1) जौ + कालीमिर्च दोनों को पीसकर लेप करे तो शिर की पीड़ा अति शीघ्र नष्ट होती है।
(2) सफेद चंदन + कपूर ⅛ भाग + कायफल १ भाग सबका चूर्ण बनावे। सूंघने से लेने से शिरदर्द अवश्य नष्ट होवें।

(1) — प्रतिश्याय का क्वाथ —

कालीमिर्च, धनिया तथा पोदीना सबको पीस मिश्री मिला पीवे तो [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पाला लगकर आने वाले ज्वरों —

(1) नौशादर, इलायची, गिलेअरमनी प्रत्येक एक २ तोला (गिलेअरमनी = carbonate of iron) कापुर १मासा बारीक पीसकर ३ रत्ती निशोत करदें। (दो २ रत्ती देना उचित है)

(बुआ वैद्य ब्रजलाल ...)

मौसमी ज्वरों — कंजवा ६ मासे, कीककीपत्ती ६ मासे, श्वेतजीरा ६ मासे, मिर्च ६ मासे काढ़ा देदें॥

शीशिर शूल — (गुरुकुल कांगड़ी के गुरुओं) ब्रजलाल

सोंठ + एरण्डमूल + कुष्ठ समभाग पीसकर छानके माथे पर लेप करें। पहले माथे पर नारियलका तेल चुपड़ले। अब शूल शिरदर्दको आराम होता है। रात को लेप करना चाहिये। सिद्ध है॥

पायोरियाका अनुभव

तम्बाकूका कोयला + नमक + कालीमिर्च पीसकर मंजन बनावे। दुर्गन्धित रक्त भी निकला करता है। पीप नष्ट होती है। (गुरुकुल)

मासिक धर्मार्थ

ओंखिरी २ मासे। अमलतासकी फली के अन्दर का गिरा २ मासे। मिसरी ४ मासा मिलाकर। शहद आधी छटांक गरमजल ३ छटांक में मिलाकर शर्बत करपीवें। इससे प्रातः खुल कर मासिक धर्म होगा। फिर गर्भस्थापक योग दें।

पुत्र ... कर ... योग ...

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दस्तों के लिये

शिंगरफ को भेड के दूध में, अदरक के आक के दूध में रोज़
भावना देकर मूंग बराबर गोली बनाय रखें। १ तोला
शिंगरफ को ५ तोला दूध में क्रमशः प्रतिदिन एक २
तोला आक का दूध डाल घोटें। १ गोली रात दूध से
खावे। तो पेशाब की जलन जाती है। गर्मी में अर्क
गुलाब से पीवें। (श्री देवानन्द सन्यासी (कुटार) शाहजहां
पुर)

नं १ — विजयपर्पटी —

रसं, वज्रं, हेम तारं, मौक्तिकं ताम्रमभ्रकम्।
सर्वतुल्येन गन्धेन कुर्याद्विजयपर्पटीम् ॥१॥

नं. २. विजयपर्पटी —

गन्धकं शुद्धितं कृत्वा भाव्यं भृङ्गरसेन तु।
सप्तधा वा त्रिधा वापि पश्चाच्चूर्णं विचूर्णयेत् ॥२॥
चूर्णयित्वा यसे पात्रे कृत्वा वह्निगते सुधी:।
द्रुतं भृंगरसे क्षिप्तं तत उद्धृत्य शोषयेत् ॥३॥
तच्च गन्धं पलञ्चैकं गन्धार्द्धं शुद्धपारदम्।
सूतार्द्धं भस्मरौप्यञ्च तदर्द्धं स्वर्णभस्मकम् ॥४॥
तदर्द्धं मृतवैक्रान्तं मौक्तिकञ्च विनिक्षिपेत्।
एकीकृत्य ततः सर्वं कुर्वीत पर्पटिकां शुभाम् ॥

सूजाक पर (बिल्कुल कारगर)

गेरू + [redacted] समुद्र झाग दो माशे कच्ची लस्सी
१ भाग १ भाग
दूध से दो पुड़िया दें तो ३ दिन में ताजा सूजाक दूर हो
जाते॥ (सिद्ध) अनुभव

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

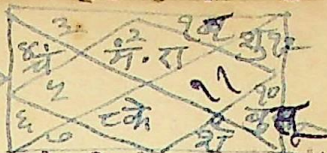

जन्म २५।७।१९२१ इन्दिरादेवीकाहाल
२८।१ १९२६ जनवरी
इन्दिराजीजन्मकुण्डली

इन्दिरादेवीजीवितरहेगी, आयुपुष्टहोगी। चेचकका भयहै।
माघसे ८वें मासतक चेचककाभयरहेगा। विद्यासामान्य,
धर्मप्रियाबनेगी। भाग्यबलअच्छाहै। चन्द्रअपनेघरमेंहै
इससे धनबहुतमिलेगासुखीरहेगी। विवाह १५वें वा १६वें
वर्षमें होगा। सौभाग्यपक्षउत्तम। धनपक्षबहुतहीअच्छा
है। चेचककृत कष्ट के सिवाय कोई अनिष्ट नहीं है।
विचारअच्छेहैंगे, धर्मात्माहोगी। गृहशिल्पमें चतुरहो।

जन्म२२...कीकाहाल शारदाकीजन्महाल

विवाह अच्छे घरमें होगा। उदार, धनी, सम्पन्न वा
विद्वान वरमिलेगा। विद्यामेंविघ्नहोतारहेगा। अंग्रेजी
पढ़ेगी। विवाह १६ वें वर्ष होगा। २५ वेंवर्षमेंविवाह
कीदेखभाल रसमें होजायेगी। अरिष्ट कोई नहीं। आयु
योग अच्छाहै। जन्मभूमिसे आग्नेयदिशामें संबंध
होगा। संबंध दूर नहीं होगा। पासहीहोगा। सन्तानपक्ष
वा सौभाग्यपक्षउत्तम रहेगा॥

(वेदकुमारी) काहाल
सन्तान — प्रथम पुत्रहोगा (चाहेगर्भहानिहो चाहे पुत्रहानि
हो, मंगलकीशान्तिकरानेसेबचेगा) तीनपुत्रोंमें सेदोपुत्र
चिरंजीवीहोंगे। जीवित सन्तानों में से बड़ी कन्या बचेगी
तीन कन्यायें होंगी। सन्तानसे सन्तोषरहेगा। सन्तानें
बढ़ेंगी तोआमदनीभी बढ़ेगी। ...

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

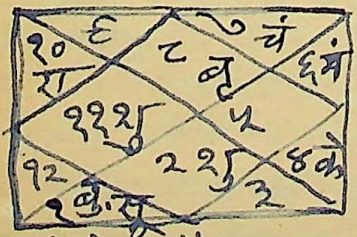

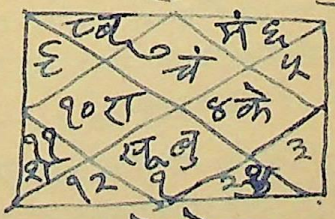

वेद की आयु काफी श्रेष्ठ है। ७० साल में मारक पड़ेगा। धनं - सदा उबल होगा। पति से प्रेम अच्छा रहेगा। विचार तो अच्छे रहेंगे पर धर्मपालन ठीक न रहेगा। धर्म साधारण। सुख सौभाग्य योग बहुत ही अच्छा है। वर्त्तमान (नवम्बर १९३४ की बात है) में बुध बृहस्पति सूर्य। अशांति बुध आज कल देगा। सन्तान को एकद प्रबन्ध में विघ्न रहेगा। २० वें वर्ष में गर्भ पड़ता है।

सन्तोषकुमार की कुण्डली

अथ श्रीसंवत् १९९२ वैशाख कृष्ण २ घ ५१/२९ ज २ न १५ घ ०/२९ ज १६ यो १६ घ ३१/२६ मेषार्कगत दिनानि ८ सू-इष्ट ३६/५८ क्षत्रिय कुलभूषण युधिष्ठिरराज वर्मणः पुत्रस्येष्टम्। अथ जन्मकुंडली

१०
रा
९
८
बृ
७
चं
६ मं
११ श
५
१२
२ शु
४ के
३
१ बु. सू

६
मं
७ चं
५
१० रा
४ के
११
श
सू बु
१२
१
२ शु
३

लग्नेशो भौमः लाभगः पञ्चमेशो गुरुः; अनयोः दृष्टिसंबंधः अस्य फलं प्रबलबुद्धिमान्। सप्तमेशो शुक्रः सप्तमगः अस्य फलं चंचलप्रकृतिः कामिनीनां प्रियः। स्त्रीभवि शुभः व्यापारादौ शुभः धर्मका यश्चि। अन्य वृद्धिः चिन्त्यं। शम्। १६ साल तक भागा रहेगा।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धोनेसे रंग सफ भाग होजावेगा/ फिर रंग गाढा [illegible] होता है ।।
[illegible] पहले गीला करलो / सूखाना देवो

(श्रीधर [illegible] जी का जन्मपत्र)

अथ शुभसंवत्सरे ऽस्मिन् नृपतिविक्रमादित्यराज्य संवत १९६४ कार्त्तिक मासोत्तमे मासे कृष्णपक्षे नवम्यां तिथौ बुधवासरे घट प: ४८ पला. २५ श्लेषा नक्षत्रे घट प: ४६ पला ५० शुभ योगे घट प: १. पला २८ दिनमानं घट प: २६ पला. २४ तुलार्क गत दिनानि १४ श्रीमार्तण्डोदयादिष्टं घटप: ४१ पला. २५ तत्समये कर्क लग्नोदये [illegible] वंशे श्रीमल्लाला राजारामगृहे श्रीमतीधर्मपत्नी [illegible] मजीजनत ।

[illegible] जन्मकुण्डली

चन्द्रकुण्डली

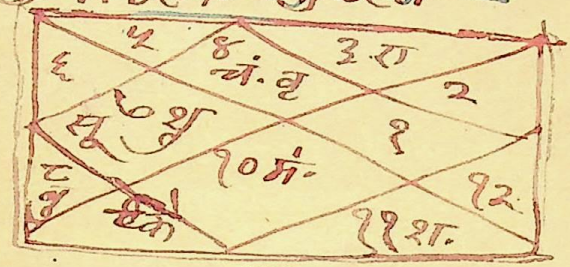

अस्यां कुण्डल्यां बृहस्पति भौम राहव: उच्चपदगता स्तथायं जनो राजतुल्यो भविष्यति / २ से २५ वर्ष तक विवाह होगा / २८ वर्ष के अंदर [illegible] होगा / ३० से ४१ वर्ष तक [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

युधिष्ठिर का फल (श्री देवानन्द जी द्वारा)

२५वें वर्ष के आरंभ में ही दशा बदल जायेगी। वर्तमान कष्ट निवृत्त होंगे और उत्तम दशा शुरू होगी। ३० साल के अन्दर विवाह का योग है। पहली से १ सन्तान कन्या होगी पर बचेगी नहीं। या २५वें वर्ष के अन्दर या ३० वें वर्ष के अन्दर स्त्री की मृत्यु होगी। व्यवसाय में उत्तम तरक्की करेगा। बाहर से धन मिलेगा। दूसरी स्त्री से ३, ४ पुत्र होंगे। जन्मभूमि से पश्चिम दिशा में शादी होगी। वह उत्तम घर की स्त्री होगी। सहधर्मिणी बदसूरत होगी लेकिन विदुषी होगी, धार्मिक भी होगी, और उससे प्रेम भी रहेगा। राजयोग था पर सूर्य निर्बल पड़ने से। कन्या होगी पर शायद ही बचे॥ बाहर से धन मिलेगा और इस से एकदम उन्नति होगी। आयु ८० के ऊपर आती है। धन के आगे किसी के आगे मस्तक नहीं झुकाना पड़ेगा।

(स्वामी देवानन्द (रफ्तार) शाहजहांपुर से) सत्यकाम का जीवन वृत्त

सूर्य उच्च लग्न — अंग्रेज संस्कृत दोनों में उत्तम। धर्म में उत्तम, व्यापार आमदनी में पिता से उत्तम। पूर्ण विद्या होते ही उद्यम में लग जायेगा। शीघ्र बुद्धि होगा। शनि - रोग आकर ठहर सकता नहीं। ६, ८ वें वर्ष निमोनिया होगा। आगे को प्रायः नीरोग होगा। द्विभार्या योग है मंगली योग है। १८ से १५ वें वर्ष तक विवाह होगा। उत्तर या दक्षिण दिशा में जन्मभूमि से विवाह होगा। आयु विशेष है। दामिनी योग है इससे विशेष प्रभावशाली होगा॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धोनेसे रंग सब भाग होजावेगा / फिर रंग नहीं उतरता है ॥
नोट— कपड़ा रंगनेसे पहले गीला करलो / सुखाना रखो ॥

रेशम ऊन का कपड़ा धोना।

रीठे को उबाल कर छान लो फिर जो पानी में रहे उस घोल को रख लो,
नोट— यह पानी का छना ही है अन्त तक गरम रहे।
पहले रेशम या ऊन के कपड़े को रीठे के पानी में रखो और मल२
कर दो तीन बार खंगाल कर निकाल लो और मेज पर फैला
कर उलटी ओर से ब्रुश करो / सीधी ओर भी थोड़ा सा ब्रुश करदे।
फिर ठण्डे साफ पानी से (पानी एक कड़ाह) धोलो / फिर दूसरे रीठे के
पानी में डालकर दो तीन बार खंगाल लो / फिर ठंडे पानी से धोलो,
फिर जरासा acetic acid एक चम्मच ठण्डे पानी में डाल
कर कपड़े को ५ मिनिट इस ठण्डे पानी में डालकर कपड़े को
भिगो रखे / फिर ठण्डे पानी से भिगोकर निचोड़ कर
सुखालो / रेशम को स्त्री करलो उलटी ओर से सदा स्त्री करे /
ऊन को जो मशीन से बुनी हो स्त्री करना और हाथ से बुना ऊन
होतो उसे स्त्री मत करना ॥

मखमल मिलिट रेशमी व जरी किनारी धोना /

सब मखमल आदि रीठे से ही धुलेगा / और जरी भी रीठे के
घोल से ही धुलेगी / मगर लाल रंग का रेशमी किनारी में
होगा तो किनारी को एक पोन में पेट्रोल डाल उसमें रखकर, दि
लेवो दे भी भिगोसे हल्का २ ब्रुश करो और कीतेको तीखी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ओमी हल्का सा ब्रुश फेरलो। फिर साफ़ पेट्रोल से धोलो।

फिर छापा मैं जल कर जुवालो। फिर ब्लटी और पीतल के एक गीला कपड़ा निचोड़ कर लगा ओ और स्मी करदे। फिर साड़ी मैं फेंकदो ।। इसे इस्तेमाल करो ।। (मिलनमाडी)

स्वागत आर्य प्रवर का हुआ सुवासित वर।
नृप नाहर के राज में बंधां प्रचार उमेय ।।
नृपतिवर स्वागत की माला आज हम पहनायेंगे।
स्वचेता करने को मन मोहित कर हम बिठलायेंगे।
स्नेह सुमनों से सुवासित आज इस मंदिर में हम।
ऊर्जवीराम की मधुर झनकार कर बलि जायेंगे ।।
आपने जीवन समर्पित कर दिया आदेश पर।
स्वर्ग से मन भिराज खुश हो कर सुमन बरसायेंगे ।।
आपकी सन्तान हे उम्मीद है पूरे हमें।
धर्म लोक में देश में उम्मीद सिंह फैलायेंगे ।।
आवो हिल मिल गावो मंगल गान पावन सरगमे
आज आर्य निष्ठा का राज्य जाके साज सजायेंगे
अपके वश अपने गुरुकुल में फिर दर्शन दीजे।
आईये राजन यहां सिर आँखों पर बिठलायेंगे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(३२) ला. रामदयाल बन्सीधर Cloth market दिल्ली
(ला. छुन्नामल)

(३३) बलदेव विश्राम zero Road मोर कालाबाग / Allahabad

(३४) विश्वेश्वरनाथ वैद्य बांसमंडी (धानमंडी), अजमेर (पुष्करजी) वी.ए.

(३५) वैद्य लक्ष्मी नारायण आयुर्वेदिक होमियो दवा, अजमेर पुष्कर रोड. (१ योग. ला. ३०) (...)

(३६) प्रेमसागर अम्बाला छावनी (१ योग. ला. ४) (...)

(३७) गुरुकुल सोनगढ़ देवराजजी वि.वा (१ योग. ला. ८)

(३८) Vaidya Moti Lal Ferozabad (Distt. Agra) (now Jasol Marwar) [illegible]

(३९) एक ठा. उदय सिंह जोधपुर ग्रा. डा. [illegible]

(४०) राव राजा गुलाबसिंह S/o तेजासिंहजी

(४१) " " मोहन सिंह S/o गुलाबसिंहजी

बच्चों के सूखा रोग पर औषधि

(१) बच्चे को सूखा रोग हो तो असली गोलोचन ले एक चौथाई सरसों बराबर बच्चे की मां के दूध में घोलकर प्रातः सायं पिलावें ३, ४ दिन में पूर्ण लाभ होगा। बूटी दर्पण का नुसखा है पर मैंने आजमाया फायदा करता है॥ केदारनाथ अग्रवाल "मनोरमा"

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ऊनी कपड़ा रंगना

एक छोटे से पात्र में थोड़ा सा कोई सा रंग डालकर उबाल कर रख लो। उस घुले रंग को दूध पक रख लो। यह रंग मसलत कभी नहीं बिगड़ता। और जाला पड़ जावे तो छान ले।

(कोष्णपानी)

फिर एक बड़े पात्र में थोड़ा गर्म पानी रख उसमें वह घुला रंग डाल कर ऊनी कपड़े को डुबो २ कर रंग लो। जब मन चाहा कम अधिक रंग हो जाय तो कपड़े को निकाल लो। फिर उस रंग में Dilute sulphuric acid एक चाय के चम्मच भर डाल कर खूब घोल लो। उसमें उसी रंगे हुए कपड़े को भिगो लो। फिर खूब भिगो कर कपड़ा उसमें ही रख कर थोड़ा [illegible] उबाला न आवे। फिर उतार कर ठंडा होने पर मोड़ २ निचोड़ कर फैला दो। सूख कर पक्का रंग हो जायेगा॥

Silk रेशम रंगना

सबसे पहले थोड़ा नमक [illegible] पानी में घोल लो। फिर उसमें रंग को घोल दो फिर रेशमी कपड़ा उस रंग में यथेच्छ रंग लो। फिर उसमें कपड़ा निकाल कर acetic acid खाने का चम्मच चम्मच डाल कर उसी (सिरका) रंग में घोल लो और फिर कपड़ा डाल भिगो लो फिर थोड़ी देर आंच पर रख लो। बस कपड़ा रंग गया॥

रंगीन कपड़े खल्व धोना फिर रंगना

Sunlight soap के कतरे और washing soda को पानी में boil करके खूब घोल कर रखे। कोई अंश भी साबुन का न घुला न रहे। फिर पहले ठंडे पानी में कपड़ा डाल कर फिर उस साबुन वाले पानी में कपड़ा डाल कर खूब मल के थोड़ा सा आग पर पका कर साफ पानी में धो ले। [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शेष पतेआप० बीमारों के ।

(1) सेठ छोटेलाल क्लाथ मार्केट, देहली

(2) ला. प्रेमशंकर " " "

(3) बा. छोटेलाल central Bank of India Delhi

(4) ला. बोधराजजी साहनी वकील, सीपरीबाजार. झांसी

(5) कृष्णालली D/o श्री भगवती प्रशादजी मुनसरिम कचहरी लखनऊ

(6) हृदयनाथ वकील, सहारनपुर

(7) श्री बिहारीलालजी शर्मा Guardian आर्य स्टोर

(8) x पूर्णदेवी अध्यापिका बटाला

(9) जीवनसहाय पेशकार, कचहरी कलक्टरी, छीपीटोला आगरा

(10) रामकुमारजी सेठ सिंधियाजीमिल, ग्वालियर.

(11) मुकन्दीलालजी लाडवा. जि. करनाल.

(12) ज्योतिप्रशादजी असिस्टेंट इंजीनियर (बिजनौर) U.P.

(13) राधारानीजी C/o श्रीनर्मदेश्वरजीवकील प्रयाग

(14) G. R. Pandey प्रिंसिपल मल्लविद्याशाला अजमेर

(15) नारायिकेशजी सिविलसीवर्क्स, कुंठा

(16) नौहरचंद मुन्नीलाल C/o श्यामजीलालजौहरी, नागपुर

(17) लज्जावती W/o बिहारीलालजी कपूर, पटवारीक्वार्टर गुंधीगली, देहली

(18) राजकुंवर बीबी C/o S. L. Ravi B.SC. Dewery Rajaram baksh salibanda P.O. Hydrabad Deccan

(19) काशीराम साहनी Stenographer Irrigation Secretariat. Electric Simla East

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

East

(१९) सेठ बैजनाथ बजाज आगरा (१९) सेठ लक्ष्मणदास ice factory Agra

(20) श्रीमती पूर्णदेवीजी c/o ज्ञानचंद दुकानदार
बम्बावाला (तहसील . डस्का) सियालकोट

२१) जानकी Mrs. शिवशंकर
उमाशंकर c/o भोलाशंकर जी Inspector of schools Pateala

22) लक्ष्मीचंद ranger forest Deptt. Dehradun
Chakrata range

२3) भागवन्ती देवी c/o
चिरंजीलाल ठेकेदार c/o बाबू रामचंद्र वकील तहसील झांसी

(२४) ला. मुरारीलाल / मुहल्ला — मुकेरियां
जि. — होशियारपुर

२५) पं. हरिदत्त गौतम weaving + gining factory
मुरादाबाद

(२५) सेठ झुन्नीलाल जी नौहरिया, हिसार

२६) रा. ला. ब्रजनन्दन सहाय जी पटना Excise commissioner

२७) रा. लक्ष्मीनारायणजी जज बीकानेर

(२८) श्री लद्दारीलालजी · माई मंदिरांवाली :
हवेली ध्याना सिंह . चूनामंडी , लाहौर .

२९) वैद्य रतिलाल मूलजीभाई आर्य.
फर्ग्युसन रोड, मारुती चाल, पहेला माला,
लोअर परेल, मुंबई

30 Mr. Holker advocate. इंदौर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(31) रा [illegible] चितल बाजार [illegible]

[illegible] चाल [illegible]

— विभिन्न कृषि प्रयोग —

नं. (३५४) पके फल डालमें लगे रहने की तरकीब —

वायविडंग को महीन पीसकर शहद और दूध में मिलाकर जिस डाल में फल लगे हों लेप कर देने से फल पके हुए लगे रहेंगे जमीन में नहीं गिरेंगे।

(३४७) मामूली कपास का बीज बोने से हरे रंग का कपास पैदा करने की तरकीब — सेमर का बकला, हल्दी और त्रिफला बराबर लेकर पानी मिलाकर औटालें और शीरे की शराब मिलालें और इसीसे फिर कपास के वृक्षों को सींचे तो हरा कपास निकले।

(३४८) नीला कपास तय्यार करने की तरकीब —

मैनसिल, हड़ताल, अकौड़ा जड़, मजीठ, जैती के पात सबको पीसकर गोमूत्र तथा गौ दूध में मिलाकर कपास के वृक्ष को सींचो तो नीला कपास होगा।

(३४४) लाल रंग का कपास तय्यार करने की तरकीब —

जव, तिल, हल्दी, ढाक के फूल एक में पीस कर पानी मिलाकर कपास के वृक्ष को सींचने से लाल कपास पैदा होगी।

गयाप्रसाद सिंह

मु. गौरियाकलां, पो. कुरसत. जि. उन्नाव.

एक प्राचीन हस्तलिखित पुस्तक से लिखा। प्रताप ३०-६-२२

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शीलचंद ठाकुर
लखावाला, कोथु. शिमला

(फोटोका) Gold chloride का नुसखा
metallic gold — २५ ग्रेन
nitric acid — 1 Dram (६० ग्रेन=1 ड्राम)
muriatic acid — 3 Dram
कई शोरों का तेजाब

स्वर्ण पत्र को कण २ करके तेजाबों में डाल enamel वाली चढे हुए धातके पात्रमें डाल गरम करे। जब स्वर्ण घुल जाये तो बढ़ाकर तेजाब उड़ा देवे। शेष स्वर्ण कणों को जितने ग्रेन हों उतनेही औंस पानी मिला कर शीशी में बंद करके रखें। इस से फोटो आदि धुलते हैं॥
[illegible]

,पुष्पधाईं छंद
गाया मलार, मंडराया अपार, झुलसाया पिया, रस पिया। आया सरूर, ऐंगलाया जरूर, हरजाया हिया, कर दिया। छाया प्रमोद, मनभाया विनोद मुरझाया जिया, फिर जिया। पाया प्रवीन कर पाया प्रवीन, मनभाया, किया, पढ़ लिया॥
गोपाल शर्मा [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

باعث تحریر آنکہ

مسماۃ تاج الدین آج تاریخ ۲۱

۱۹۲۸ کو [illegible] تاریخ

[illegible] پاس [illegible] سب پائی

پائی [illegible]

[illegible]

[illegible] تاج الدین [illegible]

۱۱ [illegible] تاریخ ۱۱ x

---

x सारस्वतघृत १६ [illegible]
व. छागलाद्यघृत ३२
वसन्तकु. (मोदक) २६
[illegible]
[illegible]

डा. शिवराजजी
हितो + स्वर्ण + ५.५५-३
द्राक्ष. —— २
तैल २६ —— १
[illegible] —— १

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पं. तेजकृष्ण कौल ज्योतिषी स्टोर से प्राप्त
चन्द्रोदयमकरध्वज पं. जे. कौल लाहौर के भाव.

1. रससिंदूर 8) तोला
2. मकरध्वज 28) "
3. रसकर्पूर (कुमारी तिक्त) 10) तोला
4. लालशिंगरफ भस्म — 10) तोला
5. अभ्रक — 20) तोला दशनदन्कर
6. " — 5) "
7. स्वर्ण — 60) "
8. चांदी — 10) "
9. कान्तलोह 28) "
10. लोह (फौलाद) 20) "
11. बंग — 1॥)
12. नाग — 2)
13. जस्त — 1॥)
14. ताम्बा 2)
15. रौप्यमाक्षिक 2)
16. स्वर्णमाक्षिक 2)
17. हड़ताल (तबकिया) 10) तोला
मोती पिष्टी — 20)
" सादा — 50)
" चन्द्र. प्रवाल — 8) तोला
वैक्रान्त भस्म (...) 2 8) तोला

मोती सीप — 2)
कौडी शंख सीप — ॥) तो. प्र.
रत्नभस्म भाव नापता.
स्वर्णबंग — 4) तोला

1. च्यवनप्राश 1६), नं. 2 — 6) सेर
2. राजेश्वरी — 32) सेर
3. मालती वसन्त — 48) तोला
4. प्रवालपंचामृत — 48) "
5. रसराजरस — 3) 1 गोली
6. चतुर्मुखरस — ॥) गोली
7. कुष्ठरत्न भस्म — 1 (2) तोला
गुड़पत्र ... हृदय पत्र शापक
8. महालक्ष्मीविलास 12) तोला.
9. महाशक्तियोग — कुम... के
महाला... दि तेल 16) ... / ... चाहि
... तेल — 16) " शक्तिलोपाके.

... रोगनाशक 32)
... क तेल / ... ब्लव 32) सेर
... तेल — 16) "
... — 32)
... तेल ...

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शुभ संवत् १९८३ वैशाखमास शुक्लपक्ष बुधवार नवम्यां तिथि घ स ३६ पलानि ३ आश्लेषा नक्षत्रे घ. स. ५५ पलानि ४-९ शूलयोगे घ स : १८ पलानि १३ दिनमानं घ स ३२ पलानि २८ मेषार्क गत दिनानि ९ एवं पञ्चाङ्गशुद्धौ श्रीमार्तण्डोदयादिष्टं घ स ७ पलानि ३० मिथुन लग्नोदये पुत्ररत्नमजीजनत्

॥सत्यकाम॥ प्रातः ९(७बजे रामनवमी)

चन्द्रकुण्डली

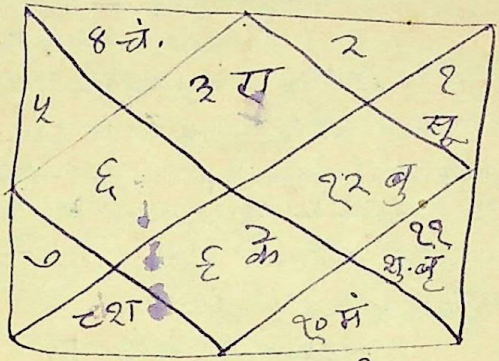

रामनवमी

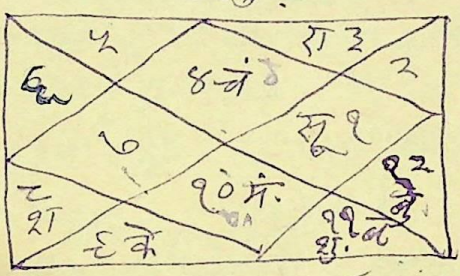

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

२८ मार्च १९२९

	२९	३०	३१	१	२	३	४	
इमामदीन	१	१	१	१	×	१		×
" पुत्र	१	१	१	१	१	१	१	×
कुली	½	१	×	×	×	×	×	×
मानसिंह "	१	×	×	×	×	×	×	×
मुसलमान कुली	१	१	१	१	½	१	१	×
मुसलमान	×	×	१	१	१½	१	१	१
गद्दी	×	×	×	१	×	१	१	१

	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४		१५	१६	१७
इमामदीन	१	१	१	१	१	१	×		×				
पुत्र	१	१	१		१	१	×		१		३	१	
कुली	१	१	१	१	१	१	×						
गद्दी	१	१	१	१	१	१	१						
कुली	१	½			१	१		×	४				
इमामदीन भाई					१	१	१	×	३		१	१	

दे — ११, १२, १४, १५ को (१५, १६ नहीं)

नाम	१९	२०	२१							
	१									
इमामदीन	१									

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

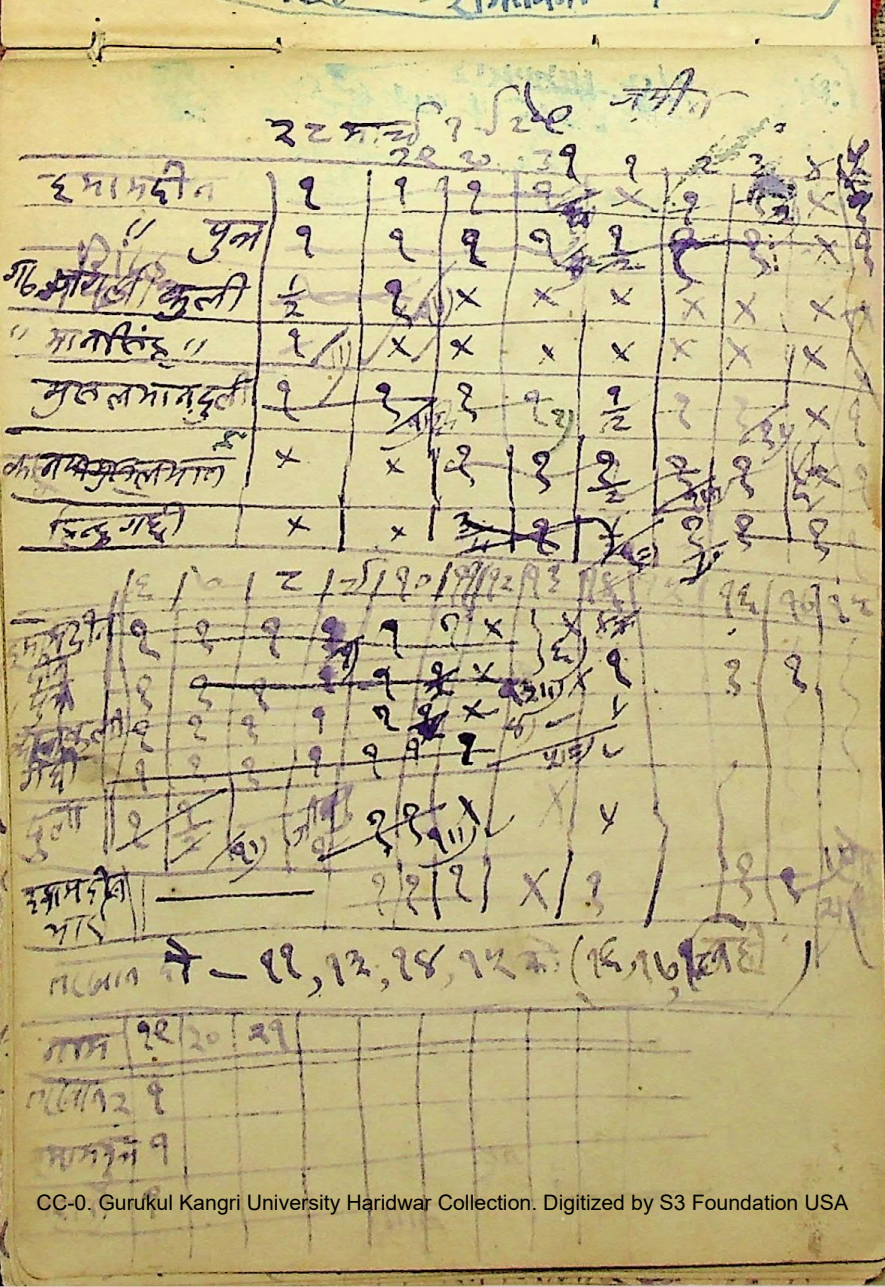

चावल का कुरकुरा खाना

चावल आधे उबल चुके तो धूप में सुखा कर पीस लो उसमें नमक मिर्च मिलाकर बड़ियां बनाकर सुखा लो। जब खाना हो घी में भूनो, फूल कर कुरकुरा हो जायेंगी। बड़ियां चावलों की हुईं॥

मीठे समोसे, या कचौरी

१ सेर मैदा तीन छटांक मोन मूयन लो, पानी से, पांच छटांक के लगभग डालो। गूंथ लो। लोइयां कर लो। पूर — १ पाव खोआ, खरबूजे की मींगी, किशमिश, पिस्ते, इलायची। समोसे की तरह बेल कर के पूर भर लो। घी में तल लो। थोड़ी सी चाशनी एक तार की बनाओ उसमें डाल कर निकाल कर रखो। ऐसे ही कचौरी मीठी बना लो। फिर गुलाब की खुशबू दे दो।

मैसूर पाक

१ छटांक बेसन + (५ छटांक खांड की चाशनी रख लो) + आध सेर घी (तीन पाव घी रखो)। सख्त दो तार ऊंची हो। १ छटांक बेसन में १ $\frac{1}{2}$ छटांक घी डाल चूल्हे पर रख के हिलाओ। सख्त होता जावे तो थोड़ा थोड़ा घी डालते जाओ। चाशनी में डाल दो फिर जब तीन पाव घी लेगा तो घी छोड़ देगा। घी छोड़ दे तो थाली में पलट दो। ठंडा होने पर घी अलग निचालो ठंडा रख के। बरफी काट लें।

मथुरा का पेड़ा

१ सेर खोया + २ $\frac{1}{4}$ छटांक खांड डाल कर फिर भून लो। जब गरम तेज कड़ाही का चला छोड़ दे तब समझो भुन गया। उतार कर (आध सेर डेढ़ पाव) मीठा मिला लो। या आध सेर खांड की डबल तार की चाशनी डाल कर के मिलाकर पेड़े बना लो। (चाशनी मुलायम बनी है)। दो लौंग छोटी इलायची और केसर डाल दें।

बादाम पिस्ते की बरफी

आध सेर पिस्ता पोटली बांध उबलते पानी में छोड़ दो बाद छिलने पर निकाल मसल लो। फिर पीठी पीस लो। फिर २ $\frac{1}{2}$ पाव खांड की एक तार की चाशनी में डाल जमा लो। वर्क लगा दो। ऐसे ही बादाम की बरफी बनाई

नमकीन पिस्ता बादाम कुरकुरे

बादाम को [illegible] [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मक्खन में [illegible] पिस्ता बादाम मिर्च मसाला, नींबू [illegible] मिला दो [illegible]

[illegible] मिर्च मसाला, [illegible]

वं. नाम्रतामराकुर ।

बतिया कटीली हठ कीकर न काहू बेर रोष बगलान चीरे
चापरी केनर (नाड़गलेकी) ।
मान सम्पाताख्ती नेउखड़ी (जान) जड़ जीवनीकी प्यारकमखन
न प्रयान मदुपल (पालसेपर ।
रंगा मंजु पोखा (तौंद) कोलताड़ रसभरीबालंब्रांबा,
बनवंसजपजावनको नीमधर ।
नारि के लि क्यों न सेवती है तत्रिपुर बेल पाकर
कदंम सेब पीपर नरूसाकर ॥

— मेसूपाक बनाना —

जाड़ों में अच्छा बनता है ॥

बेसन १ छटांक
चीनी ३ छटांक
घी ५ छटांक

पहले बूरा कड़ाहीमें डाल एक चुल्लुभर पानी डाले। फिर घी और बेसन डालकर सबको मिला धीमी २ आंच पर भूने। जब रंगत बदामी हो जाये तो किसी गहरे बरतन में डालदे। ऊपरसे पिस्ते बादामका कतरा छिड़कदे और ठण्डा होनेपर भोजन करे। अधिक न भुने नहीं तो स्वादिष्ट न बनेगा। (चांद)

— फ्रैंच पालिश करना —

मिथिलेटेड स्पिरिट — १ बोतल
लाख — ४ औंस
रूमी मस्तगी — १ औंस

सबको मिला धूप में गलाये सौ फुट लंबे सौ फुट चौड़े तख्ते के लिये यह पालिश काफी है।

रेतमाल करके फिर ~~[illegible]~~ साफ रूई का फाहा मलमलमें लपेट एक प्यालीमें ले पालिश ले ले कर पतली तह चढ़ा दे। ज्यादा चमकाने की इच्छा हो तो दोबारा करदे। इससे शीशेकी तरह मुंह देख सकता है ॥ (चांद)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

१ थान मलमल छापेदार चारखाने का कुरता
१ थान लट्ठे का नं० २४ गजवाले का।

१ —— —— —— २०½ धारीदार सादा।
१ —————— २४ ,, काला।

१ थान खद्दर धुला हुआ गज १२
३ ~~१~~ —————— ,, १२

खद्दर १६ गज १½ गज पने का।

१ जोड़ा ~~धो~~ धोती साफ (एक धोती पर [illegible]
[illegible] [illegible])

२ ,, ,, लाल किनारे के.
१ ,, ,, नीली किनारे के
२ ,, ,, ~~काली किनारी के कोरा~~

१६ जोड़ी मोजा ~~सफेद बढ़िया~~
१२ जोड़ी मोजे cycle मोटे:
१२ ,, ,, सादे बढ़िया
२ ,, ,, cycle बढ़िया
~~२ ,, ,, ,,~~

[illegible] —————— मोजे बच्चों का।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

1. रसगुल्ला या छीनमोहन

तोला नीबू का सत १ गिलास पानी में घोल कर २ सेर भैंस के दूध को उबाल आते ही डाल दे। वह फट जायगा। उसे छान दे। घंटे २ घंटे बाद कपड़े से निकाल ले। फिर बन दें। इस १ पाव भर छैने में २ तोला या १½ तोला सूजी मिला खूब फेंटे, फिर २½ सेर पक्की अंग्रेज़ी खांड की छने पानी की बनी मध्यम चाशनी में उस छैने में बादाम इलायची रख छोड़ता जावे। आग तेज़ दे। पौन घण्टा पकने दे। बस तश्तरी में निकाल ले। उत्तम छीनमोहन या छैना का रसगुल्ला बन गया। आंच तेज़ ही देना (नोट - खुद दूध फटा हो प्रत्युत नीबू सत से ही फाड़ो) खांड विलायती हो, आग तेज़ रहे) रसगुल्ला बड़ा हो तो अन्दर छोटा पताशा रखकर पकाओ।) थाली में रस गुलाब छिड़क दें।

2. आलू बड़े।

आलू पीठी + छैना या खोआ अधिक मिला घी में तल चाशनी में डाल दें। उत्तम वस्तु है।

3. आलू लच्छा।

आलू लंबा कद्दूकस से कतरें घी में भून नमक मिर्च, नीबू का सत थोड़ा सा डाल दें। उत्तम है।

4. खोये के समोसे।

मैदे में खोआ मिश्री बादाम मीठा भर के तल के चाशनी में डाल दें

5. पेठा मिठाई

हरा पका न हो

पेठा छील, खूब गोद कर बारीक सूए से अन्दर तक गोदें फिर फांके चीर चूने के जल में भिगो दें। प्रातः ६ ठंडे जलों से धोके फिर ५ सेर में छटांक फिटकरी डाल पानी डाल १½ घंटा औटा दो पानी सूखने लगे [illegible] फिर ६ ठंडे पानी से धो कर चाशनी में गल पकावे। गाढ़ी होने पर उतार ले॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

34. पं. रामनाथ जी राजदान, कश्मीरी मोहल्ला, लखनऊ,

35. ए.पी. बैंकर रैडिंग [illegible] कम्पनी शिमला.

36. एन. एल. [illegible] — शिमला

36 - श्रीमान नारायणदास जी 14. queen merry's Avenue Raisaina, Delhi

(36(ब)) पं. तेजकृष्ण कौल जी ए.एल.एल.बी. एसिस्टेन्ट [illegible] पंजाब लेजिस्लेटिव कौंसिल लाहौर

37. [illegible]राज जी साहनी वकील झांसी ([illegible])

38. Mr. A. Wade Lale T.M. Surgeant foreign & Political Departt. South Block.

39. म. प्रेमनाथ जी हैडमास्टर आदर्श विद्यालय शिवपुरी (ग्वालियर)

40. [illegible] c/o Rajnath office Cloth market.

81. mr. Karmakar Ford Automobiles (India) ltd Lahore - (Punjab).

82. Mr. Motchand c/o Begraj Plat-lear, near Taras madi Hatti Gate. Jemal Shikarpur. Sindh

83. राजा गोविन्दप्रसाद जी, चिन्तल बाजार, बुलारम (हैदराबाद दक्षिण)

82. सूरजभान [illegible] उपमंत्री आर्यसमाज, होशंगाबाद.

83. Ram Kishan ji goods clerk Amritsar.

88. S.N. Verma general manager. / Tokiyo & Shinghai Trading Co ltd. Saharanpur

84. श्यामनाथ भिखारीलाल मालिक कारखाना रूई, हांसी. जि. हिसार

85. mr. Motchand Jemmal, opposite to Girvar cottage old sukkur. N.W.Ry.

86. ब्र. रामचन्द्र जी c/o नन्दलाल गार्ड साहब, रावलपिण्डी (अम्बाला से) ([illegible])

87. [illegible] गांव [illegible] ([illegible] देहली) तहसील [illegible] c/o चौधरी [illegible] सीसराम

[illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible] पं० चौधरी ~~[illegible]~~ सीसराम
[illegible] / [illegible]

तारीख २५-२०-२८

पं: सत्याचरणजी शास्त्री P.O. Rishra Dt. Hooghli
कलकत्तेसे [illegible] E.I.R
पं: सत्याचरण शास्त्री [illegible] E.I.R. बंगाल

[illegible]

११ [illegible] २ [illegible]

२ [illegible] ॥ ॥ २ [illegible]

३२ ॥ ॥ ॥ २ [illegible]

२ ॥ [illegible]

२ ॥ [illegible] २

२ ॥ [illegible] २

२ ॥ [illegible] ॥ २

२ ॥ [illegible] ॥ ४

२ ॥ [illegible] ॥ ५

२ ॥ [illegible]

२ ॥ ——— [illegible]

२ [illegible]

१० [illegible]

५ [illegible] २

[illegible] ॥ [illegible] २

[illegible] रामजी [illegible] कारखाना [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

११. मनोमोहनजी वैद्य रावतपाड़ा आगरा (बल्लानंद

१२. कुलदीपालजी कपूर, बुज़ाज़ खोंकावाला, प्रागरा

१३. गोपाल वन्दजी अम्बरे रावत पाड़ा प्रागरा

१४. दिलबरजी वैद्य शिमला लोअरबाजार

१५. बलवन्तसिंह रेवाचा – union Dairy form शिमला.

१६. पुरुषोत्तमलाल मोला Viceregal Estate Simla

१७. विश्वम्भरदत्त पं. केशवानन्द सनातनधर्मस्कूल शिमला

१८ पं. श्रीकृष्णशास्त्री. military Departt. Simla
Phagli.

१९. श्रीस्वामी अर्जुनदेवजी धर्मशाला रामडोगरा सिविललाइन लुधियाना ((स्टेशन के पास)

२० ब्रजे कृष्ण गुर्टू कल्लन की लार
लखनऊ.

२१. महादेवलाल शारदा c/o हिरानन्द
आनन्दराम ल: २८० सूतापट्टी २८० सूतापट्टी
कलकत्ता

२२. ब्रजबिहारी सेठ डाक्टर
टेढ़ीनीम. बनारस

२३. लालचन्द नन्दकिशोर बि.अ.
c/o गोबेलाल कम्पनी
हेस्टींग्स स्ट्रीट कलकत्ता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

२४. शंकरभाई पुजारी — पामपुर — कश्मीर, श्रीनगर (केशर)
2-4 तोला

२५. साधु ~~छतकसिंह~~, गुम्पा साहेब
मुकाम ~~[illegible]~~ हैमगुनफा, कुशाक
डाकखाना — लदाख {अंग्रेजी और हिन्दी जानते हैं।}
} यहांसे उत्तम खरखलादि सोम, पशमादि आ सकते हैं।

इनके पुत्र भगवान [illegible] — [illegible]
[illegible] मिलते हैं।

२६.
~~ला.~~ अमीरचंद हरिचंद;
मुकाम — बस्ती गुलाम हुसैन
जि.- होशियारपुर.
{लैम्भू दुकानदार मंगतराम
लाला, डाकखाना — शिगर
तहसील - स्कार्दो
(जम्मू कश्मीर)

२७. हरिराम सेठी
State Telegraph master. Srinagar city
. Kashmera

२८. ला. दीनानाथ ठेकेदार ऊधमपुर, कश्मीर.

२९. ला. शंकरदत्त मैनेजर c/o Chuni Lal Sona Datt.
Vegetable Ghee merchant. Watch Brand.
Chench Bunder Road. Bombay.

३०. श्री यादवजी त्रिकमजी आचार्य. १८. बोराबाजार
स्ट्रीट फोर्ट, बम्बई (होली चकला)

३१. रावसाहब कृष्णाजी वझे
★ K.R. Vaze L.C.E. Pensioned Engineer
Nasik city. (Bombay Preside

३२. पं. राजेन्द्रप्रसाद वकील. मुजफ्फरगढ़ (पंजाब)
✗ (श्रीस्नातकजी गुरुकुल के)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

३३. भगवानदास c/o चौधरी नारायणसिंह जमादार
डाकखाना - चांदनी चौक — देहली

स्नायर दर्शकांक — ३)
अस्गन्ध २ दर्शांक — ।)
स्यालमगिरी ½ दर्शांक — ।)
पीपल २ तो. —)
गोखरू १८ —)

अथर्ववेद

१ काण्ड २ अनुवाक ७ सूक्त ८, १२, यक्ष्मानाशक
१२,१६ सूक्त (सौतकी वर्णन)
१ काण्ड ३ अनुवाक १८ (पिताश्चुमनी), १९, २०,
४ ॥ ॥ — २२ (सूर्यकिरणें), २३ (सोमनकथा / कुष्ठ) २४, २५
२६, २८ (श्यामाका वर्णन है)।
काण्ड २ — ३ (आयुर्वेद कि भेषज)

गहवै

1. प्रवीर तिलकांक नं. १. अप्रधी। १९२४ कातिलकांक
2. ॥ { शुक्रवार २५ जुलाई १९२४ " मैं हिन्दू हूं।" }
{ ॥ , ३ अगस्त १९२४ " " " ।" }
3. सैनिकोफ्रेम — { २१ अगस्त १९२४ गुरुवार
{ २४ ॥ ॥ रविवार
4. ज्योतिषी (जन्मपत्री) — गुरुवार २८ अगस्त १९२४

{ ७५. वायनलत ।) + २ ड्राम
पीपलीन ।=) — २ ड्राम
— — २ ड्राम
७५ ।
३ जनशल्कि ।) १ ओंस }

(मारवाड़ी कि भी पगल करके थी।)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"श्रीयुत जगन्नाथजी खन्ना — इलैक्ट्रिकई जनीयर
B.B. & C.I.
बलसार

tuition
30) Pocket expense
सूरत, बम्बई, नौसारी
१० रुपये त्याग लगावेंगे

J. Khanna
Electrical Engineer
B.B. & C.I. Rly
Bulsar

(A.C.A.I.
Ajmer)

1. राजेन्द्र प्रसाद सिंह c/o
Rai Bahadur Braj Nandan Singh
Deputy Commissioner of Excise and Salt
(Bihar & Orissa) Patna.
2. राजेन्द्र प्रसाद सिंह गांव. Gaziapur
P.O. Sinha
Di. Arrah. (Bihar) (सुपुत्र - रायबहादुर ठाकुर ब्रजनन्दन सिंह जी.)
3. पं. कृष्णदास शास्त्री स्वामी. पटियाला ॥
4. च्पतपतिराम गोयन्का मुकाम - रामगढ़ (कलकत्ता मोतीमंडी)
Sikar जि. जैपुर J.B.R. (किताबें)
5. सेठ विहारीलाल. (जानकीदास) ....
(6. सेठ रूपचंद कलकत्ता [illegible])
7. प्रिंसिपल किशनचंद जी एम.ए.
फैज़ाबाद यू.पी. (स्वास्थ्य चिकित्सा)
8. लेखराज आनंद [illegible] ओवरसियर कमीशनएजेंट.
9. मोलानाराम [illegible] [illegible] गांव [illegible] देहली
Baswa 10. शिवदयाल जैसाल, पो. [illegible] (बांदीकुई) जेपुर B.B.C.I. Rly RMS

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इसप्रकार अपने हृदय में हैं जैसे कि बीज में वृक्ष छिपा है। वास्तव में तुम्हें कोई डर नहीं, तुम्हें कोई चिन्ता नहीं, तुम्हें कोई दर्द नहीं, तुम्हें कोई शक नहीं, तुम्हें कोई दुःख नहीं।

8. तुम अपने आप को उसके समर्पण करदो जो वह हो सबके अन्दर रहा है। जो दिख ~~रहा~~ तुम्हारे में जानता है। वह शोक, भय और शंका से सदा (के लिए) ऊंचा उठा है।

9. अब मुझे राहत नसीब हुई, अब मैं शान्ति पाता हूँ। ... शान्ति ... (...)

जगदीश की जन्मकुण्डली

बुध वार अक्टूबर सन 1923 ई० की अष्टमी तिथि 11½ बजे रात को आद्रा में जगदीश का जन्म पटियाले हुआ,

जगदीश का फल मोहता चाचा

होली से ~~[illegible]~~ दशा बदलती है। बुध की दशा, बुध का अन्तर 2 वर्ष 5 मास रहेगा। अच्छा काम मिलेगा। नौकरी करना ही अच्छा रहेगा। कुंभ की शनि की कोई नहीं बनता। विद्या ठीक है। शिवरात्रि का मन नहीं बनता। केतु का अन्तर ... बहुत ... सात महीने ... तक जीवन ... २० तक ... उत्तम ... फल पुत्र! बुध तो अच्छा है। देवदत्त वैद्य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

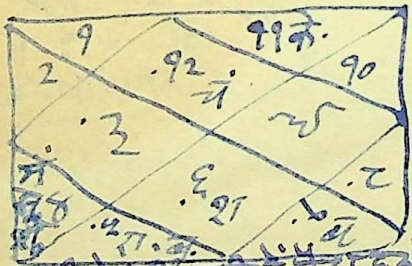

रामभूर्ति सावन में हुआ उत्पन्न
[illegible]

1
11 के.
2
12
चं.
10
3
मं.
बु.
6
शु.
8
5
रा.
7
श.

जन्मपत्री

रामभूर्ति की पत्नी
पटियाल में पैदा हुआ माता
सुशीला, पिता ब्रजराम वैद्य
बाहरियों के गठों में पैदा हुआ नाम को मैं चाहूँ।
रोगी घोर होगा पर जन्म हस्पताल होनेके भी आयुर्वे
भक्तिन होगा ||

कुछ आगे भी कुण्डली है वह हो देखें

जगदीश आश्विन में ~~पूर्व~~ श्राद्ध में अष्टमी रात को
पटियाले
को ११½ बजे सन १९२३ [illegible]
२ ~~अक्टूबर~~ ३ अक्टूबर बुधवार सन १९२३ ई पटियाले में
जगदीश उत्पन्न हुआ ॥ पुनर्वसु नक्षत्र था, संवत
१९८० विक्रमी अक्टूबर ३ बुधवार अष्टमी
रात ११-३० बजे [illegible]

---

१२ जुलाई से १९ सितम्बर तक २ महीने ७ दिन की वेतन
४) मासिक के हिसाब से कुल ९) रुपये हुए । और
रात जगदत्त नौकर को ९) रुपये वेतन के दिये गये
१९ ९/२६ विद्यालय -
श्रीमत
गुरुदत्त के [illegible]
अब हिसाब कोई बाकी नहीं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शोक भय शंका को मिटाने वाले प्राचीन महामन्त्र ।
(डा. रामप्रकाश एम. एस. ओ. हेल्थ सोसियोलोजिस्ट, [illegible])

निम्न के दस संख्याओं को प्रतिदिन प्रातः सायं के नियत समयों पर खूब ध्यान और सावधान होके कमसे कम तीन बार पढ़ा करो और इन को कण्ठस्थ करो और तुम्हें हर समय डर और शोक और शंका दूर हो ॥

1. क्यों निरर्थक चिन्ता करते हो, किससे व्यर्थ ~~चिन्ता करते हो~~ डरते हो कौन तुम्हें मार सकता है । आत्मा न पैदा होता है न मरता है ।

2. जो हुआ सो हुआ, जो है सो है, जो होगा सो होगा, जो हुआ सो अच्छा हुआ, जो है सो अच्छा है, जो होगा सो अच्छा होगा ।

3. तुम बीती का शोक न करो, भविष्यत् का भय न करो, वर्तमान बीत रहा है ।

4. तुम्हारा क्या गया, जो तुम रोते हो, तुमने क्या खोया जो हैरान हो, तुम क्या लाये थे जो खो दिया, तुमने क्या पैदा किया था, न तुम कुछ लाये थे और न तुम कुछ ले गये, जो लिया यहां से ~~लिया~~ लिया जो दिया यहां ही दिया, जो लिया इसीसे लिया और जो दिया इसी को दिया । जो खाली हाथ थे आये सो खाली हाथ चले । यह जो आज तुम्हारा है यह कल किसी और का था और परसों किसी और का होगा । न यह किसी का था और न यह किसी का होगा और न यह अब किसी का है । यह पानी, मिट्टी, आग और हवा का

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

खुशी फिर तुम्हें नाखुश कर रही है।

५. परिवर्तन संसार की जान है जिसको तुम मौत समझते हो यही तो जीवन है। एक मिनिट में तुम करोड़ों के स्वामी और दूसरे क्षण में अस्वामी बन जाते हो। मेरा और तेरा, छोटा और बड़ा, अपना और बेगाना दिल से मिटा दो, विचार से हटा दो। फिर सब तुम्हारा है और तुम सब के हो। न यह शरीर तुम्हारा है और न तुम इस शरीर के हो। यह आग से बनता और आग में जल जाता है। यह मिट्टी से बनता और मिट्टी में मिल जाता है। यह पानी से पैदा होता है और पानी में हल हो जाता है। यह हवा से भरा है और हवा में भर जाता है। न फिर खून रहता है न फिर हड्डी रहती है। न फिर आंख ही रहती है और न फिर जिह्वा और कान का निशान रहता है। परन्तु फिर भी तुम्हारा अस्तित्व वैसे का वैसा ही स्थित है फिर तुम सोचो कि तुम क्या हो।

६. ये सब ~~वस्तुएं तुम्हारी~~ स्थान तुम्हारा और सब वस्तुएं तुम्हारी हैं जहां से चाहो चल पड़ो और जहां पर चाहो ठहर जाओ। जहां से चाहो आरंभ करो और जहां पर चाहो समाप्त कर दो। इसका न कहीं आरंभ है, न कहीं पर अन्त है॥

७. तुम किससे डरते हो, और तुम्हें किसका डर है। अपना ही डर और आप ही डराने वाले हो।

८. तुम [illegible] समझते हो तुम प्रकृति की सत्ता [illegible] को विचित्र प्रकाश है। और तुम्हारे अन्दर जो ईश्वर [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

४८२

अथ शुभसंवत १९६३ शाका १८१८ मासोत्तमेमासे शुभे आश्विन मासे कृष्णपक्षे द्वितीयां २ बुधवासरे घटिका ६१/०० // रेवती नक्षत्रे घटि ४६/२६ ध्रुवयोगे घटि ५४/१५ दिनमानं घटि ३०/२२ पलानि [illegible] लग्नस्पष्ट ५ [illegible] सूर्य [illegible] इष्टघटि २/४६ कन्यालग्ने [illegible] जन्मलग्न ५/२६ [illegible] पौत्री जाता [illegible] विद्यावती

जन्मलग्न [illegible]

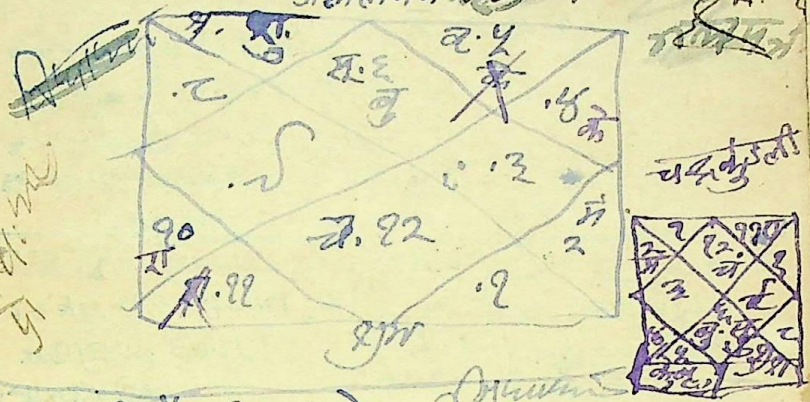

चन्द्रकुंडली

नाम — दो, दौ आदि यथा द्रोण

कन्यालग्न बुधस्वामी तो कुलदीपक है, पंचमेश सूर्य गृह पड़ गया है बुध अस्त है ∴ फलपूर्ण नहीं होगा / परन्तु होगा अवश्य ॥

बुध शुक्र — अच्छी आमदनी हो, शनि लाभ होने से मध्यमफल है।

राहु — दुश्मनों, मामलों का नाश होगा।

[illegible] चन्द्र — स्त्रीबद्ध होगी

मंगल — धर्मशील

केतु [illegible] — [illegible] स्वभाव

शारदा माता

वर्णतक उद्विग्न चित्त,
६५ से ७५ साल तक आयु।
बीमारी, [illegible] आदि [illegible]
३ पुत्र जीवित, २ कन्या

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

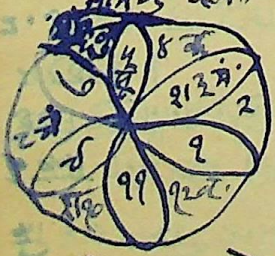

कोष्ठक फल

नाम — डो आदि या डौ,
मङ्गल गृह की लड़की से शादी होनी चा. ।
केन्द्र बृहस्पति — भाग्यशाली.
कृष्ण चन्द्र — स्त्री सुखी न रहेगी ।
इसके पैदा होने के बाद मकान मिला.
विद्या पूर्ण न होगी । व्यापारी अच्छा होगा.
बुध.
मान के मारने वाला.
८. शनि · प्रायः रोगी रहेगा ।
१८ साल से २६ साल तक सङ्कट रहेगा /
१७, १८ वर्ष में शादी होनी चा. या 22 में /
उच्च मङ्गल, बृहस्पति — भाग्यशाली अधिक
आयु — ६६ वर्ष.

पिताजी - रामप्रकाश जी
माताजी का फल.
प्रथम लड़का होगा.
सन्तान पंक्ति · विद्या कमी
स्त्री दुखी ·
१० राहु. — व्यापार में लाभ
धन में निपुणता.
लाभ केतु ॥ — कम
12 सूर्य — खर्च अधिक
उच्च मंगल — कर्म व्यापार में
लाभ होगा.
दिमाग कमजोर रहेगा.
शुक्र की १९७८ से ८८ तक
महादशा है जिसमें
८२ संवत से ८० संवत तक
धन लाभ होगा । विवाह हो
१९८८, ८० चौथे ११ से २० साल तक
बृहस्पति में धन लाभ और प्रसिद्धि होगा । १० वर्ष के
अन्दर दो बीमारी · २० — ४० में बीमारी · आयु · ८० वर्ष · कम सिद्ध

केतुमाटी की कुंडली

जन्मकुण्डली

शु
5 सू
4 के
3 2 मं
2
1
12 च.
11
श 10
9
8 चं
7

प्रथचन्द्रकुण्डली

6
चं 8
शु
5 सू
9
4 के
10 रा.
बुध
2
12 बृ.
11
1

आद्रपद

शुभं शुभ संवत्सरे 5 विलिन_ दर्पणिक केतुमाटी का जन्म संवत_
१९८२ शाके शालिवाहनाब्द १८३६ मासोत्तमे मासे शुक्ले पक्षे, शुभ
तिथौ, पंचम्यां भौमवासरे घ. ४ प. २० विशाखा नक्षत्रे घ.३०.
पल. [illegible]
का_ घ. ३८ प. ४० रव्युदयात्_ ६०·४ अर्कीत शेष. ..तत्काल_घ.५५
प.३२ .. तस्मये सिंह लग्ने दये. ख्याती.. पूर्णीतल महता ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गर्भ के दिन जानने का यंत्र

गर्भ ठहरा (अंग्रेजी हिसाब से)	गर्भ समाप्त होगा	दिन	गर्भ ठहरा (चाँद के हिसाब से)	गर्भ समाप्त होगा	दिन
१ जनवरी	३० सितंबर	२८३	१ जनवरी	८ अक्तूबर	२८०
१ फरवरी	३१ अक्तूबर	"	१ फरवरी	८ नवम्बर	"
१ मार्च	३० नवंबर	"	१ मार्च	५ दिसम्बर	"
१ अप्रैल	३१ दिसंबर	"	१ अप्रैल	५ जनवरी	"
१ मई	३१ जनवरी	"	१ मई	४ फरवरी	"
१ जून	२८ फरवरी	"	१ जून	७ मार्च	"
१ जुलाई	३१ मार्च	"	१ जुलाई	६ अप्रैल	"
१ अगस्त	३० अप्रैल	"	१ अगस्त	७ मई	"
१ सितम्बर	३१ मई	"	१ सितंबर	७ जून	"
१ अक्तूबर	३० जून	"	१ अक्तूबर	७ जुलाई	"
१ नवम्बर	३१ जुलाई	"	१ नवम्बर	७ अगस्त	"
१ दिसम्बर	३१ अगस्त	"	१ दिसम्बर	६ सितंबर	"

मानो एक स्त्री को १ जुलाई को गर्भ ठहरा है। इसके गर्भ के दिन ३१ मार्च पर समाप्त होंगे। अधिक से अधिक ६ अप्रैल तक। इस प्रकार सब का हिसाब लगाया जा सकता है॥ "स्त्री पुरुष आनन्द" पुस्तक से॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ओ३म्

— शारदा की जन्मपत्री —

नाम — पञ्चादि (श. श्री होलक तार्ह)

आयु — ७३ वर्ष (अकालमृत्यु नहीं होगा)

(गर्भ "कन्या लग्न" में ही स्थिर हुआ था।)

(शत्रु तथा नातकों का नाश करेंगी।)

पति — द्वितीय गौरवर्ण मिलना चाहिये।

विद्या अच्छी होनी चाहिये तथा

शनि राहु के होने से म्लेच्छ विद्या में रत होगी।

क्रोधवाली, रसिवाली, रोगी।

शरीर नीरोग तथा आरोग्य रहेगा, कुछ रोग होगा।

(३) नायक महोना।

(४) यशस्विनी होगी।

(५) २६ वर्ष की आयु में शादी होगी।

२६ फाल्गुन १९८१ सन् शारदा पैदा हुई साथ कृष्ण

(१४ पौष कृष्ण ... संवत्)

— वेदकुमारी जन्मपत्री

(१) तेजस्विनी, क्रोधवाली

(२) नाम (ति, नी) खूब चाहिये

(३) पति गृह में धन खूब होगा, धनवती खूब होनी चाहिये।

(४) सिरदर्द, आँख रोग होगा।

(५) ५८ वर्ष की आयु होगी

(६) कर्मस्थान, पति का रोजगार बहुत ही अच्छा होगा, खूब धनवान होगी।

(७) भीमार्थी होगी,

(८) ६ सन्तान होगी

... उत्पत्ति पश्चिम

(युधिष्ठिर की जन्मकुण्डली)

अथ संवत् १९६४ विक्रमी कार्तिक मास कृष्णपक्ष नवमी बुधवारे घटयः ४८ पल २५ श्लेषानक्षत्रे घटयः ४६ पल १० शुभयोगे घटयः १ पला २८ दिनमान घटयः २७ पल २४ तुलार्क गतांश दिनानि १४ श्रीसूर्योदयादिष्टं घटयः ६१ पल २५ तत् समये कर्क लग्नोदये शनि वर्षे श्रीमिकालारा जाराम गृहे पुत्रो जातः।

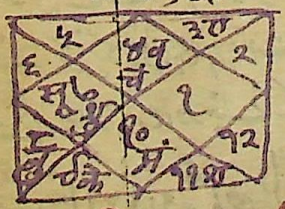

जन्मकुण्डली

चन्द्रकुण्डली

बृहस्पति और मंगल के उच्च पद पर होने से राजतुल्यो भविष्यति २० से २५ वर्ष तक विवाह होगा। २४ वर्ष की आयु में ... ३० से ... वर्ष तक ...

युधिष्ठिर ... जयपुर ... में २० जून १९५६ ... हुआ और ६ आषाढ़ ... के ...

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बिच्छू विष — चिरचिटा का पत्ता मलने से तत्काल आराम होता है। (नमक जल मलने से ... [illegible])

भिड़ मधुमक्खी — सत्यानाशी या Kerosin oil मलने से भी आराम होता है।

कान बहना — 1. एलुवे की जड़ पीस कर लेप करो।
2. गाजर गोबर का लेप
3. गाय घी + सैंधा नमक गरम करके लगावो।

कान्ता कलाले	स्वर्ण वंग
माणिक्य रत्न	सोना
गिलोय सत्व	कस्तूरी
मूंगा	केसर
मोती	अफीम
लौह	कुनैन
कौड़ी	लोहा
शंख	[illegible]
शिंगरफ	नाग
त्रिकटु	रूपामाखी
त्रिफला	शिलाजीत
विष	मंडूर
Sticnia	नागनिंग
मकरध्वज	[illegible]
रस सिन्दूर	पारद मल्ल
वंग	जायफल
ताम्र	जावित्री
चांदी	

1. फौलाद को अनार रस
2. कालीमिर्च चूर्ण
3. चन्द्रामृत रस
4. एलादि गुटी

अविवाहित स्नातक

भूदेव	अग्नि	भद्रसेन
सत्यानंद	रामगोपाल	विराट
निरंजन	मदन	यशपाल
विष्णु	आलदेव	[illegible]
इन्द्रदेव	केशव (सेद नाहिं)	[illegible]
शान्तिदेव		
सोम	वंशीधर	[illegible]
देवशर्मा		देवदत्त
देवेश्वर	सोमदत्त	[illegible]
[illegible]	जनक	वीरसेन
सत्यव्रत	शान्ति	
धर्मानन्द	[illegible]	विक्रम
देवव्रत	सत्यकेतु	
धर्मपाल	आत्रि	
[illegible]	[illegible]	
[illegible]		

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

|| श्रीखण्डाम्रपाक || आम्रपाक (योगचिन्तामणि) (१)

पके आमका रस १ द्रोण (१०२४ तोले) तिसकी चौथाई तोले खांड (२५६ तो.), खांडसे आधा (१२८ तोले) घी, घी से चौथाई सोंठ (३२ तो.), सोंठसे आधी (१६ तोले) काली मरच, मिरचसे आधी (८ तोला) पीपली, यह सब लेवे और खांडके बरा बर (२५६ तो.) जल मिलाय सब एकत्र करे। फिर मिट्टीके पात्रमें पकावे और काष्ठकी कलछीसे चलावे। अनंतर चार २ पल (१६ तोले) यह चूर्ण डाले पीपलामूल, मुस्तक, चव्य, धनिया, दोनों जीरे, सोंठ, नागकेसर दारचीनी, तालीसपत्र, इनमें से पृथक् २ पीसकर पाके में डाले। जब पाक सिद्ध हो जावे तो उसको उतार शीतल करे, शीतल होजानेपर एक प्रस्थ (६४ तोला) शहद उसमें मिलावे फिर सब मिले हुए पाक को कपूर कस्तूरी करके अच्छे शुद्ध पात्रमें रक्खे॥

अस्य गुणा:

भोजनसे पूर्व इस पाक को १ पल (४ तोला) प्रमाण खावे तो इतने रोगनाश करता है। ग्रहणी, प्रबल प्रमेह, खांसी, श्वास, क्षय, पीनस, श्लेष्मा, वायतिल्ली, यकृत, अम्लपित्त, रक्तपित्त, तालुभंग, स्वरभंग, दुर्नामरोग, पांडु, कामला, हृद्रोग, शिरपीड़ा, अतिदारुण आनाहरोग, खाज, शीतपित्त और शोथ नाश करता है। इसके सेवन से वृद्ध भी तरुण हो, रोगयुक्त मनुष्य भी कामदेव तुल्य १००, १००० बालकों भोगे सदा सेवन करने वाला पवन समान बली, धीर, सब गुणयुक्त, १०० वर्ष आयु, रोगरहित हो। जिस स्त्री के मरा बालक होता हो तथा जिसका गर्भ गिर जाता हो इसके सेवन से नारायण रूप पुत्र पैदा करे (बन्ध्या गर्भिणी होवे तथा [illegible] भी पुत्रवान् हो जाती है), [illegible]
[illegible] करताहै। वात, वातरक्त, [illegible], पाण्डु [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible] को नाश करता है, बलकर, [illegible]

मुखसे आमाशय तक भोजनमार्ग — अन्नप्रणाली के अन्दर जो मांसपेशियाँ हैं उनमें से एक पहली मांसपेशी जो अन्न के ऊपर होती है वह संकोच करती है और अन्न के आगे की मांसपेशी विस्तार करती है। इस प्रकार से संकोच और विस्तार से अन्न नीचे जाता है॥

कविराज श्रीयुक्त शीतलचन्द्र
चट्टोपाध्याय
५१ नं. मुकिया स्ट्रीट
कलिकाता।

यादवजी त्रिकमजी
१८ बोरा बाजार स्ट्रीट
फोर्ट, बम्बई

पं. यादवजी त्रिकमजी शर्मा
नं. ३६६ लक्ष्मीनिवास
कालबादेवी रोड
बंबई

Sati challutra
Benares
Badri Das
manick
5-10-28

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुलाबी फिटकरी १ तोला
गेरू ३ माशे
छोटी इलाची २ तोला
मिश्री ४ तोला
मांजूफल १ तोला
पपड़िया कत्था १ तो०
बंशलोचन १ तो०
चन्दन तेल १ तोला

[illegible]

लक्ष्मी के पति श्री लाला बुलाकीदास का इलाज इससे हुआ
जंगबहादुर लोमाजी का दामाद ला० बुधदास कूचा(?) ...

हल्दी — खूनकला
हलराज — पत्तवाले
व्यायाम के पीछे खाने के लिये —

काले सांप की हड्डियों की माला यदि गले में धारण करें तो कण्ठ-माला ... नष्ट होती है।
राजेन्द्र औषधालय
परेडदी(?) कटड़ा, अमृतसर

(1) ... को शहद में मिलाकर लगाओ फूला आंख का ... (चक्षुष्य(?))

2. गर्भ(?) ... — नीले थोथे में भस्म १ ... के बाद दो। इससे आतशक के ... भी खुश्क हो जाते हैं / ...
... १५ दिन ... (...)

[illegible]

होइहै सोई जो राम रचि राखा। को करि तर्क बढावहि शाखा ॥ ५.
भगवान कृपा का भरोसा, होने में संदेह है ॥
मुदमंगलमय संत समाजू। जो जग जंगम तीरथराजू ॥ ६.
प्रश्न अच्छा है, कार्य सिद्ध होगा ॥
७. गरल सुधा रिपु करहि मिताई। गोपद सिंधु अनल सितलाई ॥ ७
प्रश्न उत्तम है, शत्रु से जय होगी ॥
८. वरुण कुबेर सुरेश समीरा। रण सन्मुख धरि काहु न धीरा ॥ ८
फल मध्यम है, कार्य सिद्धि में संदेह है ॥
९. सफल मनोरथ होइ तुम्हारे। रामलखण सुनि भये सुखारे ॥ ९
प्रश्न अच्छा है, मनोरथ सिद्ध होंगे, धन प्राप्ति होगी ॥

Mr.
A. N. Ryar (प्रकाशक)
226. S. Observatary street
Ann Arbor
Michigan (U.S.A.)

My dear, dont fear, you shall hear a good news here, after a year, be near to calm the ear, never swear for a deer

सूरति.. बचो .. ..
.. ..

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सूनाम्भी ... अमृतसर। ...

मंत्र साधना पौर्णमास्यां तथा ग्रहण के दिन

छाया पुरुष सिद्धि।

20 october 1919 सोम

Anatomy

अभिस्यन्दन — लाल ग्रन्थि तथा यकृत से पित्त। स्वेद तथा विस्यन्दन — मूत्रादि, स्वेदादि ॥ समानार्थ॥

ग्रन्थि — जो रक्त में से किसी रस को पृथक् कर अपने शरीर में काम आवे। या रस को मल रूप से बाहिर निकालें॥

शरीर की मुख्य २ ग्रन्थियां — गुर्दे, यकृत, वृक्क, लालाग्रन्थियां, धुकुग्रन्थि। त्वचा की ग्रन्थियां।

विस्यन्दन करनेवाली ग्रन्थियां — त्वचा की स्नेह ग्रन्थियां।

अभिस्यन्दन " " " — लालाग्रन्थि, इत्यादि अपको आदि।

परन्तु अंशांशी भाव से अभिस्यन्दन विस्यन्दन माने जाते हैं।

आंत आदि तथा सब ही दोनों में आजाते हैं॥

ग्रन्थि रचना — सूक्ष्म २ बिन्दुवाली या गोल २ मिल कर लंबी २ रचना बाहर या अभ्यन्तर करती हैं।

अन्नप्रणाली के भाग॥

अन्न प्रणाली के भिन्न २ भाग — मुख, कण्ठ, आमाशय, पक्वाशय, क्षुद्रान्त्र, बृहदन्त्र मलाशय में से अन्न प्रणाली गुजरती है॥

मुख में अन्न पाचन सहायक

मुख में अन्न पाचक सहायक भाग — दांत, जिह्वा, तालु, ओष्ठ, कपोल, उपतालु या अधिजिह्वा॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

४ माष — १ कर्ष

४ कर्ष — १ पल

४ पल — १ कुडव

४ कुडव — १ प्रस्थ

४ प्रस्थ — १ आढक

४ आढक — १ द्रोण.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रामचन्द्र को नाम ले, सकल सुमंगल [illegible]
विविध विषय प्रश्न उत्तर, यासे लेहु निकार ॥१ प्रश्न [illegible]

सु	प्र	उ	बि	हो	मु	ग	ब	[illegible]	नु	बि	घ	धि	इ	द
र	रु	फ	सि	सि	रें	बस	है	मं	लं	न	ल	य	न	अं
सुज	सो	ग	सु	कु	म	स	ग	त	न	ई	ल	धा	बे	नो
त्य	र	न	कु	जो	म	रि	र	र	अ	की	हो	सं	रा	य
पु	सु	थ	सी	जे	इ	ग	म	सं	क	रे	हो	स	स	नि
ति	र	त	र	श	ई	हु	ब	[illegible]	प्र	चि	स	प	स	तु
म	का	ा	र	र	मा	[illegible]	मी	म्हा	[illegible]	[illegible]	हू	ही	ा	जू
ता	रा	रे	री	हू	का	फ	खा	जि	ई	र	रा	पू	द	ल
नि	को	मि	गो	न	मु	ज	य	ने	मनि	क	ज	प	स	ल
हि	रा	मि	स	रि	ग	द	न	ल	म	खि	जि	मनि	त	ज
सिं	मु	न	त	को	मि	ज	[illegible]	ग	धु	हु	य	का	स	र
गु	क	म	अ	ध	नि	म	ल	ा	न	ब	ती	न	रि	य
ना	पु	व	अं	का	र	[illegible]	का	ए	तु	र	न	नु	व	थ
सि	हि	सु	म्हे	रा	[illegible]	स	हि	र	त	न	खा	ा	जा	ा
र	सा	ा	ला	धी	ा	री	ज	हू	हीं	षा	जू	ई	रा	रे

१. सुनु सिय सत्य असीस हमारी, पूजहि मनकामना तुम्हारी ॥१
प्रश्न उत्तम है, कार्य सिद्ध होगा ॥

प्रबिसि नगर कीजे सब काजा । हृदय राखि कौशलपुर राजा ॥२॥
भगवान को स्मरण करके कार्य आरंभ करो सिद्ध होगा ॥२

उघरैं अंत न होहि निबाहू । कालनेमि जिमि रावण राहू ॥३॥
मध्यम फल, इस कार्य में भलाई नहीं है ॥३

बिधि बस सुजन कुसंगति परहीं । फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं
और मन में [illegible] होगा [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ओ३म्

नोटबुक

विद्याधर विद्यालंकार

रावलपिण्डी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA